

Pradeep



Priti

कुंडली मिलान का महत्व

वैवाहिक जीवन में अनुकूलता हेतु जन्मकुण्डली मिलान किया जाता है।

इसमें सर्वप्रथम अष्टकूट मिलान किया जाता है। जातक की राशि व नक्षत्र के अनुसार उसका वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशेश, गण, भकूट एवं नाडी का ज्ञान करके वर-वधू के जीवन की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता का निर्णय किया जाता है। वर्ण विचार से कर्म, वश्य विचार से स्वभाव, तारा विचार से भाग्य, योनि विचार व ग्रह मैत्री विचार से पारस्परिक संबंध, गण से सामाजिकता, भकूट से जीवन में तालमेल एवं नाडी विचार से स्वास्थ्य व सतांन संबंधी फल का विचार किया जाता है। इन सभी गुणों को क्रमशः 1 से 8 तक अंक दिये जाते हैं। इस प्रकार अष्टकूट विचार में कुल 36 गुणों का विचार किया जाता है। जिसमें कम से कम 18 गुणों का होना आवश्यक है। इससे कम गुण वाले विवाह ज्योतिषीय विधान के अनुसार अव्यवहारिक रहते हैं।

अष्टकूट मिलान के साथ मांगलिक दोष का विचार भी अति महत्वपूर्ण माना जाता है। यदि मंगल लग्न कुंडली में 1,4,7,8 एवं 12 वें भाव में स्थित हो तो मंगली दोष होता है। मंगली दोष निवारण के लिए आवश्यक है कि वर-वधू दोनों मंगली न हों या दोनों मंगली हों। शास्त्रों में इनके अलावा भी दोष निवारण के सूत्र दिए गए हैं। इस दोष के निवारण से किसी प्रकार के अमंगल की संभावनाएं कम हो जाती हैं और वैवाहिक जीवन सुख व शांतिपूर्ण गुजरता है।

पुल्लिंग
05/03/1987
गुरुवार
घंटे 07:15:00
घटी 02:23:21
India
Jeypore
18:52:00 उत्तर
82:38:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व
घंटे 00:00:32
घंटे 00:00:00
06:17:39
18:04:50
23:40:37

लिंग
जन्म तिथि
दिन
जन्म समय
जन्म समय(घटी)
देश
स्थान
अक्षांश
रेखांश
मध्य रेखांश
स्थानिक संस्कार
ग्रीष्म संस्कार
सूर्योदय
सूर्यास्त
चित्रपक्षीय अयनांश

स्त्रीलिंग
10/10/1990
बुधवार
08:00:00 घंटे
05:16:36 घटी
India
Delhi
28:39:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व
-00:21:08 घंटे
00:00:00 घंटे
05:53:21
17:39:37
23:43:55

मीन
गुरु
मेष
मंगल
भरणी
शुक्र
3
ऐन्द्र
कौलव
ले-लेखपाल
मीन
क्षत्रिय
चतुष्पाद
गज
मनुष्य
मध्य
मृग

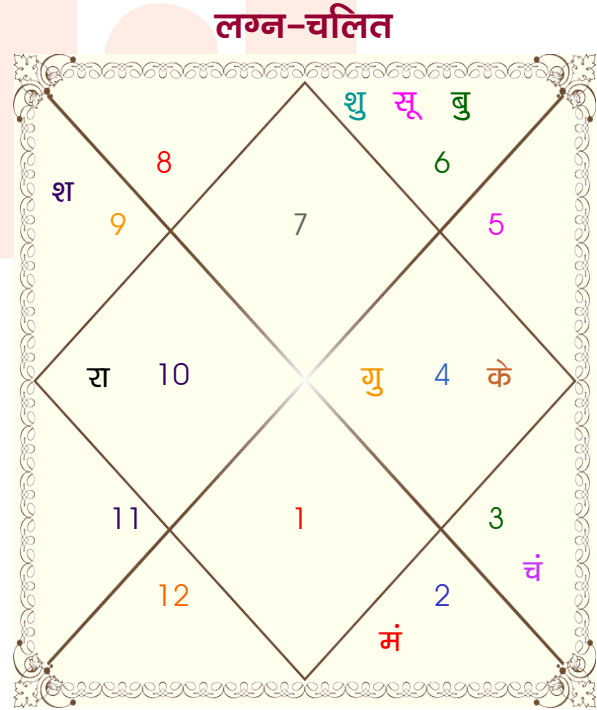
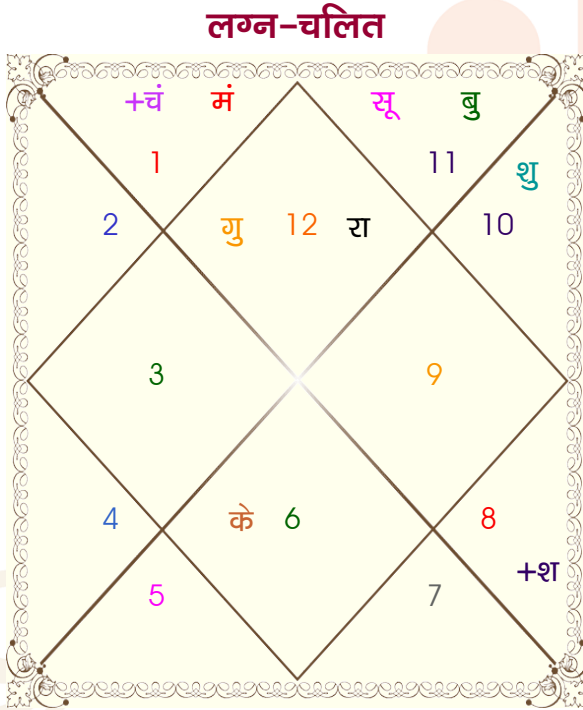
लग्न
लग्न-लग्नाधिपति
राशि
राशि-स्वामी
नक्षत्र
नक्षत्र स्वामी
चरण
योग
करण
जन्म नामाक्षर
सूर्य राशि(पाश्चात्य)
वर्ण
वश्य
योनि
गण
नाड़ी
वर्ग

तुला
शुक्र
मिथुन
बुध
आर्द्रा
राहु
1
परिघ
विष्टि
कु-कुसुम
तुला
शूद्र
मानव
श्वान
मनुष्य
आद्य
मार्जार

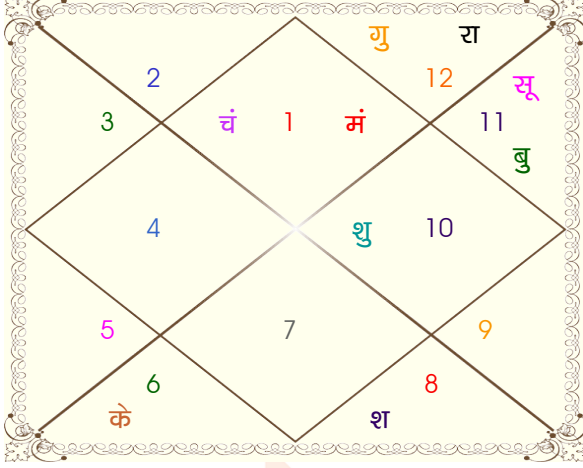
ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शुक्र	5वर्ष 4मा 13दि	07:48:46	मीन	लग्न	तुला	13:55:08	राहु 14वर्ष 6मा 14दि	
	मंगल	20:16:24	कुंभ	सूर्य	कन्या	22:48:06	गुरु	
	17/07/2008	23:05:13	मेष	चंद्र	मिथु	09:13:50	24/04/2005	
	18/07/2015	14:53:27	मेष	मंग	वृष	20:01:06	24/04/2021	
मंग	13/12/2008	09:35:27	कुंभ व	बुध	कन्या	13:55:21	गुरु	12/06/2007
राहु	01/01/2010	06:52:00	मीन	गुरु	कर्क	15:56:49	शनि	24/12/2009
गुरु	08/12/2010	08:21:49	मक	शुक्र	कन्या	16:59:45	बुध	30/03/2012
शनि	16/01/2012	26:55:11	वृश्चि	शनि	धनु	25:12:29	केतु	06/03/2013
बुध	13/01/2013	18:06:07	मीन	राहु व	मक	10:38:01	शुक्र	05/11/2015
केतु	11/06/2013	18:06:07	कन्या व	केतु व	कर्क	10:38:01	सूर्य	24/08/2016
शुक्र	11/08/2014	02:43:48	धनु	हर्ष	धनु	12:08:30	चंद्र	24/12/2017
सूर्य	17/12/2014	13:58:12	धनु	नेप	धनु	18:08:22	मंग	29/11/2018
चंद्र	18/07/2015	16:09:53	तुला व	प्लू	तुला	22:45:25	राहु	24/04/2021

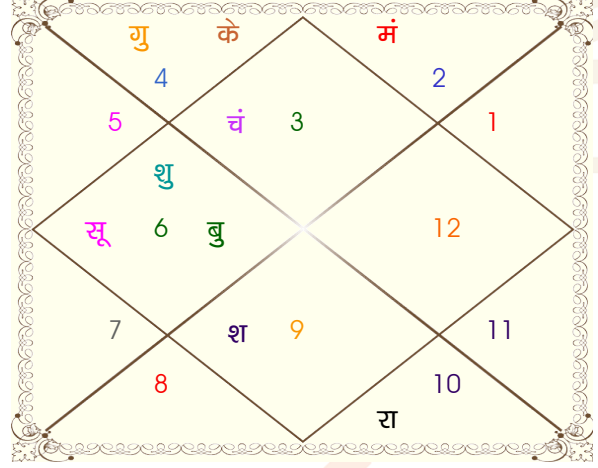
23:40:37 चित्रपक्षीय अयनांश 23:43:55



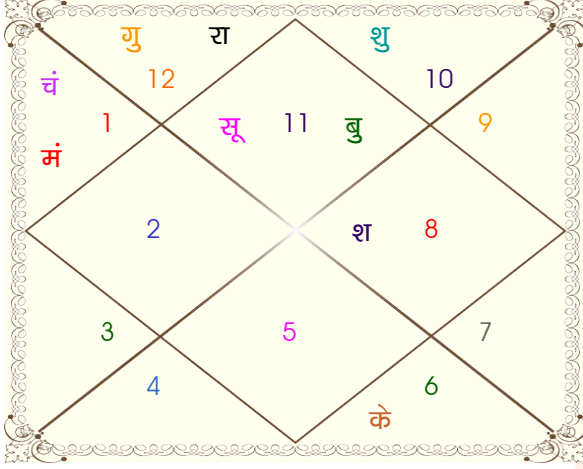
चन्द्र कुंडली



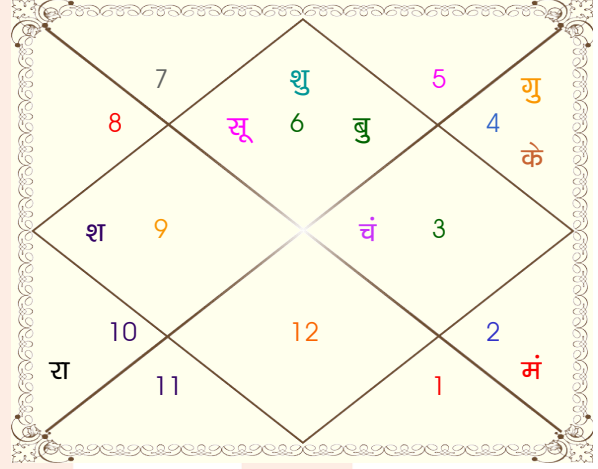
चन्द्र कुंडली



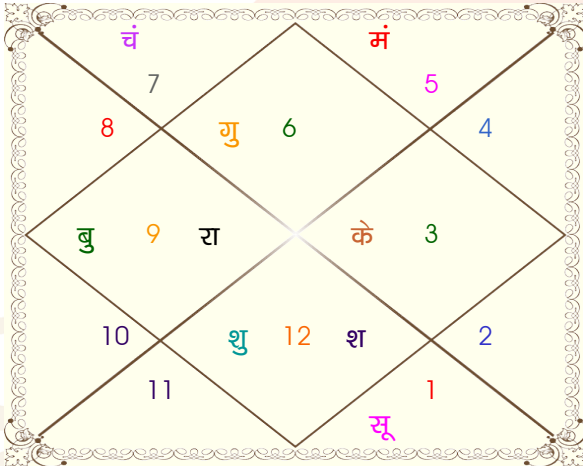
सूर्य कुंडली



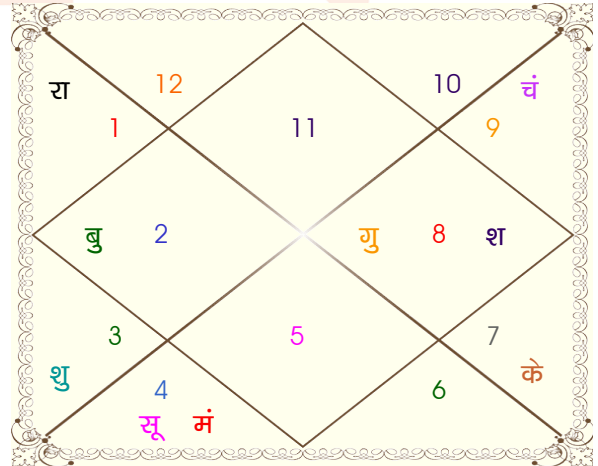
सूर्य कुंडली



नवमांश कुंडली



नवमांश कुंडली



कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : शुक्र 5 वर्ष 2 मास 18 दिन

के.पी. अयनांश : 23:34:29

फॉरच्युना : वृष 10:43:44

भोग्य दशा काल : राहु 14 वर्ष 4 मास 22 दिन

के.पी. अयनांश : 23:37:29

फॉरच्युना : कर्क 00:27:17

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कुंभ	20:22:32	शनि	गुरु	गुरु	शनि
चंद्र		मेष	23:11:21	मंग	शुक्र	शनि	चंद्र
मंग		मेष	14:59:35	मंग	शुक्र	शुक्र	शनि
बुध	व	कुंभ	09:41:36	शनि	राहु	गुरु	शुक्र
गुरु		मीन	06:58:09	गुरु	शनि	बुध	गुरु
शुक्र		मक	08:27:57	शनि	सूर्य	शुक्र	मंग
शनि		वृश्चि	27:01:19	मंग	बुध	गुरु	शुक्र
राहु		मीन	18:12:16	गुरु	बुध	बुध	गुरु
केतु	व	कन्या	18:12:16	बुध	चंद्र	बुध	शुक्र
हर्ष		धनु	02:49:56	गुरु	केतु	शुक्र	बुध
नेप		धनु	14:04:20	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंग
प्लू	व	तुला	16:16:02	शुक्र	राहु	शुक्र	राहु

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कन्या	22:54:32	बुध	चंद्र	सूर्य	गुरु
चंद्र		मिथु	09:20:16	बुध	राहु	गुरु	बुध
मंग		वृष	20:07:31	शुक्र	चंद्र	केतु	गुरु
बुध		कन्या	14:01:47	बुध	चंद्र	गुरु	गुरु
गुरु		कर्क	16:03:15	चंद्र	शनि	गुरु	शुक्र
शुक्र		कन्या	17:06:11	बुध	चंद्र	शनि	मंग
शनि		धनु	25:18:55	गुरु	शुक्र	बुध	राहु
राहु	व	मक	10:44:27	शनि	चंद्र	चंद्र	बुध
केतु	व	कर्क	10:44:27	चंद्र	शनि	सूर्य	शनि
हर्ष		धनु	12:14:56	गुरु	केतु	बुध	चंद्र
नेप		धनु	18:14:48	गुरु	शुक्र	राहु	राहु
प्लू		तुला	22:51:51	शुक्र	गुरु	शनि	शुक्र

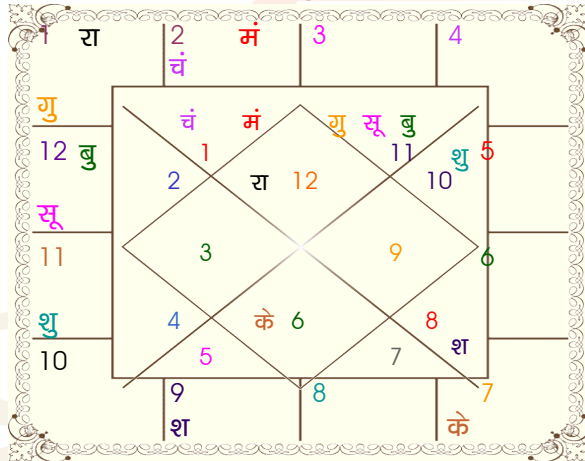
निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मीन	07:54:54	गुरु	शनि	केतु	शनि
2	मेष	13:07:21	मंग	केतु	बुध	शनि
3	वृष	12:02:34	शुक्र	चंद्र	राहु	राहु
4	मिथु	07:29:37	बुध	राहु	राहु	शनि
5	कर्क	03:04:17	चंद्र	गुरु	राहु	चंद्र
6	सिंह	02:20:59	सूर्य	केतु	शुक्र	शनि
7	कन्या	07:54:54	बुध	सूर्य	शुक्र	शुक्र
8	तुला	13:07:21	शुक्र	राहु	बुध	शुक्र
9	वृश्चि	12:02:34	मंग	शनि	चंद्र	शुक्र
10	धनु	07:29:37	गुरु	केतु	राहु	मंग
11	मक	03:04:17	शनि	सूर्य	शनि	शनि
12	कुंभ	02:20:59	शनि	मंग	केतु	गुरु

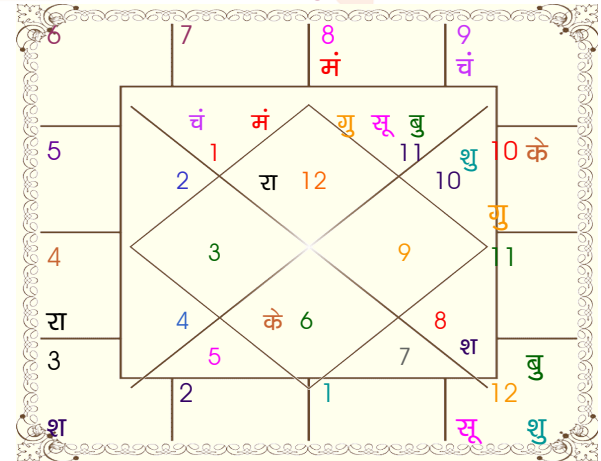
निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	तुला	14:01:34	शुक्र	राहु	बुध	गुरु
2	वृश्चि	13:07:08	मंग	शनि	राहु	राहु
3	धनु	14:18:55	गुरु	शुक्र	शुक्र	राहु
4	मक	17:04:53	शनि	चंद्र	शनि	मंग
5	कुंभ	19:25:33	शनि	राहु	मंग	गुरु
6	मीन	18:44:32	गुरु	बुध	केतु	सूर्य
7	मेष	14:01:34	मंग	शुक्र	शुक्र	मंग
8	वृष	13:07:08	शुक्र	चंद्र	राहु	केतु
9	मिथु	14:18:55	बुध	राहु	बुध	शनि
10	कर्क	17:04:53	चंद्र	बुध	बुध	शुक्र
11	सिंह	19:25:33	सूर्य	शुक्र	राहु	शुक्र
12	कन्या	18:44:32	बुध	चंद्र	बुध	मंग

भाव कुंडली



भाव कुंडली



कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य- बुध, गुरु- राहु,
2	चंद्र, मंग, केतु,
3	चंद्र- मंग- शुक्र-
4	बुध- शनि- राहु-
5	चंद्र- केतु-
6	सूर्य- शुक्र-
7	बुध- शनि- राहु- केतु,
8	चंद्र- मंग- शुक्र-
9	मंग- गुरु, शनि,
10	सूर्य- गुरु-
11	चंद्र, मंग, गुरु- शुक्र, शनि-
12	सूर्य+ बुध, गुरु+ शुक्र, शनि+ राहु,

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	शुक्र- शनि-
2	मंग-
3	चंद्र, गुरु+ शनि, राहु, केतु,
4	गुरु- शनि- केतु-
5	गुरु- शनि- केतु-
6	गुरु-
7	मंग-
8	सूर्य, चंद्र, मंग+ बुध, शुक्र+ शनि- राहु,
9	बुध- गुरु, केतु,
10	सूर्य- चंद्र- मंग- बुध- शुक्र- राहु-
11	सूर्य- बुध, शुक्र, शनि,
12	सूर्य, बुध-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1- 6- 10- 12+
चंद्र	2, 3- 5- 8- 11,
मंग	2, 3- 8- 9- 11,
बुध	1, 4- 7- 12,
गुरु	1- 9, 10- 11- 12+
शुक्र	3- 6- 8- 11, 12,
शनि	4- 7- 9, 11- 12+
राहु	1, 4- 7- 12,
केतु	2, 5- 7,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	8, 10- 11- 12,
चंद्र	3, 8, 10-
मंग	2- 7- 8+ 10-
बुध	8, 9- 10- 11, 12-
गुरु	3+ 4- 5- 6- 9,
शुक्र	1- 8+ 10- 11,
शनि	1- 3, 4- 5- 8- 11,
राहु	3, 8, 10-
केतु	3, 4- 5- 9,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी
लग्न राशि स्वामी
राशि नक्षत्र स्वामी
राशि स्वामी
वार स्वामी
लग्न अन्तर स्वामी
राशि अन्तर स्वामी

शनि
गुरु
शुक्र
मंगल
गुरु
केतु
शनि

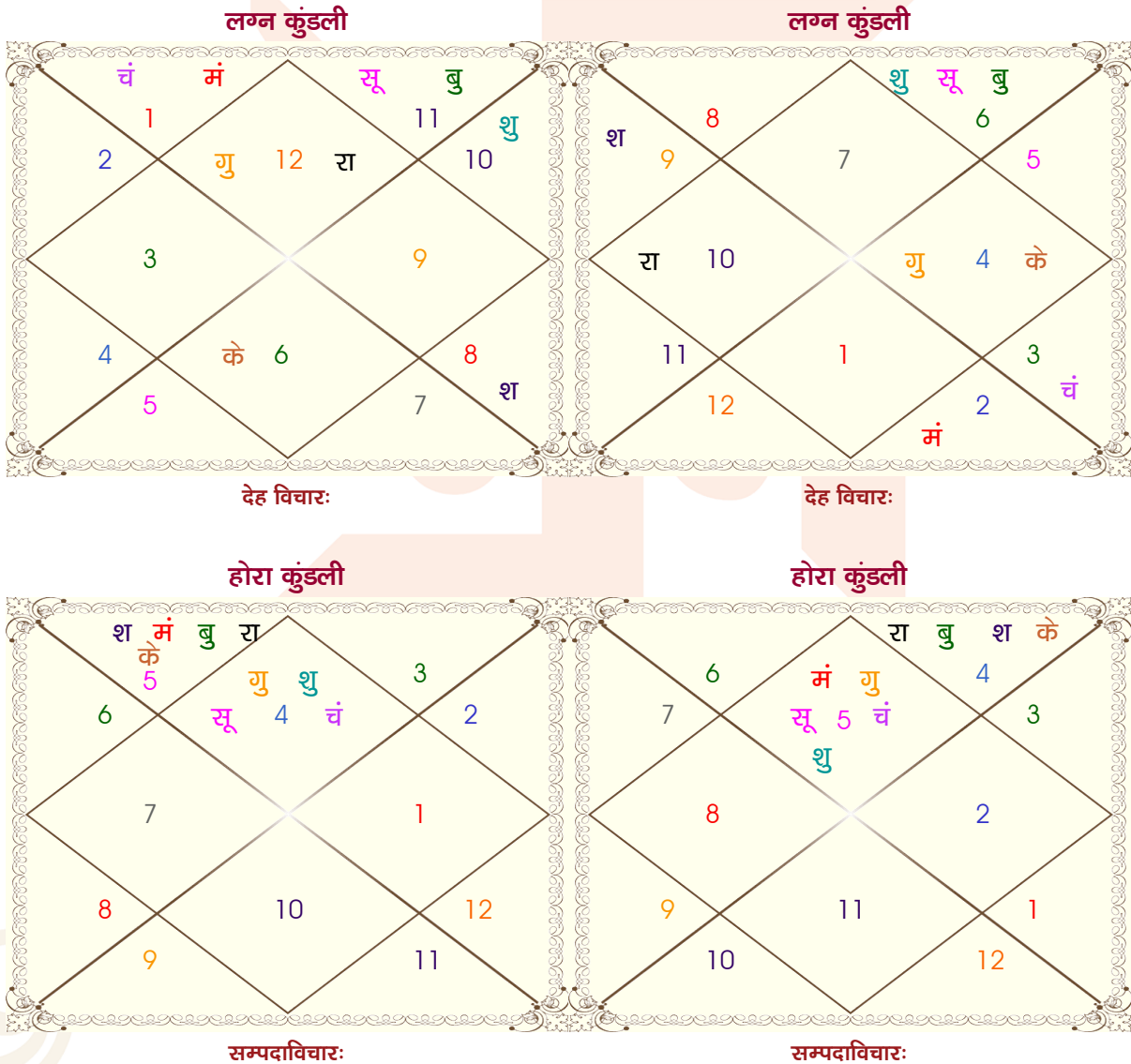
स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी
लग्न राशि स्वामी
राशि नक्षत्र स्वामी
राशि स्वामी
वार स्वामी
लग्न अन्तर स्वामी
राशि अन्तर स्वामी

राहु
शुक्र
राहु
बुध
बुध
बुध
गुरु

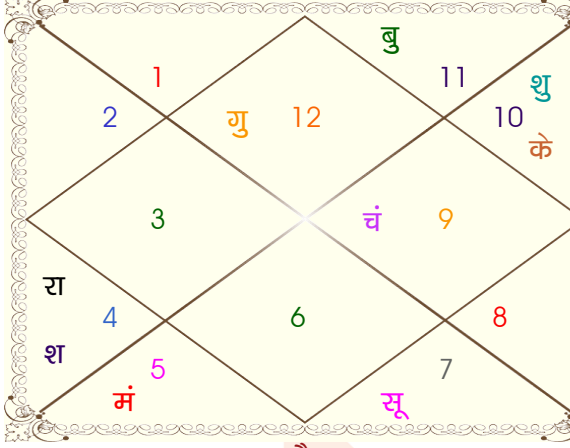
षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिए, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।



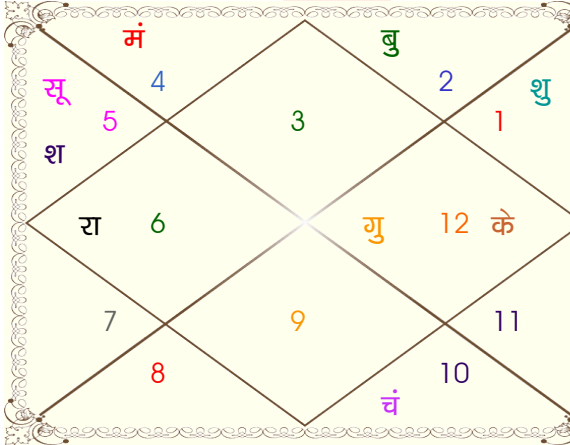
षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली



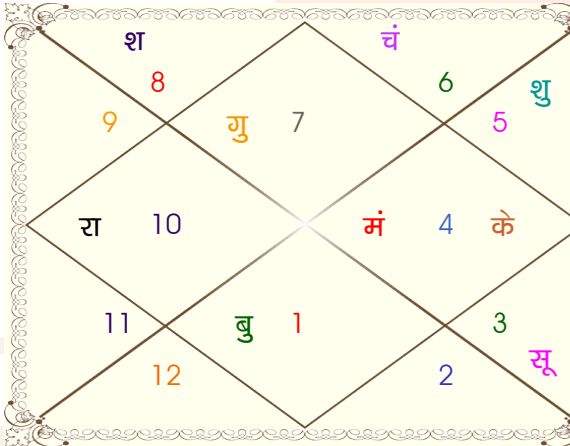
भातृसौख्यम

चतुर्थाश कुंडली



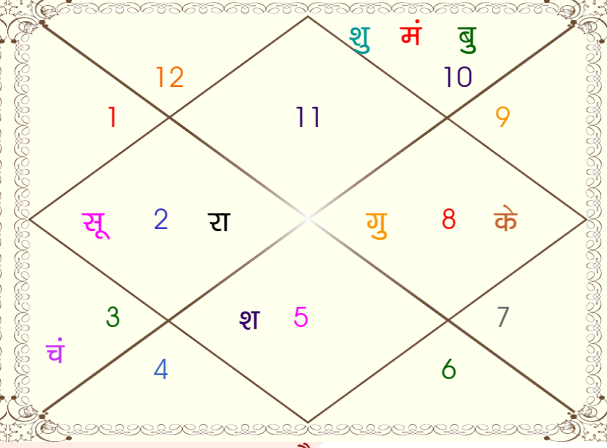
भाग्यविचारः

सप्तमांश कुंडली



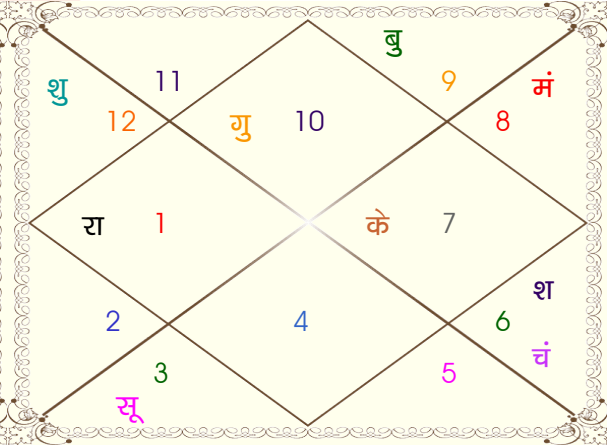
पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

द्रेष्काण कुंडली



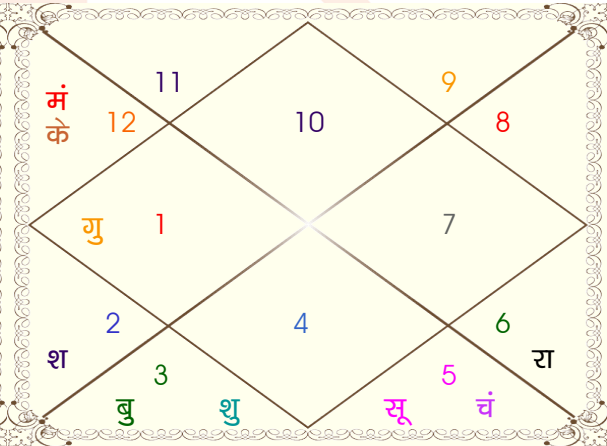
भातृसौख्यम

चतुर्थाश कुंडली



भाग्यविचारः

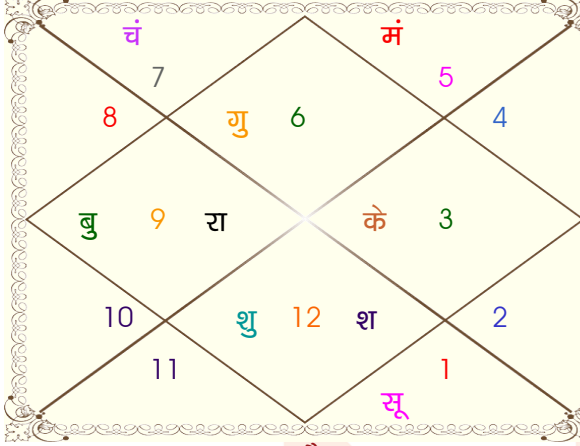
सप्तमांश कुंडली



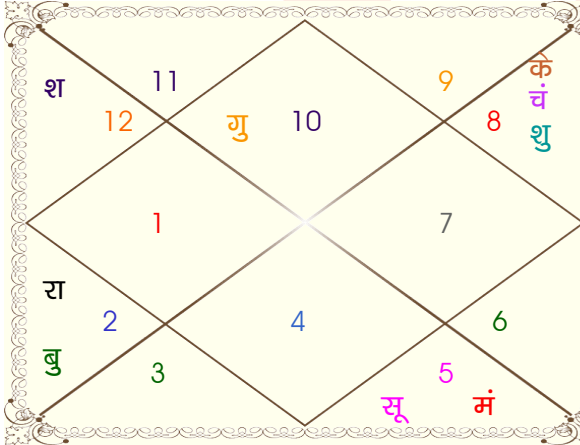
पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

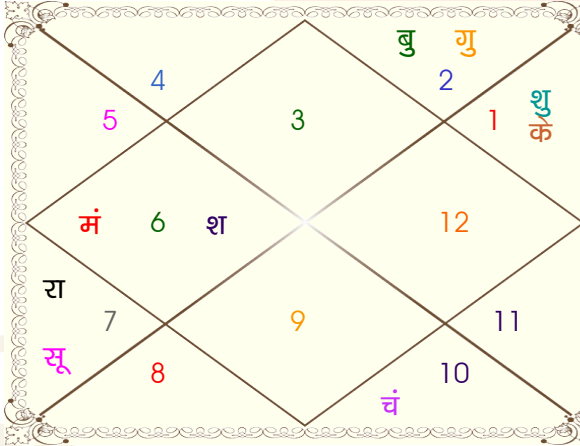
नवमांश कुंडली



कलत्र सौख्यम
दशमांश कुंडली

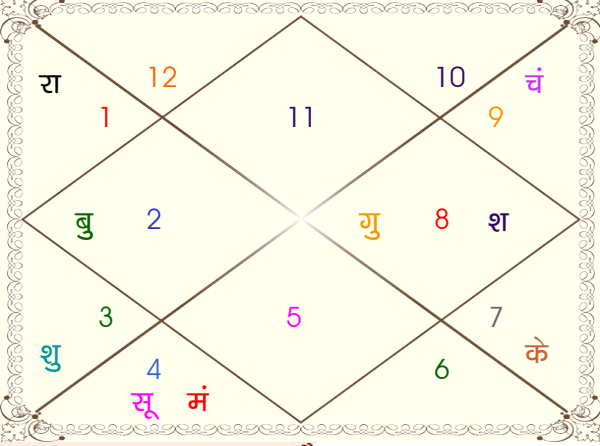


राज्यविचारः
द्वादशांश कुंडली

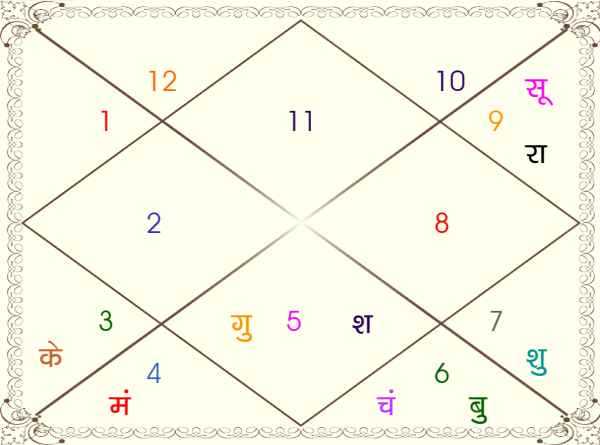


पितृसौख्यम

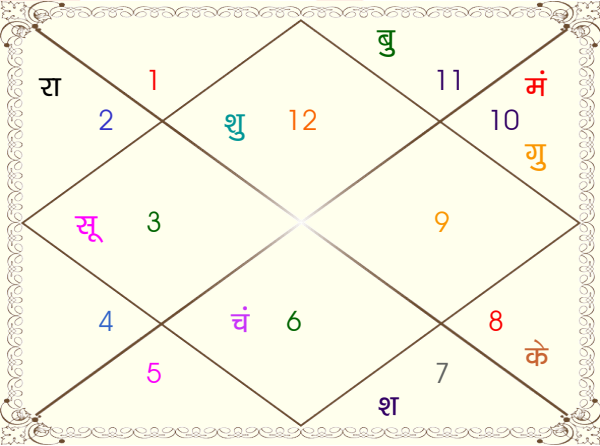
नवमांश कुंडली



कलत्र सौख्यम
दशमांश कुंडली



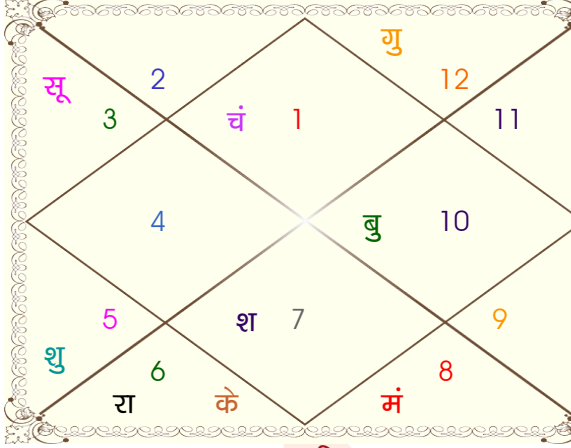
राज्यविचारः
द्वादशांश कुंडली



पितृसौख्यम

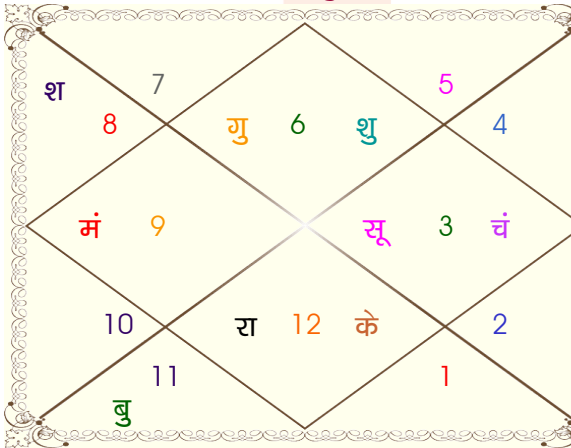
षोडशवर्ग चक्र

षोडशांश कुंडली



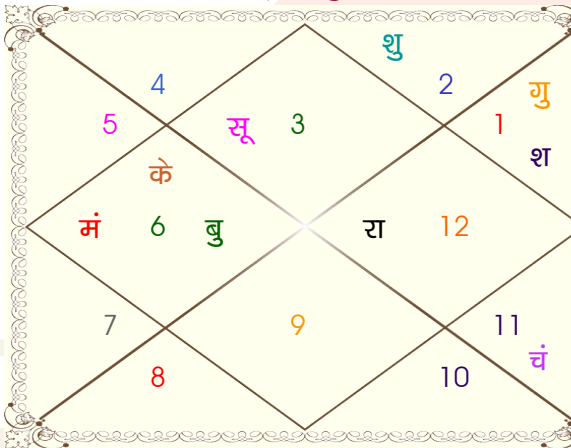
वाहनसुखविचारः

त्रिंशांश कुंडली



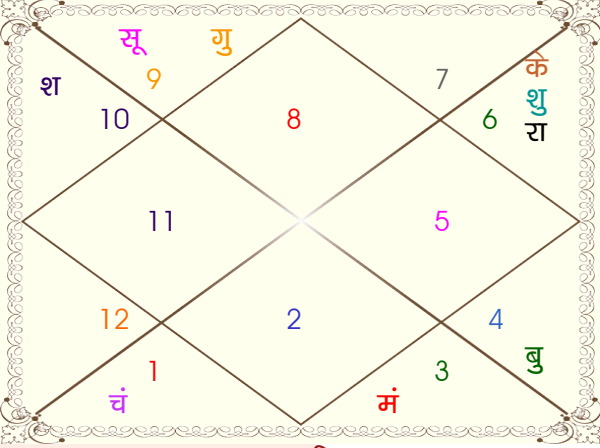
अरिष्टज्ञानम्

षष्ट्यंश कुंडली



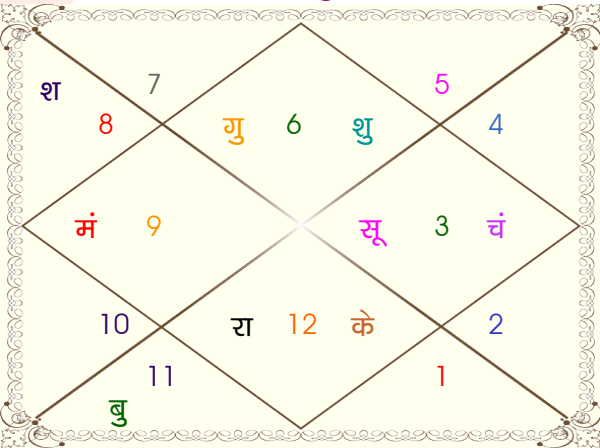
सर्वास्थितिविचारः

षोडशांश कुंडली



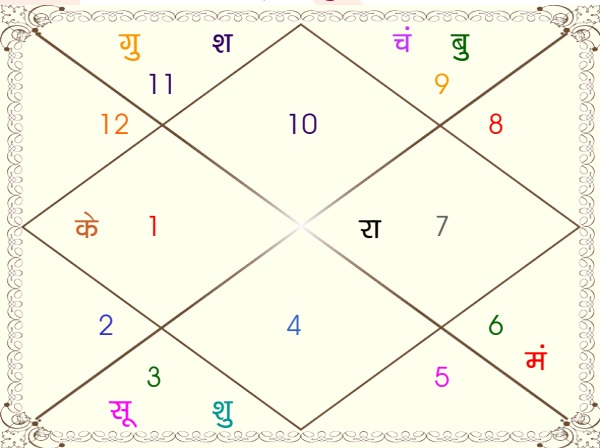
वाहनसुखविचारः

त्रिंशांश कुंडली



अरिष्टज्ञानम्

षष्ट्यंश कुंडली



सर्वास्थितिविचारः

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	...	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	...	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंग	मित्र	मित्र	...	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	...	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	...	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	...	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	...	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	...	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	...

पंचधा मैत्री - Pradeep

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	...	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	सम	सम	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	...	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	अधिशत्रु
मंग	अतिमित्र	सम	...	सम	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	सम	सम
बुध	सम	सम	मित्र	...	मित्र	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	...	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	मित्र	...	अतिमित्र	अतिमित्र	सम
शनि	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	...	सम	सम
राहु	सम	सम	सम	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	...	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	...

पंचधा मैत्री - Priti

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	...	अतिमित्र	सम	शत्रु	अतिमित्र	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	सम
चंद्र	अतिमित्र	...	मित्र	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	सम
मंग	सम	अतिमित्र	...	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	सम	शत्रु	...	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	...	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	अधिशत्रु	सम	शत्रु	सम	मित्र	...	अतिमित्र	सम	अतिमित्र
शनि	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	...	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	अतिमित्र	...	अधिशत्रु
केतु	सम	सम	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	...

प्रखाराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग												
	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृ	ध	म कुल
शनि	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0 8
गुरु	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1 4
मंग	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1 8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0 8
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0 3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1 7
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1 4
लग्न	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1 6
कुल	5	1	2	4	5	5	4	3	3	5	6	5 48

सूर्य का अष्टकवर्ग												
	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि कुल
शनि	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1 8
गुरु	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0 4
मंग	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1 8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0 8
शुक्र	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1 3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1 7
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1 4
लग्न	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1 6
कुल	3	2	4	5	4	3	7	2	4	4	4	6 48

चंद्र का अष्टकवर्ग												
	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी कुल
शनि	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1 4
गुरु	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1 7
मंग	0	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0 6
सूर्य	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0 6
शुक्र	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1 7
बुध	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0 8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0 7
लग्न	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0 4
कुल	6	4	4	2	4	7	3	3	5	5	3	3 49

चंद्र का अष्टकवर्ग												
	मि	क	सि	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ कुल
शनि	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1 4
गुरु	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1 7
मंग	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0 6
सूर्य	1	1	0	0	0	1	0	0	1	1	1	0 6
शुक्र	1	1	0	0	0	1	1	1	0	1	0	1 7
बुध	1	1	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0 8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0 7
लग्न	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0 4
कुल	5	6	3	2	3	4	4	3	5	6	5	3 49

मंगल का अष्टकवर्ग												
	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी कुल
शनि	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0 7
गुरु	0	0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0 4
मंग	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0 7
सूर्य	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0 5
शुक्र	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0 4
बुध	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0 4
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	0	0 3
लग्न	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1 5
कुल	3	3	5	4	4	2	1	4	5	3	4	1 39

मंगल का अष्टकवर्ग												
	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे कुल
शनि	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0 7
गुरु	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1 4
मंग	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0 7
सूर्य	0	1	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0 5
शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1 4
बुध	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0 4
चंद्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1 3
लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0 5
कुल	2	4	5	5	1	2	4	4	2	4	3	3 39

बुध का अष्टकवर्ग												
	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृ	ध	म कुल
शनि	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0 8
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1 4
मंग	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1 8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1 5
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1 8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1 8
चंद्र	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	1 6
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1 7
कुल	6	2	4	4	4	5	4	3	5	5	5	7 54

बुध का अष्टकवर्ग												
	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि कुल
शनि	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1 8
गुरु	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0 4
मंग	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1 8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1 5
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0 8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1 8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	1	1	0	0	1	0 6
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1 7
कुल	4	3	5	4	7	4	4	2	6	4	6	5 54

प्रताराष्टकवर्ग सारिणी

गुरु का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	घ	म	कुं	कुल
शनि	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंग	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7
सूर्य	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	9
शुक्र	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	6
बुध	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	8
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	5
लग्न	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	9
कुल	5	5	6	4	3	3	4	7	5	5	4	5	56

गुरु का अष्टकवर्ग

	र्क	सि	कं	तु	वृशि	घ	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंग	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	7
सूर्य	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	9
शुक्र	1	0	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	6
बुध	1	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	8
चंद्र	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	0	5
लग्न	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	1	0	9
कुल	6	3	3	6	4	4	4	7	3	5	6	5	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	घ	कुल
शनि	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	7
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	5
मंग	0	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	6
सूर्य	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	5
चंद्र	0	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	9
लग्न	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
कुल	5	4	5	4	3	5	6	3	4	4	4	5	52

शुक्र का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृशि	घ	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कुल
शनि	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	7
गुरु	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	5
मंग	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	5
चंद्र	1	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	1	9
लग्न	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
कुल	3	5	4	2	5	5	3	6	5	3	6	5	52

शनि का अष्टकवर्ग

	वृशि	घ	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	4
मंग	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	6
सूर्य	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	7
शुक्र	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	3
बुध	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	6
चंद्र	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	6
कुल	3	4	5	4	4	1	2	4	2	4	5	1	39

शनि का अष्टकवर्ग

	घ	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	4
मंग	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	6
सूर्य	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
शुक्र	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	6
चंद्र	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	3
लग्न	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	6
कुल	3	1	4	3	5	3	3	5	4	2	4	2	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	घ	म	कुं	कुल
शनि	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	6
गुरु	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	9
मंग	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	5
सूर्य	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	6
शुक्र	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	7
बुध	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	7
चंद्र	1	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	4	5	4	3	3	4	6	0	4	4	7	5	49

लग्न का अष्टकवर्ग

	तु	वृशि	घ	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	कुल
शनि	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	0	6
गुरु	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	9
मंग	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	5
सूर्य	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	6
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	7
बुध	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	7
चंद्र	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	5	4	6	2	4	5	4	5	2	5	4	3	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

25	31	11	34
26	1	21	12
2	10	3	9
31	3	35	9
4	28	6	8
27	4	28	6
26	5	24	7
24	7	29	29

सर्वाष्टकवर्ग

27	18	6	31
26	8	25	7
9	5	10	38
26	10	38	4
11	28	1	3
32	11	28	1
29	12	29	2
29	2	28	28

Pradeep

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	बु	वृशि	घ	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	2	4	2	4	5	1	3	4	5	4	4	39
गुरु	5	6	4	3	3	4	7	5	5	4	5	5	56
मंग	3	3	5	4	4	2	1	4	5	3	4	1	39
सूर्य	2	4	5	5	4	3	3	5	6	5	5	1	48
शुक्र	4	3	5	6	3	4	4	4	5	5	4	5	52
बुध	4	4	4	5	4	3	5	5	5	7	6	2	54
चंद्र	6	4	4	2	4	7	3	3	5	5	3	3	49
बिन्दु	25	26	31	27	26	28	24	29	35	34	31	21	337
रेखा	31	30	25	29	30	28	32	27	21	22	25	35	335

Priti

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	बु	वृशि	घ	म	कुं	मी	कुल
शनि	5	3	3	5	4	2	4	2	3	1	4	3	39
गुरु	5	6	5	6	3	3	6	4	4	4	7	3	56
मंग	3	2	4	5	5	1	2	4	4	2	4	3	39
सूर्य	2	4	4	4	6	3	2	4	5	4	3	7	48
शुक्र	6	5	3	6	5	3	5	4	2	5	5	3	52
बुध	2	6	4	6	5	4	3	5	4	7	4	4	54
चंद्र	5	3	5	6	3	2	3	4	4	3	5	6	49
बिन्दु	28	29	28	38	31	18	25	27	26	26	32	29	337
रेखा	28	27	28	18	25	38	31	29	30	30	24	27	335

शोध्य पिंड - Pradeep

	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	162	57	144	87	92	46	119
ग्रह पिंड	54	48	52	63	66	37	76
शोध्य पिंड	216	105	196	150	158	83	195

शोध्य पिंड - Priti

	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	93	85	87	113	82	91	84
ग्रह पिंड	33	43	43	51	59	46	63
शोध्य पिंड	126	128	130	164	141	137	147

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 5 वर्ष 4 मास 13 दिन

भोग्य दशा काल : राहु 14 वर्ष 6 मास 14 दिन

शुक्र	सूर्य	चन्द्र
05/03/1987	17/07/1992	18/07/1998
17/07/1992	18/07/1998	17/07/2008
शुक्र 00/00/0000	सूर्य 04/11/1992	चंद्र 18/05/1999
सूर्य 00/00/0000	चंद्र 05/05/1993	मंग 17/12/1999
चंद्र 00/00/0000	मंग 10/09/1993	राहु 17/06/2001
मंग 00/00/0000	राहु 05/08/1994	गुरु 17/10/2002
राहु 00/00/0000	गुरु 24/05/1995	शनि 17/05/2004
गुरु 05/03/1987	शनि 05/05/1996	बुध 17/10/2005
शनि 17/07/1988	बुध 11/03/1997	केतु 18/05/2006
बुध 18/05/1991	केतु 17/07/1997	शुक्र 16/01/2008
केतु 17/07/1992	शुक्र 18/07/1998	सूर्य 17/07/2008

राहु	गुरु	शनि
10/10/1990	24/04/2005	24/04/2021
24/04/2005	24/04/2021	24/04/2040
राहु 10/10/1990	गुरु 12/06/2007	शनि 27/04/2024
गुरु 30/05/1992	शनि 24/12/2009	बुध 05/01/2027
शनि 06/04/1995	बुध 30/03/2012	केतु 14/02/2028
बुध 24/10/1997	केतु 06/03/2013	शुक्र 15/04/2031
केतु 11/11/1998	शुक्र 05/11/2015	सूर्य 27/03/2032
शुक्र 11/11/2001	सूर्य 24/08/2016	चंद्र 27/10/2033
सूर्य 06/10/2002	चंद्र 24/12/2017	मंग 06/12/2034
चंद्र 06/04/2004	मंग 29/11/2018	राहु 12/10/2037
मंग 24/04/2005	राहु 24/04/2021	गुरु 24/04/2040

मंगल	राहु	गुरु
17/07/2008	18/07/2015	17/07/2033
18/07/2015	17/07/2033	17/07/2049
मंग 13/12/2008	राहु 30/03/2018	गुरु 04/09/2035
राहु 01/01/2010	गुरु 23/08/2020	शनि 18/03/2038
गुरु 08/12/2010	शनि 30/06/2023	बुध 23/06/2040
शनि 16/01/2012	बुध 16/01/2026	केतु 30/05/2041
बुध 13/01/2013	केतु 03/02/2027	शुक्र 29/01/2044
केतु 11/06/2013	शुक्र 03/02/2030	सूर्य 16/11/2044
शुक्र 11/08/2014	सूर्य 29/12/2030	चंद्र 18/03/2046
सूर्य 17/12/2014	चंद्र 29/06/2032	मंग 22/02/2047
चंद्र 18/07/2015	मंग 17/07/2033	राहु 17/07/2049

बुध	केतु	शुक्र
24/04/2040	24/04/2057	24/04/2064
24/04/2057	24/04/2064	24/04/2084
बुध 20/09/2042	केतु 20/09/2057	शुक्र 24/08/2067
केतु 18/09/2043	शुक्र 20/11/2058	सूर्य 24/08/2068
शुक्र 19/07/2046	सूर्य 28/03/2059	चंद्र 24/04/2070
सूर्य 25/05/2047	चंद्र 27/10/2059	मंग 24/06/2071
चंद्र 23/10/2048	मंग 24/03/2060	राहु 24/06/2074
मंग 21/10/2049	राहु 12/04/2061	गुरु 22/02/2077
राहु 09/05/2052	गुरु 19/03/2062	शनि 24/04/2080
गुरु 15/08/2054	शनि 28/04/2063	बुध 23/02/2083
शनि 24/04/2057	बुध 24/04/2064	केतु 24/04/2084

शनि	बुध	केतु
17/07/2049	17/07/2068	17/07/2085
17/07/2068	17/07/2085	17/07/2092
शनि 20/07/2052	बुध 14/12/2070	केतु 13/12/2085
बुध 30/03/2055	केतु 11/12/2071	शुक्र 13/02/2087
केतु 08/05/2056	शुक्र 11/10/2074	सूर्य 20/06/2087
शुक्र 09/07/2059	सूर्य 17/08/2075	चंद्र 19/01/2088
सूर्य 20/06/2060	चंद्र 16/01/2077	मंग 17/06/2088
चंद्र 19/01/2062	मंग 13/01/2078	राहु 05/07/2089
मंग 28/02/2063	राहु 01/08/2080	गुरु 11/06/2090
राहु 04/01/2066	गुरु 07/11/2082	शनि 21/07/2091
गुरु 17/07/2068	शनि 17/07/2085	बुध 17/07/2092

सूर्य	चन्द्र	मंगल
24/04/2084	24/04/2090	25/04/2100
24/04/2090	25/04/2100	26/04/2107
सूर्य 11/08/2084	चंद्र 23/02/2091	मंग 21/09/2100
चंद्र 10/02/2085	मंग 24/09/2091	राहु 09/10/2101
मंग 18/06/2085	राहु 25/03/2093	गुरु 15/09/2102
राहु 13/05/2086	गुरु 25/07/2094	शनि 25/10/2103
गुरु 01/03/2087	शनि 23/02/2096	बुध 21/10/2104
शनि 11/02/2088	बुध 24/07/2097	केतु 20/03/2105
बुध 17/12/2088	केतु 22/02/2098	शुक्र 20/05/2106
केतु 24/04/2089	शुक्र 24/10/2099	सूर्य 25/09/2106
शुक्र 24/04/2090	सूर्य 25/04/2100	चंद्र 26/04/2107

विंशोत्तरी दशा-प्रत्यन्तर

मंग-शुक्र	मंग-सूर्य	मंग-चंद्र
11/06/2013	11/08/2014	17/12/2014
11/08/2014	17/12/2014	18/07/2015
शुक्र 21/08/2013	सूर्य 17/08/2014	चंद्र 03/01/2015
सूर्य 11/09/2013	चंद्र 28/08/2014	मंग 16/01/2015
चंद्र 17/10/2013	मंग 04/09/2014	राहु 17/02/2015
मंग 10/11/2013	राहु 24/09/2014	गुरु 17/03/2015
राहु 13/01/2014	गुरु 11/10/2014	शनि 20/04/2015
गुरु 11/03/2014	शनि 31/10/2014	बुध 20/05/2015
शनि 18/05/2014	बुध 18/11/2014	केतु 02/06/2015
बुध 17/07/2014	केतु 25/11/2014	शुक्र 07/07/2015
केतु 11/08/2014	शुक्र 17/12/2014	सूर्य 18/07/2015

गुरु-शुक्र	गुरु-सूर्य	गुरु-चंद्र
06/03/2013	05/11/2015	24/08/2016
05/11/2015	24/08/2016	24/12/2017
शुक्र 16/08/2013	सूर्य 20/11/2015	चंद्र 03/10/2016
सूर्य 03/10/2013	चंद्र 14/12/2015	मंग 01/11/2016
चंद्र 24/12/2013	मंग 31/12/2015	राहु 13/01/2017
मंग 18/02/2014	राहु 13/02/2016	गुरु 19/03/2017
राहु 15/07/2014	गुरु 23/03/2016	शनि 04/06/2017
गुरु 21/11/2014	शनि 08/05/2016	बुध 12/08/2017
शनि 25/04/2015	बुध 19/06/2016	केतु 09/09/2017
बुध 10/09/2015	केतु 06/07/2016	शुक्र 29/11/2017
केतु 05/11/2015	शुक्र 24/08/2016	सूर्य 24/12/2017

राहु-राहु	राहु-गुरु	राहु-शनि
18/07/2015	30/03/2018	23/08/2020
30/03/2018	23/08/2020	30/06/2023
राहु 13/12/2015	गुरु 25/07/2018	शनि 03/02/2021
गुरु 22/04/2016	शनि 11/12/2018	बुध 01/07/2021
शनि 25/09/2016	बुध 14/04/2019	केतु 31/08/2021
बुध 12/02/2017	केतु 04/06/2019	शुक्र 20/02/2022
केतु 11/04/2017	शुक्र 28/10/2019	सूर्य 13/04/2022
शुक्र 22/09/2017	सूर्य 11/12/2019	चंद्र 09/07/2022
सूर्य 10/11/2017	चंद्र 22/02/2020	मंग 08/09/2022
चंद्र 31/01/2018	मंग 13/04/2020	राहु 11/02/2023
मंग 30/03/2018	राहु 23/08/2020	गुरु 30/06/2023

गुरु-मंग	गुरु-राहु	शनि-शनि
24/12/2017	29/11/2018	24/04/2021
29/11/2018	24/04/2021	27/04/2024
मंग 12/01/2018	राहु 10/04/2019	शनि 15/10/2021
राहु 05/03/2018	गुरु 05/08/2019	बुध 20/03/2022
गुरु 19/04/2018	शनि 22/12/2019	केतु 23/05/2022
शनि 12/06/2018	बुध 24/04/2020	शुक्र 22/11/2022
बुध 30/07/2018	केतु 14/06/2020	सूर्य 16/01/2023
केतु 19/08/2018	शुक्र 07/11/2020	चंद्र 17/04/2023
शुक्र 15/10/2018	सूर्य 21/12/2020	मंग 21/06/2023
सूर्य 01/11/2018	चंद्र 04/03/2021	राहु 02/12/2023
चंद्र 29/11/2018	मंग 24/04/2021	गुरु 27/04/2024

राहु-बुध	राहु-केतु	राहु-शुक्र
30/06/2023	16/01/2026	03/02/2027
16/01/2026	03/02/2027	03/02/2030
बुध 08/11/2023	केतु 07/02/2026	शुक्र 05/08/2027
केतु 02/01/2024	शुक्र 12/04/2026	सूर्य 29/09/2027
शुक्र 05/06/2024	सूर्य 01/05/2026	चंद्र 29/12/2027
सूर्य 22/07/2024	चंद्र 02/06/2026	मंग 02/03/2028
चंद्र 07/10/2024	मंग 25/06/2026	राहु 13/08/2028
मंग 01/12/2024	राहु 21/08/2026	गुरु 07/01/2029
राहु 19/04/2025	गुरु 11/10/2026	शनि 29/06/2029
गुरु 21/08/2025	शनि 11/12/2026	बुध 01/12/2029
शनि 16/01/2026	बुध 03/02/2027	केतु 03/02/2030

शनि-बुध	शनि-केतु	शनि-शुक्र
27/04/2024	05/01/2027	14/02/2028
05/01/2027	14/02/2028	15/04/2031
बुध 13/09/2024	केतु 29/01/2027	शुक्र 25/08/2028
केतु 10/11/2024	शुक्र 06/04/2027	सूर्य 21/10/2028
शुक्र 22/04/2025	सूर्य 26/04/2027	चंद्र 26/01/2029
सूर्य 11/06/2025	चंद्र 30/05/2027	मंग 03/04/2029
चंद्र 31/08/2025	मंग 23/06/2027	राहु 24/09/2029
मंग 28/10/2025	राहु 22/08/2027	गुरु 25/02/2030
राहु 24/03/2026	गुरु 15/10/2027	शनि 27/08/2030
गुरु 02/08/2026	शनि 18/12/2027	बुध 07/02/2031
शनि 05/01/2027	बुध 14/02/2028	केतु 15/04/2031

विंशोत्तरी दशा-प्रत्यन्तर

राहु-सूर्य			राहु-चंद्र			राहु-मंग			शनि-सूर्य			शनि-चंद्र			शनि-मंग		
03/02/2030			29/12/2030			29/06/2032			15/04/2031			27/03/2032			27/10/2033		
29/12/2030			29/06/2032			17/07/2033			27/03/2032			27/10/2033			06/12/2034		
सूर्य	20/02/2030	चंद्र	13/02/2031	मंग	21/07/2032	सूर्य	03/05/2031	चंद्र	15/05/2032	मंग	19/11/2033	सूर्य	03/05/2031	चंद्र	15/05/2032	मंग	19/11/2033
चंद्र	19/03/2030	मंग	16/03/2031	राहु	17/09/2032	चंद्र	01/06/2031	मंग	17/06/2032	राहु	19/01/2034	चंद्र	01/06/2031	मंग	17/06/2032	राहु	19/01/2034
मंग	07/04/2030	राहु	07/06/2031	गुरु	07/11/2032	मंग	21/06/2031	राहु	12/09/2032	गुरु	14/03/2034	मंग	21/06/2031	राहु	12/09/2032	गुरु	14/03/2034
राहु	26/05/2030	गुरु	19/08/2031	शनि	07/01/2033	राहु	12/08/2031	गुरु	28/11/2032	शनि	17/05/2034	राहु	12/08/2031	गुरु	28/11/2032	शनि	17/05/2034
गुरु	09/07/2030	शनि	13/11/2031	बुध	02/03/2033	गुरु	27/09/2031	शनि	28/02/2033	बुध	14/07/2034	गुरु	27/09/2031	शनि	28/02/2033	बुध	14/07/2034
शनि	30/08/2030	बुध	30/01/2032	केतु	24/03/2033	शनि	21/11/2031	बुध	21/05/2033	केतु	06/08/2034	शनि	21/11/2031	बुध	21/05/2033	केतु	06/08/2034
बुध	16/10/2030	केतु	02/03/2032	शुक्र	27/05/2033	बुध	09/01/2032	केतु	23/06/2033	शुक्र	13/10/2034	बुध	09/01/2032	केतु	23/06/2033	शुक्र	13/10/2034
केतु	04/11/2030	शुक्र	01/06/2032	सूर्य	15/06/2033	केतु	30/01/2032	शुक्र	28/09/2033	सूर्य	02/11/2034	केतु	30/01/2032	शुक्र	28/09/2033	सूर्य	02/11/2034
शुक्र	29/12/2030	सूर्य	29/06/2032	चंद्र	17/07/2033	शुक्र	27/03/2032	सूर्य	27/10/2033	चंद्र	06/12/2034	शुक्र	27/03/2032	सूर्य	27/10/2033	चंद्र	06/12/2034
गुरु-गुरु			गुरु-शनि			गुरु-बुध			शनि-राहु			शनि-गुरु			बुध-बुध		
17/07/2033			04/09/2035			18/03/2038			06/12/2034			12/10/2037			24/04/2040		
04/09/2035			18/03/2038			23/06/2040			12/10/2037			24/04/2040			20/09/2042		
गुरु	29/10/2033	शनि	29/01/2036	बुध	13/07/2038	राहु	11/05/2035	गुरु	12/02/2038	बुध	26/08/2040	गुरु	29/10/2033	शनि	29/01/2036	बुध	13/07/2038
शनि	02/03/2034	बुध	08/06/2036	केतु	30/08/2038	गुरु	27/09/2035	शनि	08/07/2038	केतु	17/10/2040	शनि	02/03/2034	बुध	08/06/2036	केतु	30/08/2038
बुध	20/06/2034	केतु	01/08/2036	शुक्र	15/01/2039	शनि	09/03/2036	बुध	17/11/2038	शुक्र	12/03/2041	बुध	20/06/2034	केतु	01/08/2036	शुक्र	15/01/2039
केतु	04/08/2034	शुक्र	02/01/2037	सूर्य	26/02/2039	बुध	04/08/2036	केतु	09/01/2039	सूर्य	25/04/2041	केतु	04/08/2034	शुक्र	02/01/2037	सूर्य	26/02/2039
शुक्र	12/12/2034	सूर्य	18/02/2037	चंद्र	06/05/2039	केतु	04/10/2036	शुक्र	13/06/2039	चंद्र	08/07/2041	शुक्र	12/12/2034	सूर्य	18/02/2037	चंद्र	06/05/2039
सूर्य	20/01/2035	चंद्र	06/05/2037	मंग	23/06/2039	शुक्र	26/03/2037	सूर्य	29/07/2039	मंग	28/08/2041	सूर्य	20/01/2035	चंद्र	06/05/2037	मंग	23/06/2039
चंद्र	26/03/2035	मंग	29/06/2037	राहु	25/10/2039	सूर्य	17/05/2037	चंद्र	14/10/2039	राहु	07/01/2042	चंद्र	26/03/2035	मंग	29/06/2037	राहु	25/10/2039
मंग	11/05/2035	राहु	14/11/2037	गुरु	13/02/2040	चंद्र	12/08/2037	मंग	07/12/2039	गुरु	04/05/2042	मंग	11/05/2035	राहु	14/11/2037	गुरु	13/02/2040
राहु	04/09/2035	गुरु	18/03/2038	शनि	23/06/2040	मंग	12/10/2037	राहु	24/04/2040	शनि	20/09/2042	राहु	04/09/2035	गुरु	18/03/2038	शनि	23/06/2040
गुरु-केतु			गुरु-शुक्र			गुरु-सूर्य			बुध-केतु			बुध-शुक्र			बुध-सूर्य		
23/06/2040			30/05/2041			29/01/2044			20/09/2042			18/09/2043			19/07/2046		
30/05/2041			29/01/2044			16/11/2044			18/09/2043			19/07/2046			25/05/2047		
केतु	13/07/2040	शुक्र	08/11/2041	सूर्य	12/02/2044	केतु	12/10/2042	शुक्र	08/03/2044	सूर्य	03/08/2046	केतु	13/07/2040	शुक्र	08/11/2041	सूर्य	12/02/2044
शुक्र	07/09/2040	सूर्य	27/12/2041	चंद्र	08/03/2044	शुक्र	11/12/2042	सूर्य	29/04/2044	चंद्र	29/08/2046	शुक्र	07/09/2040	सूर्य	27/12/2041	चंद्र	08/03/2044
सूर्य	24/09/2040	चंद्र	18/03/2042	मंग	25/03/2044	सूर्य	29/12/2042	चंद्र	24/07/2044	मंग	16/09/2046	सूर्य	24/09/2040	चंद्र	18/03/2042	मंग	25/03/2044
चंद्र	23/10/2040	मंग	14/05/2042	राहु	07/05/2044	चंद्र	28/01/2043	मंग	23/09/2044	राहु	02/11/2046	चंद्र	23/10/2040	मंग	14/05/2042	राहु	07/05/2044
मंग	12/11/2040	राहु	07/10/2042	गुरु	15/06/2044	मंग	18/02/2043	राहु	25/02/2045	गुरु	13/12/2046	मंग	12/11/2040	राहु	07/10/2042	गुरु	15/06/2044
राहु	02/01/2041	गुरु	14/02/2043	शनि	01/08/2044	राहु	14/04/2043	गुरु	13/07/2045	शनि	31/01/2047	राहु	02/01/2041	गुरु	14/02/2043	शनि	01/08/2044
गुरु	16/02/2041	शनि	18/07/2043	बुध	11/09/2044	गुरु	01/06/2043	शनि	24/12/2045	बुध	16/03/2047	गुरु	16/02/2041	शनि	18/07/2043	बुध	11/09/2044
शनि	11/04/2041	बुध	03/12/2043	केतु	28/09/2044	शनि	28/07/2043	बुध	19/05/2046	केतु	03/04/2047	शनि	11/04/2041	बुध	03/12/2043	केतु	28/09/2044
बुध	30/05/2041	केतु	29/01/2044	शुक्र	16/11/2044	बुध	18/09/2043	केतु	19/07/2046	शुक्र	25/05/2047	बुध	30/05/2041	केतु	29/01/2044	शुक्र	16/11/2044

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : भद्रिका 1 वर्ष 4 मास 3 दिन

भोग्य दशा काल : राहु 14 वर्ष 6 मास 14 दिन

भद्रिका	उल्का	सिद्धा
05/03/1987	07/07/1988	08/07/1994
07/07/1988	08/07/1994	07/07/2001
भद्रि 00/00/0000	उल्क 07/07/1989	सिद्ध 17/11/1995
उल्क 00/00/0000	सिद्ध 06/09/1990	संक 07/06/1997
सिद्ध 00/00/0000	संक 06/01/1992	मंग 17/08/1997
संक 05/03/1987	मंग 07/03/1992	पिंग 06/01/1998
मंग 08/04/1987	पिंग 07/07/1992	धांय 07/08/1998
पिंग 18/07/1987	धांय 06/01/1993	भाम 18/05/1999
धांय 17/12/1987	भाम 06/09/1993	भद्रि 07/05/2000
भाम 07/07/1988	भद्रि 08/07/1994	उल्क 07/07/2001

मंगला	पिंगला	धान्या
10/10/1990	01/08/1991	31/07/1993
01/08/1991	31/07/1993	31/07/1996
मंग 00/00/0000	पिंग 10/09/1991	धांय 31/10/1993
पिंग 00/00/0000	धांय 10/11/1991	भाम 01/03/1994
धांय 10/10/1990	भाम 30/01/1992	भद्रि 01/08/1994
भाम 10/11/1990	भद्रि 11/05/1992	उल्क 30/01/1995
भद्रि 31/12/1990	उल्क 10/09/1992	सिद्ध 31/08/1995
उल्क 02/03/1991	सिद्ध 30/01/1993	संक 01/05/1996
सिद्ध 12/05/1991	संक 11/07/1993	मंग 31/05/1996
संक 01/08/1991	मंग 31/07/1993	पिंग 31/07/1996

संकटा	मंगला	पिंगला
07/07/2001	07/07/2009	08/07/2010
07/07/2009	08/07/2010	07/07/2012
संक 18/04/2003	मंग 18/07/2009	पिंग 17/08/2010
मंग 08/07/2003	पिंग 07/08/2009	धांय 17/10/2010
पिंग 17/12/2003	धांय 06/09/2009	भाम 06/01/2011
धांय 17/08/2004	भाम 17/10/2009	भद्रि 18/04/2011
भाम 07/07/2005	भद्रि 07/12/2009	उल्क 17/08/2011
भद्रि 17/08/2006	उल्क 05/02/2010	सिद्ध 06/01/2012
उल्क 17/12/2007	सिद्ध 17/04/2010	संक 17/06/2012
सिद्ध 07/07/2009	संक 08/07/2010	मंग 07/07/2012

भामरी	भद्रिका	उल्का
31/07/1996	31/07/2000	31/07/2005
31/07/2000	31/07/2005	01/08/2011
भाम 09/01/1997	भद्रि 11/04/2001	उल्क 01/08/2006
भद्रि 31/07/1997	उल्क 09/02/2002	सिद्ध 01/10/2007
उल्क 01/04/1998	सिद्ध 30/01/2003	संक 30/01/2009
सिद्ध 10/01/1999	संक 11/03/2004	मंग 01/04/2009
संक 01/12/1999	मंग 01/05/2004	पिंग 31/07/2009
मंग 10/01/2000	पिंग 10/08/2004	धांय 30/01/2010
पिंग 31/03/2000	धांय 09/01/2005	भाम 30/09/2010
धांय 31/07/2000	भाम 31/07/2005	भद्रि 01/08/2011

धान्या	भामरी	भद्रिका
07/07/2012	08/07/2015	08/07/2019
08/07/2015	08/07/2019	07/07/2024
धांय 06/10/2012	भाम 17/12/2015	भद्रि 18/03/2020
भाम 05/02/2013	भद्रि 07/07/2016	उल्क 16/01/2021
भद्रि 07/07/2013	उल्क 08/03/2017	सिद्ध 06/01/2022
उल्क 06/01/2014	सिद्ध 17/12/2017	संक 16/02/2023
सिद्ध 07/08/2014	संक 06/11/2018	मंग 08/04/2023
संक 08/04/2015	मंग 17/12/2018	पिंग 18/07/2023
मंग 08/05/2015	पिंग 08/03/2019	धांय 17/12/2023
पिंग 08/07/2015	धांय 08/07/2019	भाम 07/07/2024

सिद्धा	संकटा	मंगला
01/08/2011	01/08/2018	01/08/2026
01/08/2018	01/08/2026	01/08/2027
सिद्ध 10/12/2012	संक 11/05/2020	मंग 11/08/2026
संक 01/07/2014	मंग 31/07/2020	पिंग 31/08/2026
मंग 10/09/2014	पिंग 09/01/2021	धांय 30/09/2026
पिंग 30/01/2015	धांय 10/09/2021	भाम 10/11/2026
धांय 31/08/2015	भाम 01/08/2022	भद्रि 31/12/2026
भाम 10/06/2016	भद्रि 10/09/2023	उल्क 02/03/2027
भद्रि 31/05/2017	उल्क 09/01/2025	सिद्ध 12/05/2027
उल्क 01/08/2018	सिद्ध 01/08/2026	संक 01/08/2027

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : भद्रिका 1 वर्ष 4 मास 3 दिन

भोग्य दशा काल : राहु 14 वर्ष 6 मास 14 दिन

उल्का	सिद्धा	संकटा	पिंगला	धान्या	भामरी
07/07/2024	08/07/2030	07/07/2037	01/08/2027	31/07/2029	31/07/2032
08/07/2030	07/07/2037	07/07/2045	31/07/2029	31/07/2032	31/07/2036
उल्क 07/07/2025	सिद्ध 17/11/2031	संक 18/04/2039	पिंग 10/09/2027	घांय 31/10/2029	भाम 09/01/2033
सिद्ध 06/09/2026	संक 07/06/2033	मंग 08/07/2039	घांय 10/11/2027	भाम 01/03/2030	भद्रि 31/07/2033
संक 06/01/2028	मंग 17/08/2033	पिंग 17/12/2039	भाम 30/01/2028	भद्रि 01/08/2030	उल्क 01/04/2034
मंग 07/03/2028	पिंग 06/01/2034	घांय 17/08/2040	भद्रि 11/05/2028	उल्क 30/01/2031	सिद्ध 10/01/2035
पिंग 07/07/2028	घांय 07/08/2034	भाम 07/07/2041	उल्क 10/09/2028	सिद्ध 31/08/2031	संक 01/12/2035
घांय 06/01/2029	भाम 18/05/2035	भद्रि 17/08/2042	सिद्ध 30/01/2029	संक 01/05/2032	मंग 10/01/2036
भाम 06/09/2029	भद्रि 07/05/2036	उल्क 17/12/2043	संक 11/07/2029	मंग 31/05/2032	पिंग 31/03/2036
भद्रि 08/07/2030	उल्क 07/07/2037	सिद्ध 07/07/2045	मंग 31/07/2029	पिंग 31/07/2032	घांय 31/07/2036
मंगला	पिंगला	धान्या	भद्रिका	उल्का	सिद्धा
07/07/2045	08/07/2046	07/07/2048	31/07/2036	31/07/2041	01/08/2047
08/07/2046	07/07/2048	08/07/2051	31/07/2041	01/08/2047	01/08/2054
मंग 18/07/2045	पिंग 17/08/2046	घांय 06/10/2048	भद्रि 11/04/2037	उल्क 01/08/2042	सिद्ध 10/12/2048
पिंग 07/08/2045	घांय 17/10/2046	भाम 05/02/2049	उल्क 09/02/2038	सिद्ध 01/10/2043	संक 01/07/2050
घांय 06/09/2045	भाम 06/01/2047	भद्रि 07/07/2049	सिद्ध 30/01/2039	संक 30/01/2045	मंग 10/09/2050
भाम 17/10/2045	भद्रि 18/04/2047	उल्क 06/01/2050	संक 11/03/2040	मंग 01/04/2045	पिंग 30/01/2051
भद्रि 07/12/2045	उल्क 17/08/2047	सिद्ध 07/08/2050	मंग 01/05/2040	पिंग 31/07/2045	घांय 31/08/2051
उल्क 05/02/2046	सिद्ध 06/01/2048	संक 08/04/2051	पिंग 10/08/2040	घांय 30/01/2046	भाम 10/06/2052
सिद्ध 17/04/2046	संक 17/06/2048	मंग 08/05/2051	घांय 09/01/2041	भाम 30/09/2046	भद्रि 31/05/2053
संक 08/07/2046	मंग 07/07/2048	पिंग 08/07/2051	भाम 31/07/2041	भद्रि 01/08/2047	उल्क 01/08/2054
भामरी	भद्रिका	उल्का	संकटा	मंगला	पिंगला
08/07/2051	08/07/2055	07/07/2060	01/08/2054	01/08/2062	01/08/2063
08/07/2055	07/07/2060	08/07/2066	01/08/2062	01/08/2063	31/07/2065
भाम 17/12/2051	भद्रि 18/03/2056	उल्क 07/07/2061	संक 11/05/2056	मंग 11/08/2062	पिंग 10/09/2063
भद्रि 07/07/2052	उल्क 16/01/2057	सिद्ध 06/09/2062	मंग 31/07/2056	पिंग 31/08/2062	घांय 10/11/2063
उल्क 08/03/2053	सिद्ध 06/01/2058	संक 06/01/2064	पिंग 09/01/2057	घांय 30/09/2062	भाम 30/01/2064
सिद्ध 17/12/2053	संक 16/02/2059	मंग 07/03/2064	घांय 10/09/2057	भाम 10/11/2062	भद्रि 11/05/2064
संक 06/11/2054	मंग 08/04/2059	पिंग 07/07/2064	भाम 01/08/2058	भद्रि 31/12/2062	उल्क 10/09/2064
मंग 17/12/2054	पिंग 18/07/2059	घांय 06/01/2065	भद्रि 10/09/2059	उल्क 02/03/2063	सिद्ध 30/01/2065
पिंग 08/03/2055	घांय 17/12/2059	भाम 06/09/2065	उल्क 09/01/2061	सिद्ध 12/05/2063	संक 11/07/2065
घांय 08/07/2055	भाम 07/07/2060	भद्रि 08/07/2066	सिद्ध 01/08/2062	संक 01/08/2063	मंग 31/07/2065

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से ऋ निष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

5	मूलांक	1
6	भाग्यांक	3
3, 5, 9, 6	मित्र अंक	1, 4, 8, 9, 3
2, 4, 8	शत्रु अंक	5, 6
23,32,41,50,59	शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
सोम, मंगल, गुरु	शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
चन्द्र, मंगल, गुरु	शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
कर्क, धनु	मित्र राशि	कन्या, कुम्भ
मिथुन, वृश्चिक, मकर	मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
हनुमान	अनुकूल देवता	गणेश
पुखराज	शुभ रत्न	हीरा
सुनहला, पीला हकीक	शुभ उपरत्न	जरकिन, सुनहरा हकीक
मूंगा	भाग्य रत्न	पन्ना
कांसा	शुभ धातु	रजत
पीत	शुभ रंग	रजत
पूर्वोत्तर	शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
संध्या	शुभ समय	सूर्योदय
हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प	दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दाल चना	दान अन्न	चावल
घी	दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सौंपकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है। सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

Pradeep

जीवन रत्न:	पुखराज	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति,
भाग्य रत्न:	मूंगा	धन, भाग्योदय,
कारक रत्न:	मोती	धन, सन्तति सुख,

Priti

जीवन रत्न:	हीरा	कम खर्च, दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
भाग्य रत्न:	पन्ना	कम खर्च, भाग्योदय, स्वास्थ्य
कारक रत्न:	नीलम	पराक्रम, सुख, सन्तति सुख

रत्न	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	ग्रह	नक्षत्र
माणिक्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	सूर्य	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	चन्द्र	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मंगल	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	बुध	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	गुरु	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	शुक्र	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	शनि	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	राहु	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	केतु	अश्विनी, मघा, मूल

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/03/1987-16/12/1987
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	10/08/1995-16/04/1998
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	16/04/1998-05/06/2000
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	05/06/2000-22/07/2002
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/09/2004-01/11/2006

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-19/01/2017
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	24/03/2025-26/10/2027
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	26/10/2027-11/04/2030
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/04/2030-25/05/2032
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/07/2034-20/08/2036

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/12/2043-29/11/2046
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	09/09/2054-01/04/2057
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	01/04/2057-22/05/2059
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	22/05/2059-05/07/2061
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/02/2064-03/10/2065

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ बदनामी
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	सम स्वास्थ्य
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ धन
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ पराक्रम
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ सन्तति कष्ट

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	09/10/1990-06/03/1993
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	05/06/2000-22/07/2002
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	22/07/2002-05/09/2004
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	05/09/2004-01/11/2006
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	09/09/2009-15/11/2011

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	18/01/2020-21/07/2022
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/04/2030-25/05/2032
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	25/05/2032-06/07/2034
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	06/07/2034-20/08/2036
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/06/2039-06/03/2041

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	20/07/2049-17/02/2052
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	22/05/2059-05/07/2061
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	05/07/2061-15/02/2064
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	15/02/2064-03/10/2065
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	21/08/2068-25/10/2070

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ सुख
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ दुर्घटना से बचाव
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	सम भाग्योदय
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	अशुभ व्यावसायिक परेशानी
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम कम खर्च

कालसर्प योग

अग्ने राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी

इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

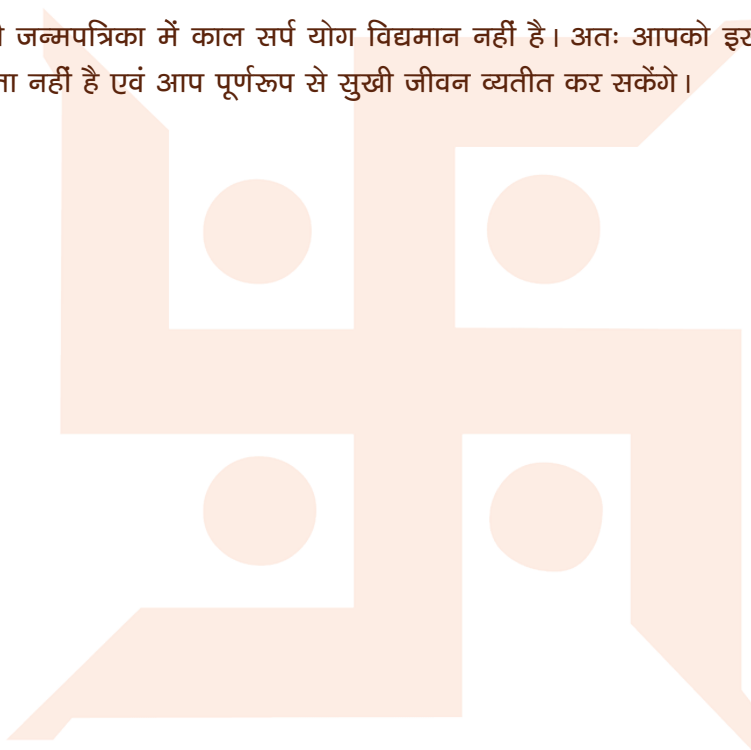
जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

Pradeep

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्णरूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

Priti

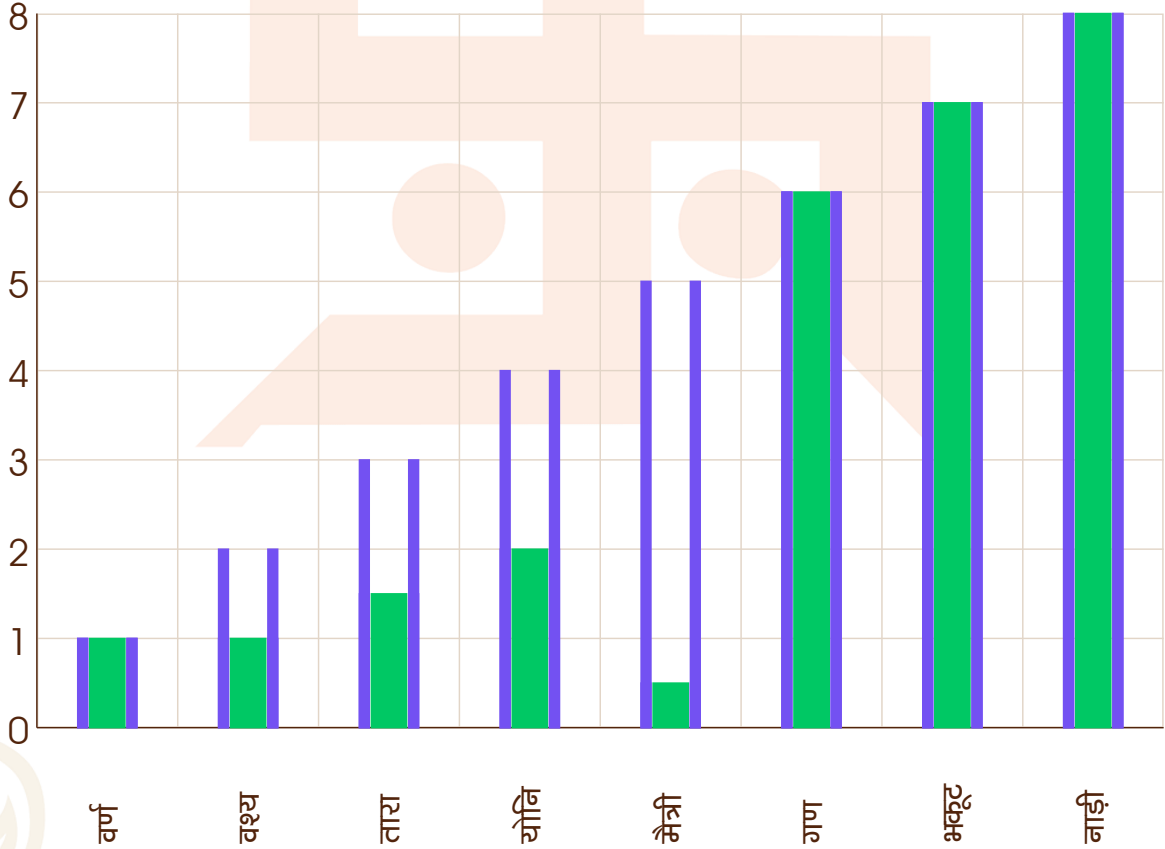
आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्णरूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।



अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	शूद्र	1	1.00	..	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	मानव	2	1.00	..	स्वभाव
तारा	प्रत्यारि	साधक	3	1.50	..	भाग्य
योनि	गज	श्वान	4	2.00	..	यौन विचार
मैत्री	मंगल	बुध	5	0.50	..	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	मनुष्य	6	6.00	..	सामाजिकता
भकूट	मेष	मिथुन	7	7.00	..	जीवन शैली
नाडी	मध्य	आद्य	8	8.00	..	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	27.00		

कुल : 27 / 36



अष्टकूट मिलान

श्री का वर्ग मृग है तथा सुश्री का वर्ग मार्जार है। इन दोनों वर्गों में परस्पर मित्रता है।
अष्टकूट मिलान के अनुसार श्री और सुश्री का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

श्री मंगलीक नहीं है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है।
सुश्री मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।
श्री तथा सुश्री में मंगलीक मिलान ठीक नहीं है।

निष्कर्ष

अष्टकूट मिलान : 27 / 36.0.

श्री तथा सुश्री में मंगलीक मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष के कारण मिलान ठीक नहीं हैं।

मेलापक फलित

स्वभाव

श्री की जन्म राशि अग्नितत्व युक्त मेष है तथा सुश्री की वायुतत्व युक्त मिथुन राशि है। अग्नि और वायु के परस्पर सम्बन्ध मित्रता के हैं अतः इन दोनों में भी सामान्यतया शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर समानता रहेगी तथा सामान्य मतभेदों के बावजूद जीवन में खुशी एवं प्रसन्नता प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे।

श्री का राशि स्वामी मंगल तथा सुश्री का राशि स्वामी बुध एक दूसरे के शत्रु हैं। यह ग्रह स्थिति दाम्पत्य सुख के लिए विशेष अनुकूल नहीं है। अतः जीवन में विभिन्न प्रकार के विरोधाभासों का इनको सामना करना पड़ेगा तथा अवसरानुकूल एक दूसरे के प्रति भी वैमनस्य का भाव रखेंगे जिससे जीवन में अनावश्यक अशांति तथा परेशानियां रहेंगी। अतः एक दूसरे की भावनाओं को समयानुसार आदर प्रदान करके ही आप उपरोक्त समस्याओं को कम कर सकते हैं।

श्री की राशि सुश्री की राशि से एकादश तथा श्री की सुश्री से तृतीय भाव में पड़ती है यह शुभ भकूट है। इसके प्रभाव से आपकी परस्पर प्रेम एवं स्नेह की भावना में वृद्धि होगी तथा एक दूसरे को समझने में सफलता प्राप्त करेंगे जिससे वैवाहिक जीवन में किंचित सुख एवं शांति की अनुभूति कर सकते हैं। साथ ही आर्थिक एवं अन्य सुख सुविधाओं का उपभोग करने में भी समर्थ रहेंगे।

श्री का वश्य चतुष्पद है तथा सुश्री का मानव। इसके प्रभाव से आपकी स्वाभाविक अभिरुचियों में स्पष्ट अंतर दृष्टिगोचर होगा तथा वैवाहिक जीवन में स्नेह एवं सुख में ईर्ष्या के भाव की भी उत्पत्ति होने की संभावना रहेगी। यदि श्री, सुश्री की स्वतंत्र प्रेम प्रवृत्ति को समझ सकें तथा मिस भी श्री की काम भावनाओं का आदर करें तो इनका जीवन सुखमय हो सकता है।

श्री का वर्ण क्षत्रिय है जिससे वह साहसी एवं पराक्रमी पुरुष होंगे तथा सुश्री का वर्ण शूद्र है इसके प्रभाव से वह कर्तव्य परायण होगी तथा किसी भी प्रकार के कार्य में विशेष रुचि का प्रदर्शन करके उसे करने में तत्पर हो जाएंगी।

धन संबंधी

श्री और सुश्री की तारा एक दूसरे के लिए सम रहेगी। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य रूप से धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों समर्थ होंगे। श्री और सुश्री की राशि तृतीय एवं एकादश भाव में पड़ती है। यह शुभ भकूट माना जाता है। इसके प्रभाव से उनकी आय में नित्य वृद्धि होगी जिससे अर्थिक सुदृढ़ता बनी रहेगी। साथ ही मंगल का प्रभाव भी सम रहेगा। अतः धनार्जन होता रहेगा।

सुश्री एक सौभाग्यशाली महिला होंगी अतः उन्हें अचानक धन प्राप्ति की पूर्ण संभावना

होगी। यह लाटरी या सट्टे या किसी अन्य माध्यम से हो सकता है। साथ ही पैतृक सम्पति या जायदाद भी उनको मिलेगी जिससे दम्पति धन एवं ऐश्वर्य से युक्त रहकर अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

स्वास्थ्य

श्री की नाड़ी मध्य तथा सुश्री की नाड़ी आद्य है। अतः अलग अलग नाड़ियों में उत्पन्न होने के कारण नाड़ी दोष से ये मुक्त रहेंगे तथा इसका कोई दुष्प्रभाव इन पर नहीं पड़ेगा परन्तु मंगल की स्थिति प्रतिकूल रहेगी जिसके प्रभाव से श्री रक्त तथा पित विकार से परेशानी की अनुभूति करेंगे। साथ ही हृदय रोग संबंधी परेशानी भी होगी एवं रतिक्रिया संबंधी निष्क्रियता के भाव की भी उत्पत्ति की संभावना रहेगी जिससे दाम्पत्य जीवन में कलह तथा अशांति की संभावना उत्पन्न होगी। अतः उपरोक्त अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए श्री को हनुमान जी की नियमित पूजा करनी चाहिए तथा मंगलवार का उपवास करना चाहिए।

सन्तान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से श्री और सुश्री का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त श्री और सुश्री के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में सुश्री के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन सुश्री को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में सुश्री को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुंदर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से श्री और सुश्री सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरुद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार श्री और सुश्री का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

सुश्री के सास से प्रायः अच्छे संबंध रहेंगे। यद्यपि उनकी सास अन्य जनों के मामलों में कम ही हस्तक्षेप करने वाली महिला होंगी तथापि उनके कुछ सिद्धांत सुश्री के लिए अनुकरणीय हो सकते हैं। साथ ही इन दोनों के मध्य कोई विशेष समस्या या मतभेद नहीं रहेंगे।

सुश्री अपने कुशल व्यवहार मधुर वाणी एवं सेवा भाव से ससुर को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही ननद एवं देवरों के साथ भी उनके संबंध मित्रता पूर्ण रहेंगे तथा उनको पूर्ण सहयोग एवं स्नेह प्रदान करेंगी। अतः उनका दिल जीतने में सफल रहेंगी।

इस प्रकार सुश्री के प्रति उनके सास ससुर का दृष्टि कोण आत्मयीता से पूर्ण रहेगा तथा घर में उसे पूर्ण सुख सुविधा तथा स्नेह प्रदान करेंगे।

ससुराल-श्री

श्री की सास से संबंधों में मधुरता बनी रहेगी तथा आपसी सामंजस्य के कारण एक दूसरे के प्रति स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा तथापि यदा कदा संबंधों में औपचारिकता के भाव का भी समावेश रहेगा। उनके मध्य मतभेदों की न्यूनता रहेगी। अतः समय समय पर श्री सपत्नीक ससुराल के लोगों से मिलने जाया करेंगे।

लेकिन श्री ससुर के साथ मधुर संबंधों में नित्य वृद्धि करने में समर्थ रहेंगे तथा आपसी सामंजस्य एवं बुद्धिमता से इनके मध्य अपनत्व का भाव बना रहेगा तथा समय समय पर उनसे इन्हें उपयोगी सलाह भी मिलती रहेगी। इसके अतिरिक्त साले एवं सालियों से भी मित्रतापूर्ण संबंध रहेंगे तथा उनसे यथोचित सम्मान सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होगी। इस प्रकार ससुराल के लोगों का श्री के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रहेगा तथा सास को छोड़कर अन्य लोगों से अनौपचारिक संबंध रहेंगे। फलतः वे इनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा अपना वांछित सहयोग समय समय पर प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

अंक ज्योतिष फल

Pradeep

आपका जन्म दिनांक पाँच होने से अंक ज्योतिष के आधार पर आपका मूलांक पाँच होता है। इसका स्वामी बुध ग्रह है। मूलांक पाँच के प्रभाववश आप रोजगार के क्षेत्र में नौकरी की अपेक्षा व्यापार के मार्ग की ओर अधिक आकृष्ट रहेंगे। यदि आप नौकरी का मार्ग चुनते हैं तो ऐसा रोजगार आपको अधिक पसन्द आयेगा। जहाँ लेन-देन, लेखा, यांत्रिकी, वाणिज्य, इत्यादि का कार्य होता हो। कम्पनी, फैक्ट्री, उच्च व्यापार जगत आपको रास आयेगा।

बुधग्रह के प्रभाववश आपके अन्दर वाक्पटुता, तर्कशक्ति अच्छी रहेगी एवं सामने वाले व्यक्ति को आप अपनी बातों से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। आप हर कार्य को जल्दी समाप्त करना पसन्द करेंगे एवं ऐसे रोजगार की ओर उन्मुख होंगे जिसमें शीघ्र सफलता कम मेहनत तथा अधिक लाभ पर प्राप्त होती रहे। आप थोड़े जल्दबाज एवं फुर्तीले भी रहेंगे। जल्दबाजी के चक्कर में आप कभी-कभी हानियों का भी सामना करेंगे।

आपकी मानसिक स्थिति चंचल होने से आपको शीघ्र क्रोध आ जाया करेगा एवं कभी-कभी चिड़ चिड़ाहट भी रहा करेगी। आप अधिकांशतः बुद्धि जनित कार्यों में रुचि लेंगे। इस कारण आपकी दिमागी ताकत अधिक खर्च होने से अधिक आयु में आपको स्नायुवेग द्वारा उत्पन्न रोगों का भी सामना करना पड़ेगा।

मूलांक पाँच का स्वामी बुध ग्रह होने से कमोवेश बुध के गुण-अवगुण आपके अन्दर आयेंगे। विद्याध्यन लेखन-पठन की ओर आपकी विशेष रुचि रहेगी।

Priti

आपका जन्म दिनांक दस है। एक एवं शून्य का जोड़ एक होता है जोकि अंक ज्योतिषानुसार आपका मूलांक होता है। मूलांक एक का स्वामी सूर्य और शून्य को ब्रह्म या शिव माना गया है। इनके प्रभाववश आप अपने क्षेत्र में एक प्रभावशील महिला होंगी। सूर्य जिस तरह से प्रकाशित एवं अस्त होता है वैसे ही आपके जीवन में काफी ऐसे अवसर आयेंगे जिनमें आपको सफलताएँ प्राप्त होंगी। कभी-कभी अस्त सूर्य के समान असफलता का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आप असफलता से पीछे नहीं हटेंगी। कुछ दिन शिव की तरह शांत रहकर पुनः सफलता अर्जित करेंगी। संघर्ष, साहस, धैर्य एवं उच्च महत्वाकांक्षायें आप में अधिक रहेंगी।

आप स्थिरवादी, दृढ़ निश्चयी, वचनशील महिला होंगी। इन गुणों वश मेहनत एवं ईमानदारी से सफलता अर्जित करेंगी। संघर्षों से पीछे नहीं हटेंगी। समाज में नाम तथा यश प्राप्त करेंगी। आप परोपकारवादी, बहुतों की पोषक बनेंगी। आर्थिक स्थिति आपकी मध्य अवस्था में काफी ठीक रहेगी। समाज में आपका अच्छा नाम होगा।

मानसिक स्थिति आपकी स्वतंत्र विचारधारा की रहेगी। इससे आपको पराधीन रहकर कार्य

करना अच्छा नहीं लगेगा। आप किसी के आधीन कार्य करने की अपेक्षा स्वतंत्र रूप से कार्य करने पर अपनी प्रतिभा का उपयोग अधिक करेंगी। आप अपने कार्य करने के ढंग में स्वतंत्रता, निष्पक्षता, अधिक पसन्द करेंगी।

Pradeep

भाग्यांक 6 के स्वामी शुक्र ग्रह के प्रभाव से आपका भाग्योदय चौंसठ कलाओ के अन्दर ही होगा। शुक्र कला का दाता है। अतः आपके अन्दर ललित कलाओं में से कुछ कलाओं का समावेश होगा। आप कला के क्षेत्र में, कला के द्वारा जीवन यापन करेंगे। कलात्मक वस्तुएं आपको लाभ प्रदान करेंगी। आप विपरीत योनि के प्रति सहज आकर्षण के अवगुण वश तन-मन एवं धन का व्यय करेंगे। सौन्दर्य की ओर आकर्षण आपकी कमजोरी रहेगा।

आपके कार्य करने के स्थान तथा रहने के स्थान की साज-सजावट बनाये रखने में आपको हमेशा धन व्यय करते रहना होगा। क्योंकि सुसज्जित परिवेश में रहना आपके मनोनुकूल है। आप वस्त्र आभूषण के शौकीन रहेंगे। धन स्थिति आपकी ठीक रहेगी। शान-शौकत बनी रहेगी। सामने वाले व्यक्ति आपको हमेशा धनी समझते रहेंगे, भले ही आप यदा-कदा कड़की के दिनों में चल रहे हों। किसी भी कला के क्षेत्र को आप अपना रोजगार का क्षेत्र चुनते हैं, तो आपकी उन्नति निश्चित ही होगी।

Priti

भाग्यांक तीन का अधिष्ठाता बृहस्पति ग्रह को माना गया है। इसको गुरु भी कहते हैं। गुरु ग्रह के प्रभाववश आप धार्मिक, दानी, उदार, सच्चरित्र, ज्ञानी, विद्वान, परोपकारी, शान्त स्वभाव, सत्य पर आचरण करने वाली महिला के रूप में ख्याति प्राप्त करेंगी। अनुशासन में रहना एवं दूसरों से अनुशासन की अपेक्षा करना आपका प्रमुख गुण रहेगा। आप अपने अधिनस्थों से अधिकांश कार्य अपने बुद्धि कौशल से निकलवाने में सिद्धहस्त होंगी।

सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्रों में आपकी रुचि रहेगी एवं आवश्यकता के समय समाज सेवा के कार्य से पीछे नहीं हटेंगी। धर्म-कर्म के कार्यों में आपकी रुचि रहेगी। गुरु धन-सम्पदा का दाता ग्रह है। अतः गुरु के प्रभाव से अपने कर्मक्षेत्र, रोजगार के क्षेत्र में अच्छी सम्पदा एकत्रित करेंगी। भूमि, वाहन, सम्पत्ति का अच्छा सुख प्राप्त करेंगी। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में रुचि लेंगी और ऐसा कार्य करना पसन्द करेंगी जिनमें आपके अनुभव, ज्ञान का भरपूर उपयोग होता रहे और आपको पूर्ण सम्मान, यश धन इत्यादि मिले।

लग्न फल

Pradeep

आपका जन्म उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र के द्वितीय चरण में मीन लग्न में हुआ था। आपके जन्मकाल मेदिनीय क्षितिज पर कन्या का नवमांश एवं मीन का द्रेष्काण भी उदित था। इस संबंधित लग्नादिक ज्योतिषीय आकृति आपके जीवन को धन संपत्ति से युक्त आमोद-प्रमोद एवं हर्षोल्लास से परिपूर्ण आनंदमय जीवन बिताने के साधनों से युक्त करता है।

प्रायः हर दशा में ज्योतिषीय प्रभाव आपका पक्षधर है। यदि आप अपने हस्तगत कार्य व्यवसाय को समय पर सुव्यवस्थित ढंग एवं समर्पण की भावना से संपादित कर लिए तो आपका जीवन सफल होने की संभावना है, बर्सेते कि आप सकारात्मक ढंग से कार्यों का संपादन करें। फलस्वरूप यह आपके लिए उन्नति कारक होगा। इस दृष्टिकोण से यह आवश्यक है कि आप वासनात्मक प्रवृत्ति को बहुत महत्त्व देकर इन कार्यों से संबंधित रहते हैं। यदि आप इस प्रवृत्ति हेतु सतर्कता नहीं बरतें तो यह वासना आपको मिट्टी पलीत कर देगा। अर्थात् आपका विनाश कर देगा। आप इनका उन्मूलन करें अन्यथा इस उत्तेजना के कारण आपके जीवन की ललिमा नष्ट हो जाएगी तथा इस प्रवृत्ति के कारण मात्र आपका परिवार ही अस्त-व्यस्त नहीं हो जाएगा। बल्कि यह आपको अकर्मण्य बना कर आपके कार्य कलाप से भी दिशा हीन बना देगा। परंतु यदि आप इस प्रवृत्ति को समाप्त कर दिए तो आप बहुत अच्छी प्रकार उन्नति कर सकेंगे। आप धन संचय कर सकेंगे। इस प्रकार आप मात्र अपने उपार्जन को ही नहीं बढ़ाएंगे, बल्कि आप धन संपत्ति भी सर्वथा अर्जित करेंगे। आपमें ऐसी क्षमता है कि आप अपने प्रतिपक्षी को परास्त कर देंगे जो कि आपके कार्य-व्यवसाय को नष्ट करने का प्रयास करेगा।

आप मात्र एक सुखद एवं अभिमंत्रित भवन के स्वामी होंगे। बल्कि हर दशा में अपने मित्रों के अपना कर अपनी मित्र मंडली का विस्तार करेंगे। आप समाजिक क्लब के सदस्य होंगे। आप अपनी भद्रता एवं अतिथ्य सत्कार के कारण अपने मित्र मंडली में प्रख्यात भी होंगे। परंतु आपको कुछ समस्याओं से मुठ-भेड़ भी करना पड़ेगा। आप अन्य लोगों के लिए किसी प्रकार का कष्ट नहीं पहुंचाने वाले बल्कि अतिशय विश्वास पात्र हैं। आप किसी के भी साथ सामंजस्य एवं सकारात्मक फल प्राप्ति की उत्कंठा रखते हैं। जब आप किसी भी मित्र के साथ प्रतिज्ञा करते हैं उसे बहुत अच्छी प्रकार निभाते हैं। परंतु क्या वे इस प्रकार पीछे भी लौट सकते हैं। नहीं। वास्तव में संयोगवश ऐसा कुछ घटित हो जाए उस परिस्थिति में जो आपसे संबंधित है। वे लोग आपकी आवश्यकता के समय अथवा जरूरत पड़ने पर अपने कार्य को त्याग कर आपके पक्ष में अपना योगदान करते हैं। अतएव आप उन पर अत्यंत भरोसा कर के अन्यो को उपेक्षित अथवा वहिष्कृत कर देते हैं।

यदि आप सतर्कता पूर्वक मर्यादित पथ पर चलते हैं तो आपके पारिवारिक सदस्य तथा सामान्य जन आपके गुणों एवं साहसिक प्रवृत्ति तथा दानशीलता हेतु आपकी प्रशंसा करेंगे। आप धार्मिक प्रवृत्ति के प्राणी हैं। आप तीर्थ स्थलों का परिदर्शन करेंगे एवं पौढ़ावस्था में आप भक्ति के प्रदर्शन में अभिरुचि रखेंगे तथा धर्म-दर्शन एवं पराविज्ञान में दक्ष हो जाएंगे। आप इस विषय में बहुत अधिक ज्ञानार्जन कर सकते हैं। यदि आप चयन करेंगे तो कोई छोटा धर्मोपदेशक भी बन सकते हैं।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में अनुकूल दिन गुरुवार, मंगलवार एवं रविवार का दिन उत्तम हैं। शेष साप्ताहिक तीन दिन यथा बुधवार, शुक्रवार एवं शनिवार का दिन सामान्य फलदायी है।

आपके लिए अंकों में उत्तम एवं विश्वसनीय अंक 1, 3, 4 एवं 9 अंक है। परंतु हर दशा में 8 अंक अनुकूल नहीं है।

आपके लिए रंगों में रंग पीला, लाल, गुलाबी एवं नारंगी रंग आपके लिए अनुकूल हैं। परंतु नीला रंग आपके लिए किसी भी दशा में अनुकूल नहीं है।

Priti

आपका जन्म स्वाती नक्षत्र के तृतीय चरण में तुला लग्नोदय काल हुआ था। आपके जन्मकाल मेदिनीय क्षितिज पर कुंभ राशि का नवमांश एवं कुंभ राशि का द्रेष्काण भी उदित था। तुला प्रभावित स्वरूप के अनुसार अनुकूल जन्म बिंदु यह सुनिश्चित करता है कि आपका जीवन उत्तम फलदायी रहेगा। साथ-साथ यह भी संकेत प्राप्त हो रहा है कि स्वयं ही कोमल भावनाओं से तप्त पथ पर चल कर मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा।

स्वाती नक्षत्र एवं तुला राशि यह निर्देशित करता है कि आप स्वास्थ्य धन एवं प्रसन्नता के दृष्टि से सौभाग्यशाली है। परंतु कुंभ नवमांशदिक प्रभाव से यह दृश्य हो रहा है कि आप स्वभाव से डरपोक एवं द्वि स्वभात्मक विचार के महिला हैं। यह आपकी प्रतिभा के समतुल्य नहीं है। इससे आपका साहस विश्वसनीयता, छवि, सत्यनिष्ठा एवं न्याय प्रियता में समानता नहीं हो रही है। आपको इस संभव नकारात्मक प्रवृत्ति पर सफलता प्राप्त करनी चाहिए।

ऐसा हो सकता है कि आप व्यक्तिगत रूप से अपने पति के प्रति श्रद्धावान होकर उसको प्रसन्न रखने के लिए वासनामय प्यार दे सके। ऐसी भी संभावना है कि आप अपने गुण के अनुरूप अपने जीवन साथी को संतुष्ट करने के लिए किसी भी प्रकार से सामंजस्य स्थापित कर ले। परंतु जब ऐसा प्रदर्शन करने का मौका मिले तो वासनात्मक ज्यादाती किसी भी विपरीत योनि के साथ करने की भावना से मिथ्याचारी प्रदर्शन कर के आप अंदर से कुछ और बाहर से कुछ और हैं ऐसा प्रमाण प्रस्तुत कर दे। आप सामान्यतः विपरीत योनि के प्रति विख्यात प्राणी है। आप प्रेम प्रसंग एवं वासनात्मक तृप्ति हेतु कामातुर होकर संतुष्टि प्राप्ति कर सकती हैं। इस प्रकार की प्रवृत्ति आपको अन्दर से कुछ और तथा बाहर से कुछ और रूप में प्रस्तुत करती है।

यह बहुत उत्तम हो कि आप इस प्रकार के प्रसंग का निषेध कर अपनी संगिनी के प्रति विश्वासपात्र बनें। इस प्रकार की सदभावना पूर्ण कार्य कलाप से आपकी पारिवारिक व्यवस्था सुदृढ़ हों तथा आपके समझदार पति एवं सुंदर संतान युक्तपरिवार में प्रसन्नता का सृजन हो जाए।

आपका जीवन सामान्यतः आपके कठिन श्रम युक्त एवं आपकी कुशाग्र बुद्धि के कारण उत्तम रहेगा। क्योंकि आप अत्यंत धन व्यय कर अपने परिवार को व्यवस्थित रखेंगी। आपके जीवन के इस वर्ष की

अवस्था से 35 वर्ष की आयु तक का समय पूर्ण रूपेण धनमात्र के लिए महत्वपूर्ण रहेंगे। जिस वजह से आप मुक्त हस्त से धन का व्यय नहीं करेंगी। बल्कि आप सदैव भवन को आकर्षित बनाने में आधुनिक साज शय्याओं एवं कलात्मक ढंग से सजाने पर भी धन का व्यय करेंगी। अन्य शब्दों में आपके आय की आंशिक राशि आपके सम्मिलित होने कारण व्यय होगी। अंत में परिणाम यह होगा कि आपकी वृद्धा अवस्था में धन का अभाव हो जाएगा तथा आपके पास मात्र काम चलाऊ धन राशि शेष रह जाएगी। आपको अपनी वृद्धावस्था के लिए सदैव ही स्वास्थ्य संबंधी कुछ सावधानी बरतनी चाहिए। आप निःसंदेह उत्तम स्वास्थ्य का आनंद हर परिस्थिति में अच्छी प्रकार से प्राप्त करेंगी। लेकिन कुछ वर्षों के पश्चात् नाजुक परिस्थिति में कतिपय रोग यथा चर्म रोग, तथा मूत्र संबंधी रोगादि से प्रभावित होने की आशंका है। अतः आपको इन रोगों के प्रति पूर्व ही सावधानी बरतनी चाहिए।

आप अपने कार्य-कलाप में उन्नति हेतु संबंधित अनुकूल अंक 1, 2, 4 एवं 7 अंक उपयुक्त हैं। परंतु अंक 3, 5, 6 एवं 9 अंक आपके लिए अनुपयुक्त एवं प्रतिकूल हैं। अस्तु अनुपयुक्त अंको का व्यवहार न करें

आपके लिए साप्ताहिक वारों में भाग्यशाली दिन शनिवार तथा शुक्रवार है। परन्तु आपको रविवार, गुरुवार, मंगलवार एवं सोमवार के दिनों का परित्याग करना चाहिए क्योंकि ये चारों दिन आपके लिए अनुकूल नहीं है। बुधवार आप के लिए मध्य फलदायक है।

नक्षत्रफल

Pradeep

आप भरणी नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि मेष तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण क्षत्रिय, गण मनुष्य, नाडी मध्य, योनि गज तथा वर्ग मृग होगा। भरणी नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने के कारण आपका राशिनाम "ले" से होगा। यथा लेखराज।

भरणी नक्षत्र में जन्म होने के कारण आप मनोरंजन के कार्यक्रमों यथा गीत, संगीत, नाटक तथा खेल कूदों के अधिक शौकीन होंगे तथा इन्हीं कार्यों पर अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगे। जल से आप नैसर्गिक रूप से भयभीत रहेंगे। यहां तक स्नानादि की इच्छा का भी यदा कदा अभाव रहेगा। आप चंचल प्रकृति के व्यक्ति होंगे तथा लोगों से मधुरता का व्यवहार अल्प मात्रा में ही करेंगे।

सदापकीर्ति हिं महापवादैनाना विनोदेश्च विनीतकालः।

जलातिभीरुश्चपलः खलश्च प्राणी प्रणीतोभरणीजातः।।

जातकाभरणम्

आप अपने संकल्प के पक्के होंगे तथा जो निश्चय एक बार कर लेंगे उसे पूरा करके ही छोड़ेंगे। सत्य का आप हमेशा पालन करेंगे। शरीर आपका स्वस्थ रहेगा तथा रोगों का अभाव रहेगा तथापि यदा कदा रोग ग्रस्त रहेंगे। कार्य आप जो भी करेंगे चतुराई से सम्पन्न करेंगे तथा सामान्य जीवन आपका समस्त सुखों से पूर्ण होकर व्यतीत होगा।

कृत निश्चयः सत्यारूढक्षः सुखितश्च भरणीषु।

बृहज्जातकम्

कभी कभी आपका स्वभाव अनावश्यक रूप से जिददी बन जाता है। जो हठ करते हैं उसे छोड़ते नहीं हैं। इससे अन्य जनों को भी परेशानी होगी। सम्पत्ति या धन दौलत तथा वैभव का आपको जीवन भर अभाव नहीं रहेगा। धनार्जन पर्याप्त मात्रा में होगा तथा शरीर की आरोग्यता बनी रहेगी। मुखकृति भी आपकी निश्चित रूप से दर्शनीय होगी।

अरोगी सत्यवादी च सम्पद्युक्तो दृढव्रतः।

भरण्यां जायते लोकः सुमुखश्च सुनिश्चितम्।।

जातक दीपिका

आप समय समय पर मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता का अनुभव करेंगे तथा लोग आपके चरित्र पर भी कभी कभी सन्देह प्रकट करेंगे। आप के हृदय में यदा कदा कठोरता का भाव भी रहेगा। आपके पास धन पर्याप्त मात्रा में रहेगा तथा संसार में धनवान बन कर रहेंगे।

याम्यर्क्षे विकलोढन्यदारनिरतः कूरः कृतध्नो धनी।

जातकपरिजातः

Priti

आपका जन्म आर्द्रा नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्म राशि मिथुन तथा राशि स्वामी बुध होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण शूद्र, वर्ग मार्जार, नाड़ी आद्य, गण मनुष्य तथा श्वान योनि होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "कु" से प्रारम्भ होगा। यथा कुलदीप, कुलानन्द।

आप अपने जीवन काल में व्यस्तता या अन्य कारणों से भोजन समय पर लेने में प्रायः असमर्थ रहेंगे। आप में शारीरिक लावण्यता भी अल्प मात्रा में ही विद्यमान रहेगी। आपके स्वभाव में क्रोध की प्रवृत्ति रहेगी तथा छोटी छोटी बातों पर आप अनावश्यक क्रोध का प्रदर्शन करेंगे साथ ही समाज में अन्य जनों से उपकृत होने पर आप उनके उपकार को अल्प मात्रा में ही स्वीकार करेंगे। आप दया एवं करुणा के स्थान पर कठोरता का प्रदर्शन अधिक मात्रा में करेंगे। आप समीपस्थ सम्बन्धियों के प्रिय रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सहानुभूति प्राप्त होती रहेगी।

क्षुधाधिको रूक्षशरीरकान्ति बन्धुप्रियः कोपयुतः कृतधनः।
प्रसूति काले च भवेत्किलार्द्रा दयाद्रचेता न भवेन्मनुष्यः॥
जातकाभरणम्

आपमें चंचलता का भाव प्रबलरूप से विद्यमान रहेगा तथा आप किसी भी कार्य को स्थिर मन से करने में असमर्थ रहेंगे। साथ ही आप एक स्थान पर स्थिर नहीं रहेंगे तथा नित्य परिवर्तन की इच्छा करेंगे। आपके पास धनार्जन भी मध्यम रूप से ही होगा परन्तु शारीरिक बल से आप सर्वदा पूर्ण रहेंगे एवं अपने वाहुबल से समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे। आपकी शिक्षा भी मध्यम ही रहेगी परन्तु आचरण श्रेष्ठ रहेगा।

कृतधनः गर्वितोहीनः नरो पापरतः शठः।
आर्द्रानक्षत्र सम्भूतो धनधान्य विवर्जितः॥
मानसागरी

आपके मन में अभिमान का भाव भी नित्य विद्यमान रहेगा साथ ही आपको अत्यन्त परिश्रम से महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त होंगी। आपका सामान्य जीवन संघर्षमय रहेगा एवं परिश्रम पूर्वक आप जीविकार्जन करेंगे। अन्य लोगों के प्रति आपमें सामान्यतया प्रेम का भाव ही रहेगा अतः सामाजिक जनों से आप सौहार्द अर्जित करने में समर्थ रहेंगे।

शठगर्वितः कृतधनो हिंसः पापश्च रौद्रर्क्षे।
बृहज्जातकम्

राशिफल

Pradeep

मेष राशि में पैदा होने के कारण आप अल्प मात्रा में भोजन करने वाले होंगे। तथा आप अपने अन्य भाई-बहनों में अकेले श्रेष्ठ रहेंगे।

मेषस्थे यदि शीतगौ च लघुभुक् कामी महोत्थाग्रजो ॥

जातकपरिजातः

आपका शरीर ताम्रवर्ण के समान गौरवर्ण का होगा तथा आखें लालिमा युक्त गोलाकार होंगी। आपके सिर पर किसी चोट या घाव का निशान हो सकता है।

सिर पर अल्प केश होंगे तथा हाथ पैर कमल की कान्ति के समान सुन्दर होंगे। जल से आप स्वभाविक रूप से भय करेंगे। धन को आप सम्मान समझेंगे तथा उसे इससे भी अधिक महत्व प्रदान करेंगे। साहस एवं बुद्धि का आपके पास अभाव नहीं होगा जो भी कार्य करेंगे साहस तथा बुद्धिबल से उसे पूर्ण करेंगे। पुत्रों, सहयोगियों तथा मित्रों की आपके पास कभी भी कमी नहीं होगी। ये बड़ी संख्या में आपके साथ हमेशा रहेंगे। स्त्री वर्ग से आप पराजित रहेंगे। आपका व्यवहार अन्य लोगों के प्रति भी स्नेहशील रहेगा। जिससे आप समाज में मान सम्मान तथा आदर प्राप्त करेंगे।

सौववर्णाङ्गः स्थिरस्वः सहजविरहितः साहसी मानभद्रः ।

कामार्तः क्षामजानुः कुनखतनुकचश्चञ्चलो मानवित्तः ॥

पद्माभैः पाणिपादैर्वितत सुतजनो वर्तुलाकारनेत्रः ।

सस्नेहतोयभीरु व्रणविकृतशिराः स्त्रीजितो मेष इन्दौ ॥

सारावली

आप शीघ्र ही नाराज हो जाएंगे परन्तु जल्दी प्रसन्न भी हो जाएंगे यह आपकी स्वाभाविक प्रवृत्ति होगी। आप भ्रमण प्रिय होंगे तथा सैर सपाटा करना आपको अच्छा लगेगा। आपकी हथेली में शौर्य सूचक चिन्ह यथा चक्र पताका आदि हो सकते हैं। आप स्त्रियों के अति प्रिय तथा सम्माननीय होंगे। दूसरे लोगों की सेवा करना तथा उन्हें सहयोग प्रदान करना आप अपना विशिष्ट कर्तव्य समझेंगे चाहे आपकी परिस्थितियां कैसी ही हों इसकी आप चिन्ता नहीं करेंगे।

वृताताम्रदृग्गुणशाकलघुभुक् क्षिप्रप्रसादोदनः ।

कामी दुर्बलजानुरास्थिरधनः शूरोङ्गना बल्लभः ॥

कुनखी व्रणाङ्कितशिरा मानी सहोत्थाग्रजः ।

शक्त्यापणितलेडतोळति चपलस्तोये च भीरुः किये ॥

बृहज्जातकम्

धन को अनावश्यक महत्व प्रदान करना से आपके बुजुर्ग तथा श्रेष्ठ संबंधी असन्तुष्ट होंगे। इसके फलस्वरूप या तो वे आपसे अलग हो सकते हैं या आप खुद उनसे अलग होंगे। आपके घर के सारे

कार्य चूंकि अपनी पत्नी के सलाह से ही सम्पन्न होंगे तथा दूसरे लोगों की राय को कोई महत्व नहीं देंगे। अतः यह भी एक अलगाव का मुख्य कारण बनेगा। धन पुत्र तथा वैभव से आप हमेशा युक्त रहेंगे तथा समाज में अपने वैभव से कीर्ति प्राप्त करेंगे।

स्थिरधनोः रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदा विजितो भवेत् ।
अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक् ॥
जातकाभरणम्

भ्रमण के लिए आप ऐसे स्थान पर जाना पसन्द करते हैं जो अगम्य हो अर्थात् जहां आसानी से नहीं पहुँचा जा सकता हो। सामाजिक संबंध भी आपके विस्तृत होंगे। अतः अवसरानुकूल आप अभक्ष्य पदार्थों अर्थात् मांस, मदिरा आदि का भी भक्षण या सेवन कर सकते हैं।

मेषे त्वगम्यागमनप्रियश्च त्वभक्ष्यभक्षयोः ।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

आपके स्वभाव में कभी कभी उग्रता की झलक भी देखने को मिलेगी। लेकिन जब कभी आप अनावश्यक उग्रता का प्रदर्शन करेंगे आपके लिए समस्याएं उत्पन्न होंगी। आपकी प्रवृत्ति चंचल होगी तथा मौका पड़ने पर आप मिथ्या भाषण भी करेंगे।

वृतेक्षणो दुर्बलजानुरुग्रो भीरुर्जले स्याल्लघुभुक् सुकामी ।
संचारशीलश्चपलोडनृतोक्ति व्रणाङ्किताङ्गः कियमे प्रजातः ॥
फलदीपिका

यौगिक क्रियाएं आपको रुचिकर लगेगी। आपके सिर में अल्प मात्रा में केश होंगे। पित्त या गरमी प्रदान करने वाले प्रदार्थों का परहेज रखें नहीं तो मस्तिष्क विकार का भी योग बनता है। साथ ही शरीर की सुरक्षा का भी पूरा ध्यान रखें।

भवति विकलकेशो योगकर्मानुशीलो ।
न भवति सुसमृद्धो नैव दारिद्र्य युक्तः ॥
व्रजति च सविकारं भूतियुक्तः प्रलापी ।
संभवति पुरुषोळ्यं मेष राशौ ॥

जातक दीपिका

कार्तिक मास, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी तिथियां शुक्ल तथा कृष्ण दोनों पक्षों की, मघा नक्षत्र, रविवार, विष्कुम्भ योग, प्रथम प्रहर तथा मेष राशिस्थ चन्द्रमा यह समय आपके लिए अशुभ है अतः आप 15 अक्टूबर से 14 नवम्बर के मध्य, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी तिथियों तथा मघा नक्षत्र एवं विष्कुम्भ योग में कोई भी शुभ कार्य न करें। इससे लाभ के स्थान पर हानि ही होगी। साथ ही रविवार प्रथम प्रहर तथा मेषराशिस्थ चन्द्रमा में भी कोई शुभ कार्य न करें अनिष्ट ही होगा तथा इन दिनों शरीर की सुरक्षा का भी पूरा ध्यान रखें।

जब समय आपके लिए अनुकूल न लग रहा हो मानसिक तथा शारीरिक विकलता का अहसास हो रहा हो, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान हो रहा हो तो ऐसे समय में आप को अपने इष्ट श्री हनुमान जी की आराधना करनी चाहिए। साथ ही सोना, तांबा, गैहू, गुड़, घी, लाल वस्त्र, रक्त वस्त्र आदि पदार्थों का दान करना चाहिए। तथा साथ ही मंगल के तांत्रिक मंत्र के 7000 जप करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों के प्रभाव में भी न्यूनता आएगी। साथ ही मंगलवार के उपवास करने से भी शुभ फल प्राप्त होंगे।

ॐ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।

मंत्र- ॐ हूं शीं भौमाय नमः।

Priti

आप मिथुन राशि में उत्पन्न हुई हैं अतः आप की आखें अल्प रक्तता लिए श्यामवर्ण की होंगी तथा बाल भी घुंघराले होंगे। आपके शरीर के सभी अंग स्वस्थ पुष्ट एवं सुडौल होंगे तथा नासिका ऊंची होगी। आप विभिन्न शास्त्रों के अध्ययन में रुचि रखेंगी तथा उनका विषय ज्ञान प्राप्त करने में सफल रहेंगी। सन्देश वाहन अथवा दूतिका कार्य को आप कुशलता के साथ निभाएंगी। आप अत्यन्त ही बुद्धिमती होंगी तथा अपनी तीव्र बुद्धि के आधार पर शीघ्र ही अन्य जनों के हृदय की बातों को जानने में सफलता प्राप्त करेंगी। आप अत्यन्त विनयशील तथा सद्ब्यवहार से युक्त होंगी फलतः सभी लोग आपकी प्रशंसा करेंगे। आप मधुर एवं श्रेष्ठ वाणी की स्वामिनी होंगी। आपकी वाणी को सुनकर सभी लोग प्रसन्नता का अनुभव करेंगे। हंसना तथा अन्य लोगों को हंसाना आपकी स्वाभाविक प्रवृत्ति होगी तथा इस कार्य को आप कुशलता पूर्वक पूरा करेंगी। आप संगीत तथा नृत्य में पूर्ण अभिरुचि प्रदर्शित करेंगी तथा नृत्य शास्त्र की आप अच्छी ज्ञाता होंगी।

स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलतामेक्षणः शास्त्राविद्।

दूतः कुत्रिचद् मूर्धजः पटुमति हास्योद्दिगत द्यूतवित्।।

चार्वाङ्गाः प्रियवाक् प्रभक्षण रुचिर्गीतप्रियो नृत्यवित्।

क्लीबैर्याति रतिं समुन्नतश्चन्द्रे तृतीयर्क्षगे।।

बृहज्जातकम्

आपकी हथेली में मछली के आकार का चिन्ह हो सकता है। नसें भी आपकी बाहर दिखाई देंगी। साथ ही शरीर की भी लम्बाई पर्याप्त होगी। आप स्वभाव से ही लेखन प्रतिभा से युक्त रहेंगी तथा काव्य एवं साहित्य के प्रति आपकी पूर्ण अभिरुचि रहेगी। आप समस्त भौतिक सुखों का उपभोग जीवन पर्यन्त करेंगी। लेकिन आप अपने अधिकांश समय विषय वासनाओं के सुखोपभोग करने में व्यतीत करेंगी। साथ ही पति को हमेशा अपने वश में रखेंगी तथा सौभाग्य से आप युक्त रहेंगी।

उन्नासश्यामचक्षु सुरतविधिकला काव्यकृद्भोग भोगी।

हस्ते मत्स्याधिपाङ्को विषय सुखरतो बुद्धिदक्षः सिरालः।।

कान्तः सौभाग्य हास्य प्रियवचनयुतः स्त्रीजितौ व्यायताङ्गो।

याति क्लीबैश्च रतिकर्म संख्यशशिनि मिथुनगे मातृयुग्मप्रपुष्टः ॥

सारावली

आप दीर्घकाल तक जीवित रहेंगे तथा सम्पूर्ण जीवन हास्य प्रिय रहेंगे। आप भ्रमण या यात्रा भी समयानुसार करते रहेंगे। घर के अन्दर रहकर भी आप आनन्दानुभूति करेंगे।

दीर्घायुः सुरतोपचारकुशलो हास्यप्रियो युग्मके ॥

जातकपरिजातः

आपका सामाजिक क्षेत्र विस्तृत रहेगा तथा समाज के सभी वर्गों में आप खूब लोकप्रिय रहेंगे। स्त्रीवर्ग आपसे अत्यन्त आकर्षित रहेगा तथा आप उनमें अत्यन्त प्रिय एवं आदरणीय समझे जाएंगे। आप अपनी सज्जनता तथा योग्यता से सामाजिक सम्मान एवं गौरव को प्राप्त करेंगे।

प्रियकरः करमत्स्ययुतोनरः सुरतसौख्यभरो युवतीप्रियः ।

मिथुन राशि गतौहिम गौ भवेत्सुजनतजनताकृत गौरवः ॥

जातकाभरणम्

आप अपने भाषण या लेखन में श्लिष्टयुक्त भाषा का प्रयोग करेंगे परन्तु अन्यजन स्पष्ट रूप से उनके अर्थ को समझने में सफल रहेंगे। आप अपने बन्धुबान्धवों तथा अन्य सामाजिक लोगों की सेवा तथा सहायता करने में भी सदैव तत्पर रहेंगे। आपकी प्रकृति पित्त तथा कफ से मिश्रित होगी तथा आपका चाल चलन हमेशा उत्तम रहेगा।

मृदुरुपचित्तगात्रः श्लिष्टविस्पष्टवाक्यः ।

परजनहितकर्ता पंडितौ हास्य युक्तः ॥

प्रकृति शुभवरित्रं श्लेष्मचित्त स्वभावो ।

भवति मिथुन जातो गीतवाद्यानुरक्तः ॥

जातक दीपिका

चंचलता का आधिक्य हमेशा आपके नेत्रों में विद्यमान रहेगा। नृत्य एवं संगीत के आप अनन्य प्रेमी होंगे। आप अपने धनैश्वर्य, दयालुता तथा सद्व्यवहार के कारण दूर दूर तक यश को प्राप्त करेंगे। आपकी आकृति दीर्घ होगी तथा भाषण देने की कला में भी चतुर होंगे। आप पक्के निश्चय वाले आदमी होंगे। जिस बात का मन में एकबार संकल्प कर लेंगे उसे पूर्ण करके ही छोड़ेंगे। साथ ही आप न्याय में भी विश्वास करेंगे।

मृदुवाक्यो लोलदृष्टिर्दयालु मैथुनप्रियः ।

गान्धर्ववित् कासरोगी कीर्तिभोगी धनी गुणी ॥

गौरोदीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रतः ।

समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने जनः ॥

मानसागरी

आपके लिए आषाढ़ मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष की तिथियां, स्वाती नक्षत्र, परिघयोग, सोमवार तृतीय प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल देने वाले रहेंगे। अतः आप 15 जून से 14 जुलाई के मध्य 2,7,12 तिथियों, स्वाती नक्षत्र, परिघयोग तथा चतुष्पाद करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, लेन देन या कय विकय आदि कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही सोमवार, तृतीय प्रहर तथा कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इससे भी अशुभ फल ही अधिक होंगे। इन दिनों तथा समय में शरीर की सुरक्षा का भी विशेष ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो व्यापार में हानि, नौकरी या प्रोन्नति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो अथवा मानसिक शान्ति भंग हो रही हो तो ऐसे समय में आपको नियमित रूप से प्रातः तथा सायं काल गणेश जी के दर्शन करने चाहिए। साथ ही पन्ना, हरित वस्त्र, मिश्री, गुड़, घी इत्यादि पदार्थों का भी दान करना चाहिए इससे अनिष्ट फलों में न्यूनता होगी तथा शुभ फलों में बृद्धि होगी। साथ ही आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रिक मंत्र के कम से कम 17000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए।

ॐ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।

मंत्र- ॐ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।

पाया विचार

Pradeep

आप का जन्म रजत पाद में हुआ है। अतः धन सम्पत्ति से आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में आपके पास इसका अभाव नहीं रहेगा। साथ ही समस्त भौतिक सुखसंसाधनों को आप प्राप्त करेंगे एवं सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा दानशीलता की प्रवृत्ति भी आपके मन में नित्य विद्यमान रहेगी। साथ ही सहनशीलता के भाव से भी आप युक्त रहेंगे। आप अपने सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में प्रायः सफलता ही अर्जित करेंगे। आप की शारीरिक कान्ति दर्शनीय रहेगी तथा मुखकृति सुन्दर एवं आकर्षक होगी। समाज में आप एक आदरणीय एवं श्रद्धेय पुरुष समझे जाएंगे। आप विस्तृत परिवार के भी स्वामी होंगे। अपने सम्भाषण में आप नित्य प्रिय एवं मधुर वाणी का उपयोग करेंगे तथा सभी प्रकार के सांसारिक सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। विद्याध्ययन में आप रुचिशील रहेंगे तथा एक विद्वान के रूप में भी आप ख्याति प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही आप अल्प मात्रा में बोलना पसन्द करेंगे।

Priti

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आप जीवन में सपरिवार धन सम्पत्ति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी। पुराणादि शास्त्रों के श्रवण करने के लिए भी आप नित्य तत्पर एवं उत्सुक रहेंगी। आपके सभी कार्य पुण्य के लिए समर्पित रहेंगे तथा तीर्थयात्रा करने के लिए भी सदैव यत्नशील एवं उद्यत रहेंगी। आप समस्त भौतिक सुखसंसाधनों एवं ऐश्वर्य से सम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग भी करेंगी। साहित्य या काव्यशास्त्रादि के प्रति भी आपका आकर्षण रहेगा एवं समयानुसार आप इनका अध्ययन भी करेंगी। आप बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं से भी सुसम्पन्न रहेंगी। आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य प्रथम प्रयत्न में ही सफल हो जाया करेंगे। बन्धुवर्ग से आपका विशेष स्नेह का भाव रहेगा एवं उनसे नित्य सहयोग एवं सहायता प्राप्त करती रहेंगी। आप एक सौभाग्यशाली महिला भी होंगी एवं धार्मिक तथा देव पितृ संबंधी कार्यों में नित्य निष्ठावान होंगी। इसके अतिरिक्त आप हमेशा सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगी एवं गुणवान पुत्रों से प्रसन्नता प्राप्त करेंगी।

गण फलादेश

Pradeep

आपका जन्म मनुष्य गण में हुआ है। अतः आप धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे। ब्राहमणों तथा देवताओं की आप श्रद्धापूर्वक सेवा करेंगे। अभिमान भी आपके स्वभाव में रहेगा। धन की आपके पास कमी नहीं रहेगी। दया का भाव आपके अन्तःकरण में विद्यमान रहेगा तथा दीन दुःखियों के प्रति आप विशेष रूप से दयालु रहेंगे। आप शरीर से वलिष्ठ रहेंगे। आप कई कलाओं या कार्यों में निपुण हो सकते हैं। ज्ञानार्जन में आपकी गहन रुचि होगी। शरीर आपका कान्तियुक्त रहेगा तथा आपके द्वारा कई लोगों को सुख प्राप्त होगा।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानि दयालुर्बलवान कलाज्ञः।

प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः॥

जातकाभरणम्

मान सम्मान से आप हमेशा परिपूर्ण रहेंगे तथा आजीवन विपुल धन के स्वामी बने रहेंगे। आखें आपकी बड़ी बड़ी होंगी तथा निशानेबाजी में सिद्धहस्त होंगे। शरीर का वर्ण गौरवर्ण होगा तथा नगरवासियों को आप वश में करने वाले होंगे। आप नगर के सम्माननीय नेता या अधिकारी भी हो सकते हैं।

धनीमानी विशालाक्षो लक्ष्यभेदी धनुर्धरः।

गौरः पौरजन ग्राही जायते मानवे गणे॥

मानसागरी

Priti

आप मनुष्य गण में पैदा हुई हैं। अतः धार्मिक प्रवृत्ति स्वभाव से ही आपके मन में व्याप्त रहेगी। देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके हृदय में अगाध श्रद्धा होगी तथा यथा शक्ति आप इनका पूजन तथा सत्कार करती रहेंगी। आप अहंकार के भाव से भी युक्त रहेंगी तथा यदा कदा इसका प्रदर्शन करेंगी। आपके मन में दीन दुःखियों के प्रति दया का भाव रहेगा तथा यत्न पूर्वक आप इनकी सेवा तथा सहायता करती रहेगी। आप पूर्ण रूप से शक्तिशाली होंगी तथा एक से अधिक कार्यों या कलाओं में निपुण रहेंगी। आपका शरीर सुकान्तिमय सुन्दर तथा स्वस्थ रहेगा एवं आपके द्वारा बहुत से लोग सुख का अनुभव करेंगे। आप ज्ञानार्जन भी करेंगी तथा ज्ञानी कहलाएंगी।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानि दयालुर्बलवान कलाज्ञः।

प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः॥

जातकाभरणम्

आपको अपने जीवन में कभी भी मान सम्मान तथा सुख संसाधनों का अभाव नहीं रहेगा। आप निशाने बाजी की कला में निपुण होंगी। आप गौर वर्ण की सुन्दर महिला होंगी तथा नगरवासियों को वश में करने में समर्थ रहेंगी अथवा आप किसी नगर की सम्माननीय महिला भी हो सकती हैं। आपके नेत्र भी विशालाकृति के होंगे।

धनीमानी विशालाक्षो लक्ष्यभेदी धनुर्धरः ।
गौरः पौरजन ग्राही जायते मानवे गणे ॥
मानसागरी



योनी फलादेश

Pradeep

गजयोनि में जन्म लेने के कारण आप राजा के प्रिय होंगे अर्थात् बड़े बड़े मंत्रियों तथा अधिकाारियों से आपके मित्रतापूर्ण संबंध होंगे तथा वे सब आपका सम्मान करेंगे। आप आत्मबल, बाहुबल तथा बुद्धिबल से सुशोभित रहेंगे तथा अपने सारे कार्य आप अपने ही बल पर सुसम्पन्न करेंगे। समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखों का आप उपभोग करेंगे। आप किसी मंत्री या उच्चाधिकारी के सहयोगी या खुद भी उच्चाधिकारी हो सकते हैं। आपकी प्रवृत्ति उत्साही रहेगी तथा इसी प्रवृत्ति से आप उन्नत शिखर पर पहुँचेंगे।

राजमान्यो बली भोगी भूपस्थान विभूषणः।

आत्मोत्साही नरो जातः गजयोनौ न संशयः॥

मानसागरी

Priti

श्वान योनि में उत्पन्न होने के कारण आप हमेशा उद्यमी एवं परिश्रमी होंगी। मन में आप हमेशा उत्साह से परिपूर्ण रहेंगी तथा सोत्साह कार्यो को सम्पन्न करेंगी। आप हिम्मतवाली महिला होंगी तथा बिना किसी भय के सर्वकार्यों को पूर्ण करेंगी। रक्तसंबंधियों से आपका आपसी वैमनस्य रहेगा तथा उनसे वाद-विवाद भी होता रहेगा। लेकिन माता पिता के आप अनन्य भक्त होंगी तथा निष्कपट भाव से उनकी पूर्ण रूप से सेवा करेंगी तथा उनका स्नेह प्राप्त करेंगी।

सोद्यमः सुमहोत्साही शूरः स्वज्ञाति विग्रही।

मातृपित्रो सदाभक्तः श्वानयोनौसमुद्भवः॥

मानसागरी

ग्रह फल - सूर्य

Pradeep

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

कुम्भ राशि में रवि हो तो जातक स्थिरचित्त, स्वार्थी, कार्यदक्ष, क्रोधी, दुःखी, निर्धन, अच्छा ज्योतिषी एवं मध्य अवस्था के पश्चात् सन्यास लेने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

Priti

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

कन्या राशि में रवि हो तो जातक लेखन कुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवकवादी, साहित्य और कविता में रुचि, भाषाविद् -बुद्धिमान, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही उनकी प्रवृत्ति पुण्य एवं दान संबंधी कार्यों को करने की रहेगी अतः आपको भी वे पुण्य कार्यों की ओर प्रेरित करेंगे। साथ ही धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे। आपकी भी उनके प्रति पूर्ण आदर की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव उत्पन्न होगा परन्तु कुछ समय के बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। जीवन में आप उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगी एवं समयानुसार उनको पूर्ण सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कोई कष्ट नहीं होने देंगी।

ग्रह फल - चन्द्र

Pradeep

द्वितीयभाव में चन्द्रमा हो तो जातक परदेशवासी, भोगी, सुन्दर मधुरभाषी, भाग्यवान्, सहनशील एवं शान्तिप्रिय होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरु, यात्रा करने का शौकीन, आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं कोई विशेष शारीरिक रूग्णता नहीं रहेगी। वे आपको हमेशा धनार्जन एवं विद्याध्ययन संबंधी कार्यों में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आपकी पारिवारिक उन्नति एवं पालन करने में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी यदा कदा वे आपको नैतिक शिक्षा भी देंगी तथा आपके प्रति उनके हृदय में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। इसके साथ ही जीवन में कई महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि आप उनके सहयोग से ही करेंगे।

आप की भी माता के प्रति हादिक श्रद्धा रहेगी एवं उनकी आज्ञा पालन करने में आप गौरव की अनुभूति करेंगे। साथ ही जीवन में सर्वप्रकार से उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते रहेंगे। अतः आपकी परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं जीवन में एक दूसरे की सहायता एवं सहयोग का आदान प्रदान करके सुखानुभूति करेंगे।

Priti

नवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, विद्याप्रिय, चंचल, न्यायी, प्रवास-प्रिय, कार्यशील, धर्मात्मा, सन्तति-सम्पत्तियुक्त सुखी, साहसी एवं अल्पभातृवान् होता है।

मिथुन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, अध्ययनशील, सुन्दर, रतिकुशल, भोगी, मर्मज्ञ, नेत्र चिकित्सक, अच्छा वक्ता एवं अच्छा अन्तर्ज्ञान वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में स्थित है। अतः आपकी माता जी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी दीर्घ रहेंगी। माता की आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी तथा जीवन में उनसे पूर्ण सहयोग तथा सुख संसाधनों को प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगी तथा आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य सहायता को देने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं सम्मान पूर्वक उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आप आजीवन उनकी सुख सुविधा के लिए भी प्रयत्नशील रहेंगी। आप एक दूसरे से हमेशा सहमत रहेंगी एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। अतः आपके परस्पर संबंध मधुरता से युक्त रहेंगे इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए शुभ रहेंगी।

ग्रह फल - मंगल

Pradeep

द्वितीय भाव में मंगल हो तो जातक कटुभाषी, नेत्रकर्ण रोगी, कटुतिक्त रसप्रिय, धर्मप्रेमी, चोर से भक्ति, कुटुम्ब क्लेश वाला, पशुपालक, निर्बुद्धि एवं निर्धन होता है।

मेष राशि में मंगल हो तो जातक सत्यवक्ता, तेजस्वी, शूरवीर, नेता, साहसी, धनवान्, लोकमान्य, दानी एवं राजमान्य होता है।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

Priti

आठवें भाव में मंगल हो तो जातक व्याधिस्त, व्यसनी, मद्यपायी, कठोरभाषी, उन्मत्त, नेत्ररोगी, शस्त्रचोर, संकोची, अग्निभीरु, धनचिन्ता युक्त एवं रक्तविकारयुक्त होता है।

वृष राशि में मंगल हो तो जातक अत्यन्त कामुक, अनैतिक आचरण, पुत्रद्वेषी, प्रवासी, सुखहीन, लड़ाकू प्रकृति, वंचक, सिद्धान्त रहित, स्वार्थी एवं क्रूर होता है।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे अस्वस्थ रहेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। जीवन में आप समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उन से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग अर्जित करती रहेंगी। धन धान्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा अतः यदा कदा विशिष्ट धन की प्राप्ति आप उनसे कर सकेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह भाव रखेंगी एवं अवसरानुकूल सुख दुःख में उनको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध भी ठीक ही रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धांतिक मतभेदों के कारण इनमें तनाव तथा कटुता की स्थिति भी उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनका सहयोग करने के लिए करने के लिए उद्यत रहेंगी।

ग्रह फल - बुध

Pradeep

बारहवें भाव में बुध हो तो जातक अल्पभाषी, विद्वान्, आलसी धर्मात्मा, वकील, सुन्दर, वेदान्ती, लेखक, दानी एवं शास्त्रज्ञ होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

Priti

बारहवें भाव में बुध हो तो जातक अल्पभाषी, विद्वान्, आलसी धर्मात्मा, वकील, सुन्दर, वेदान्ती, लेखक, दानी एवं शास्त्रज्ञ होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

ग्रह फल - गुरु

Pradeep

लग्न (प्रथम) में गुरु हो तो जातक विद्वान् दीर्घायु, ज्योतिषी कार्यपरायण, लोकसेवक, तेजस्वी, प्रतिष्ठित, स्पष्टवक्ता, स्वाभिमानी, सुन्दर, सुखी, विनीत, पुत्रवान् धनवान्, राज्यमान, सुन्दर एवं धर्मात्मा होता है।

मीन राशि में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहार कुशल, दयालु, साहित्य प्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

Priti

दशमभाव में गुरु हो तो जातक सुकर्म करने वाला, प्रसिद्ध और सम्मानित प्रतिष्ठित पद पर आसीन, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राजमान्य, स्वतन्त्र विचारक, मातृपितृ भक्त, लाभवान्, धनी एवं भाग्यवान् होता है।

कर्क राशि में गुरु हो तो जातक सदाचारी, विद्वान्, सत्यवक्ता महायशस्वी, साम्यवादी, सुधारक, योगी, लोकमान्य, सुखी, धनी, नेता, कुशाबुद्धि एवं वफादार होता है।

ग्रह फल - शुक्र

Pradeep

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, घ्यरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

Priti

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

कन्या राशि में शुक्र हो तो जातक, सुखी, भोगी, अतिकामी, सभापण्डित, रोगी, वीर्यहीन, सट्टे द्वारा धननाशक एवं अवैध सम्बन्ध रखने वाला होता है।

ग्रह फल - शनि

Pradeep

नवम भाव में शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरघ्दय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, क्रोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

Priti

तृतीय भाव में शनि हो तो जातक नीरोगी, विद्वान् योगी, मल्ल, शीघ्रकार्यकर्ता, सभाचतुर, चंचल, भाग्यवान्, शत्रुहन्ता, एवं विवेकी होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

ग्रह फल - राहु

Pradeep

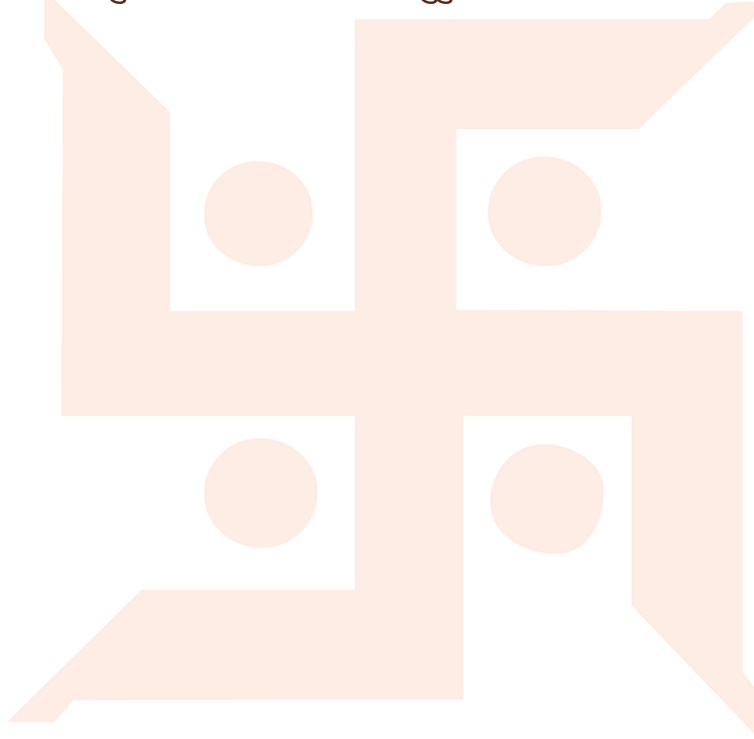
लग्न (प्रथम) में राहु हो तो जातक कामी, दुर्बल, मनस्वी, अल्पसन्तति युक्त, राजद्वेषी, नीचकर्मरत दुष्ट, स्तकरोगी, स्वार्थी एवं बात-बात पर सन्देह करने वाला होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

Priti

चतुर्थभाव में राहु हो तो जातक असन्तोषी, दुखी, अल्पभाषी, मिथ्याचारी, उदरव्याधियुक्त, कपटी, मातृक्लेशयुक्त एवं क्रूर होता है।

मकर राशि में राहु हो तो जातक मितव्ययी, कुटुम्बहीन एव दाँत रोगी होता है।



ग्रह फल - केतु

Pradeep

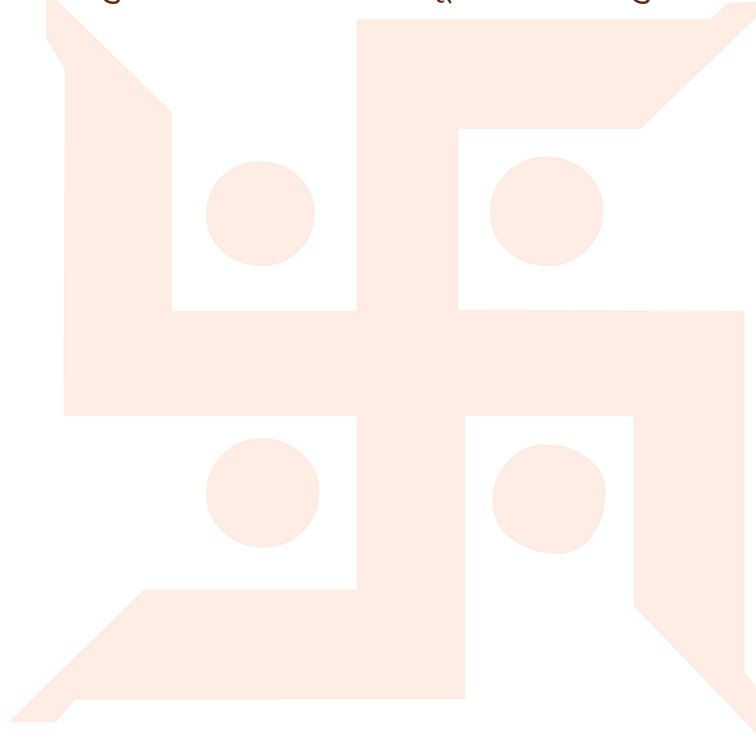
सप्तम भाव में केतु हो तो जातक मतिमन्द, मूर्ख, दुखद विवाहित जीवन, पति-पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद, शत्रुभीरु एवं सुखहीन होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

Priti

दशम भाव में केतु हो तो जातक अभिमानी, परिश्रमशील मूर्ख, पितृद्वेषी, दुर्भागी, संन्यास लेना एवं योगी होता है।

कर्क राशि में केतु हो तो जातक वातविकारी, भूतप्रेत पीड़ित एवं दुःखी होता है।



शारीरिक गठन, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

Pradeep

आपके जन्म समय में लग्न में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। सामान्यतया मीन लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एवं दर्शनीय होते हैं तथा सरलता एवं समानता का इनको प्रतीक माना जाता है। इनके मुख मंडल पर सौम्यता की छाप हमेशा विद्यमान रहती है। ये विद्वान एवं बुद्धिमान होते हैं तथा नवीन विचारों का सृजन करने में समर्थ रहते हैं। इनके विचारों से सामाजिक लोग प्रभावित तथा आकर्षित रहते हैं। भौतिक सुख संसाधनों का उपभोग करने की इनकी प्रबल इच्छा रहती है तथा इससे इन्हें प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त धनैश्वर्य से ये युक्त रहते हैं एवं विभिन्न स्रोतों से धनार्जन करने आर्थिक रूप से सुदृढ़ रहते हैं। साथ ही चिन्तन एवं मननशीलता का भाव भी इनमें रहता है।

प्राकृतिक द्रश्यों का अवलोकन करके इनको शांति एवं सन्तुष्टि की प्राप्ति होती है। प्रेम के क्षेत्र में ये सरल एवं भावुक रहते हैं परन्तु व्यवहार कुशल होते हैं। अतः सांसारिक कार्यों में उचित सफलता अर्जित करके अपने उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहते हैं। इसके अतिरिक्त नवीन वस्तुओं के उत्पादन आदि में इनकी रुचि रहती है तथा इस क्षेत्र में इनका प्रमुख योगदान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान रहेंगे तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा जिससे अन्य जन आपसे प्रभावित होंगे। आपकी बुद्धि अत्यंत ही तीक्ष्ण रहेगी अतः विभिन्न शास्त्रीय विषयों का ज्ञानार्जन करके आप एक विद्वान के रूप में समाज में अपनी प्रतिष्ठा एवं आदर बढ़ाने में समर्थ होंगे। एक विचारक के रूप में भी आप सम्मानीय होंगे। यद्यपि ब्रह्मादि के विषय में चिन्तनशील रहेंगे परन्तु भौतिकता के प्रति भी आकर्षण रहेगा।

लग्न में लग्नेश बृहस्पति की राशि के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी शांति तथा सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। आपका स्वरूप दर्शनीय एवं व्यक्तित्व आकर्षक होगा फलतः अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे। लेखन के प्रति आपकी रुचि होगी तथा इस क्षेत्र में आप आदर एवं प्रतिष्ठा भी अर्जित कर सकते हैं। अभिमान के भाव की आप में अल्पता होगी तथा सबके साथ विनम्रता का व्यवहार करेंगे। आप सरकार या समाज में सम्मान प्राप्त करने में सफल होंगे। आप में दयालुता का भाव भी विद्यमान होगा तथा अवसरानुकूल अन्य जनों की सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त साहित्य एवं कला के प्रति भी आपकी अभिरुचि रहेगी।

पिता के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव होगा तथा उनकी सेवा करने में तत्पर होंगे। बाल्यावस्था में आपको संघर्ष करना पड़ेगा परन्तु युवावस्था के बाद आप सुखैश्वर्य एवं धन वैभव तथा भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करके सुख एवं शांति पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे। पुत्र संतति से आप युक्त रहेंगे तथा इनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा होगी तथा समय समय पर धार्मिक कार्य कलापों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगे। इससे आपको आत्मिक शांति की प्राप्ति होगी। साथ ही बन्धु एवं मित्र वर्ग में

भी आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा इनसे आपको इच्छित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा। इस प्रकार आप धनैश्वर्य से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने में सफल होंगे।

Priti

आपके जन्म समय में लग्न में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक है। सामान्यतया तुला लग्न में उत्पन्न जातक सुन्दर स्वस्थ एवं दर्शनीय होते हैं तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है जिससे अन्य लोग उनसे प्रभावित रहते हैं। इनकी प्रवृत्ति हास्य प्रिय होती है तथा बच्चों के प्रति इनके मन में प्रबल स्नेह का भाव विद्यमान रहता है। सुन्दर दृश्यों एवं वस्तुओं के प्रति भी इनमें आकर्षण रहता है। स्वभाविक रूप से ये अन्य जनों को किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं देते हैं तथा सबके साथ समानता का व्यवहार करते हैं जिससे समाज में ये सम्मानित प्रतिष्ठित तथा प्रसिद्ध रहते हैं। कला के प्रति इनका भावनात्मक लगाव रहता है तथा अच्छे कार्यों से ये अपनी आजीविका अर्जित करते हैं। नीति ज्ञान में ये चतुर होते हैं अतः राजनीति के क्षेत्र में इनको नेतृत्व प्राप्त हो जाता है परन्तु इनका कोई निश्चित सिद्धांत नहीं होता तथा समयानुसार ये परिवर्तन करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक सौष्ठव एवं व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगी। आपके प्रवृत्ति हास्यप्रिय होगी तथा गम्भीरता आपको विशेष अच्छी नहीं लगेगी। बच्चों के प्रति आपके मन में स्नेह का भाव रहेगा तथा प्राकृतिक दृश्यों के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा। साथ ही कला से आपका भावनात्मक सम्बन्ध रहेगा।

आप सभी लोगों से समानता का व्यवहार करेंगी तथा आपके मन में किसी भी प्रकार का भेद भाव नहीं रहेगा अपने कार्यक्षेत्र में आपका प्रभाव रहेगा तथा आपके अधिकारी एवं सहयोगी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आप किसी नवीन सिद्धांत या ग्रन्थ आदि की भी रचना कर सकते हैं जिससे आपको यश की प्राप्ति होगी।

लग्न में लग्नेश शुक की राशि के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक शांति एवं सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा बुद्धिमता से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगी तथा इनमें आपको इच्छित सफलताएं भी मिलती रहेंगी। आपके प्रवृत्ति विलासी होगी तथा भौतिकता के प्रति अत्यधिक आकर्षण रहेगा जिससे आपकी प्रवृत्ति काफी व्ययशील होगी। आपके प्रवृत्ति भ्रमण प्रिय होगी तथा यात्रा आदि भी समय समय पर सम्पन्न करती रहेंगी। कला एवं संगीत में आप निपुण होंगी तथा कार्य करने में अत्यंत ही दक्ष होंगी।

आप में सहनशीलता का भाव विद्यमान होगा तथा धैर्यपूर्वक कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता की प्रतीक्षा करने में समर्थ होंगी। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आपको समय समय पर धनार्जन होता रहेगा। आप में शारीरिक बल की भी प्रचुरता रहेगी फलतः परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करके आप जीवन में मनोवांछित सफलताओं को अर्जित करेंगी जिससे समाज में आपका प्रभाव रहेगा तथा सभी लोग आपका आदर करेंगे। साथ ही यश भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगा।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा अवसरानुकूल आप धार्मिक कृत्यों को नियमपूर्वक सम्पन्न करेंगी। जिससे आपको मानसिक शांति की अनुभूति होगी। मित्र वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगी तथा उनसे आपको वांछित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा।



धन, परिवार, आंख एवं वाणी

Pradeep

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप भावनात्मक रूप से परिवार से जुड़े रहेंगे तथा उनके प्रति पूर्ण चिन्तित रहेंगे। साथ ही उनकी खुशहाली एवं प्रसन्नता के लिए यत्नपूर्वक संसाधनों को अर्जित करेंगे परन्तु यदाकदा अपनी कोई व्यक्तिगत इच्छा को आप पारिवारिक सुख से श्रेष्ठ समझेंगे तथा पहले अपनी ही इच्छा को पूर्ण करेंगे। घर की सुन्दरता एवं आकर्षण के प्रति आप हमेशा सजग रहेंगे तथा यत्न पूर्वक घर का आकर्षक रूप बनाए रखने के लिए तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा आपके मित्र भी गुणवान तथा शिक्षित होंगे।

विभिन्न प्रकार के स्वादों का आस्वादन करने के आप इच्छुक रहेंगे। साथ ही मिष्ठान एवं नमकीन के प्रति विशेष रुचि रहेगी। सामान्यतया आप सुन्दर एवं सुस्वादु एवं पौष्टिक भोजन ही करेंगे। धन के प्रति आपके मन में लालसा रहेगी तथा परिश्रम एवं यत्नपूर्वक धनार्जन करते रहेंगे। साथ ही कीमती आभूषणों या धातुओं को भी प्राप्त कर सकते हैं। आपकी वाणी भी ओजास्विता के भाव से युक्त रहेगी लेकिन यदा कदा मधुरता की न्यूनता होगी। आप घर में समय समय पर धार्मिक कार्य कलाप या अन्य प्रकार के उत्सवों का आयोजन करते रहेंगे। साथ ही आप किसी उत्सव के आयोजन को हाथ से नहीं जाने देंगे तथा अवश्य उसमें भाग लेंगे। इसके अतिरिक्त नीति के आप ज्ञाता होंगे तथा घर वाहन तथा पुत्रों से युक्त होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

Priti

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में वृश्चिक राशि उदित हुई है जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में स्व प्रयत्न एवं परिश्रम से धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही पैतृक सम्पत्ति भी आपको अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगी परन्तु बहुमूल्य रत्न एवं धातुओं को अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। आप भूमि या जायदाद संबंधी कय विकय या संबंधित कार्यों से भी लाभ अर्जित कर सकती हैं। साथ ही कृषि या बागवानी संबंधी कार्यों में भी आपकी रुचि रहेगी। आप एक महत्वाकांक्षी महिला होंगी तथा जीवन में परिवार के सहयोग से इच्छित उन्नति एवं सम्मान अर्जित करने में समर्थ रहेंगी लेकिन विषम परिस्थितियों का सामना करने में आप स्वयं असमर्थ समझेंगी।

पारिवारिक जनों की प्रसन्नता तथा सुविधा के लिए सुख संसाधनों के लिए आप सतत प्रयत्नशील रहेंगी। साथ ही उनकी सन्तुष्टि के लिए अधिक मात्रा में व्यय भी करेंगी। आपकी वाणी प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी तर्क पूर्ण बातों से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगी तथा अधिकांश लोग आपसे सहमत भी रहेंगे। मिष्ठान की आप प्रिय रहेंगी तथा रुचि पूर्वक इसका भक्षण करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी परन्तु प्रौढ़ावस्था में आप नेत्र संबंधी कष्ट प्राप्त कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त धार्मिक परंपराओं का आप पूर्ण पालन करेंगी तथा शुभ एवं मंगल कार्यों को समय समय पर सम्पन्न करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त सज्जन लोगों के प्रति आपके मन में हमेशा आदर का भाव बना रहेगा।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन, लघुयात्राएं

Pradeep

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक है। इसके प्रभाव से आप सतर्क, सक्रिय तथा बौद्धिक प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा आपकी स्मरण शक्ति भी उत्तम रहेगी एवं आसानी से किसी वस्तु को भूल नहीं पाएंगे। भाई बहिनों के सुख एवं सहयोग को प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही वे भी साहसी एवं परोपकारी होंगे एवं आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। वे महत्वाकांक्षी भी होंगे तथा आपके पूर्ण विश्वास पात्र तथा आज्ञाकारी रहेंगे। पारिवारिक शान्ति एवं परस्पर सौहार्द के भाव को रखने के लिए समय समय पर आप एक दूसरे की गलतियों की उपेक्षा करेंगे जिससे तनाव एवं मतभेदों में न्यूनता रहेगी।

आप नेतृत्व के गुणों से सम्पन्न रहेंगे तथा समाज में सभी लोग आपकी संगठन शक्ति से प्रभावित होंगे तथा आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आप स्वच्छन्द प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा दार्शनिक स्वभाव ईमानदार तथा स्पष्टवादिता आपके प्रमुख गुण रहेंगे। अतः इनके प्रभाव से आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा समाज में प्रभावशाली पद को अर्जित करेंगे। आधुनिक संचार सुविधाओं का भी आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। जैसे टेलीफोन टेलीविजन वाहन या अन्य साधन आपको सर्वदा उपलब्ध रहेंगे। संगीत एवं कला के प्रति आपका विशेष लगाव रहेगा तथा समय समय पर आप इनसे मनोरंजन करके मानसिक सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। जीवन में दूर समीप की यात्राओं से आप लाभ एवं ख्याति अर्जित करेंगे तथा यात्रा के मध्य आपके कई मित्र भी बनेंगे। ज्ञानवर्द्धक पुस्तकों के अध्ययन में भी आपकी रुचि रहेगी इसके अतिरिक्त आप उच्चाधिकारी वर्ग के मित्र, प्रतापी, आतिथ्य सत्कार करने वाले, दानी यशस्वी विद्वान तथा अच्छे विचारों से सर्वदा युक्त रहेंगे।

Priti

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति उत्तम रहेगी तथा दीर्घ काल तक स्मृति बनी रहेगी जिससे सामाजिक तथा अन्य क्षेत्र में आपको शीघ्र ही सफलता प्राप्त होगी। भाई बहिनों से भी आप युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको उनका पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा आप भी उनकी सुख सुविधाओं के प्रति चिंतित रहेंगी तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी। वे सभी आज्ञाकारी कर्तव्य परायण तथा विश्वास पात्र रहेंगे अतः उनकी गलतियों की भी आप उपेक्षा करेंगी। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा अपने सिद्धांतों पर दृढ़ रहेंगी चाहे इससे कोई परेशानी या समस्याएं क्यों न उत्पन्न हो। साथ ही स्पष्टवादिता का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा।

आप एक साहसी तथा पराकामी महिला होंगी तथा नेतृत्व के गुण भी आप में विद्यमान रहेंगे। आप किसी भी मनुष्य या वस्तु के गुणावगुणों को परखकर उसके बारे में अपनी राय प्रदान करेंगी। आप सद्विचारों की महिला होंगी तथा धर्म के प्रति आपके मन में आस्था रहेगी। आधुनिक संचार साधनों से भी आप युक्त रहेंगी तथा सुख पूर्वक इसका उपभोग करेंगी। इसमें टेलीफोन टेलीविजन या वाहन आदि की प्रमु

खता रहेगी। संगीत एवं हस्त कला के प्रति भी आपकी रुचि रहेगी तथा यदा कदा इससे भी अपना मनोरंजन करेंगी। आपके लिए समीपस्थ स्थानों की यात्राएं लाभदायक एवं ख्याति प्रदान करने वाली होंगी। साथ ही आपकी अध्ययन में रुचि होगी तथा धार्मिक ग्रन्थ वैज्ञानिक या साहित्यिक पुस्तकों का आप अध्ययन करेंगी। इसके अतिरिक्त आप किसी संस्था की पदाधिकारी या उच्चाधिकारी होंगी तथा दीन दुःखियों के प्रति दयालु रहेंगी जिससे समाज में आदरणीया समझी जाएंगी।



माता, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, जायदाद एवं शिक्षा

Pradeep

आपके जन्म समय में चतुर्थभाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको समस्त सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक एवं भौतिक उपकरणों से भी युक्त रहेंगे तथा आनन्दपूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आप एक वैभव तथा ऐश्वर्य शाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में आपका उच्च स्तर बना रहेगा।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। आपको किसी श्रेष्ठ एवं वृद्ध व्यक्ति की भी चल अथवा अचल सम्पत्ति मिलेगी। इससे आपके ऐश्वर्य एवं वैभव में वृद्धि होगी तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। आप अपनी योग्यता एवं बुद्धिमता से भी धन एवं सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त आपको अचल की अपेक्षा चल सम्पत्ति से विशेष लाभ होगा। अतः वांछित लाभ अर्जित करने के लिए आप चल सम्पत्ति पर निवेश कर सकते हैं।

जीवन में आपको उत्तम आवास की प्राप्ति होगी। आपका घर विशाल, सुन्दर एवं आकर्षक होगा तथा आधुनिक सुख सुविधाओं से परिपूर्ण होगा। यह भौतिक उपकरणों से भी सुसज्जित रहेगा। घर की सुन्दरता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसियों से संबंधों में मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तमवाहन से भी आप युक्त होंगे तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी सुन्दर, सुशील, बुद्धिमान एवं शिक्षित महिला होंगी तथा उनका स्वभाव भी सरल होगा। कर्तव्यपरायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा तथा अपनी व्यवहार कुशलता से वे परिवार की सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि करेंगी। सभी पारिवारिक जन उनको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव होगा तथा अवसरानुकूल आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी चहुंमुखी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान होगा। आप भी उनके प्रति श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के पूर्ण शुभचिन्तक होंगे तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी पूर्ण रुचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंक प्राप्त करके सफलताएं अर्जित करेंगे। आप स्नातक परीक्षा अच्छे अंको से उत्तीर्ण करेंगे। इससे आपके उज्ज्वल भविष्य के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा मन में आत्मविश्वास के भाव में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी व्यावसायिक पाठ्यक्रम में उच्चशिक्षा या डिग्री भी अर्जित कर सकते हैं।

Priti

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों को प्राप्त करने में समर्थ होंगी। आपको आधुनिक सुख-संसाधनों की भी प्राप्ति होगी जिसका सुखपूर्वक उपभोग करेंगी। आप एक समृद्ध एवं वैभवशाली महिला होंगी तथा समाज में आदरणीय महिला मानी जाएंगी।

आप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा चल एवं अचल सम्पत्ति से युक्त होकर उसके स्वामित्व को प्राप्त करेंगी। विवाह के बाद पति के प्रभाव या सहयोग से भी आपको वांछित चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। इससे आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आपको समय समय पर धन सम्पत्ति की प्राप्ति होती रहेगी। आप चल एवं अचल दोनों प्रकार की सम्पत्ति से युक्त होंगी। अतः इन पर आप इच्छित निवेश कर सकती है।

जीवन में आपको उत्तम घर की प्राप्ति होगी तथा यह विस्तृत क्षेत्र में होगा तथा आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं उपकरणों से सुसज्जित रहेगा। आप भी व्यक्तिगत रूप से इसके आकर्षण एवं सुन्दरता बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील होंगी। आपका घर किसी समृद्ध कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तम वाहन से भी आप युक्त होंगी तथा इनकी संख्या एक से अधिक भी हो सकती है।

आपकी माताजी सुन्दर, शिक्षित, बुद्धिमान एवं आधुनिक विचारों की महिला होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। वह एक व्यवहार कुशल महिला होंगी तथा पारिवारिक सदस्यों का ध्यान से लालन पालन करेंगी जिससे सभी लोग उनको वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आपकी उन्नति में भी उनका मुख्य योगदान होगा। आप भी उनके प्रति श्रद्धा एवं आज्ञाकारिता का भाव रखेंगी तथा सुख-दुःख में उन्हें अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी इससे आपसी संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन में आपकी प्रारंभ से ही रुचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आप छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंक लेकर परीक्षाएं उत्तीर्ण करेंगी। स्नातक परीक्षा भी आप संतोषजनक रूप से उत्तीर्ण करेंगी। इससे आपके मन में उत्साह के भाव में वृद्धि होगी तथा भविष्य में भी उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए स्वयं को तैयार करेंगी। स्वजनों एवं संबंधियों से भी आप वांछित आदर, स्नेह एवं प्रोत्साहन प्राप्त करेंगी।

बुद्धि, सन्तान एवं प्रणय सम्बन्ध

Pradeep

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है अतः इसके शुभ प्रभाव से आप तीव्र एवं निर्मल बुद्धि के स्वामी होंगे तथा आपके कार्य कलापों पर स्पष्ट रूप से बुद्धिमता की छाप विद्यमान होगी जिससे अन्य सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित होंगे। आप में शीघ्र एवं सटीक निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी जिससे आप समय समय पर लाभान्वित होते रहेंगे। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी अपनी तीव्र बुद्धि से शीघ्र ही करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्मशास्त्र में आपकी पूर्ण रुचि होगी तथा इनका अध्ययन करके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त आधुनिक विज्ञान राजनीति, गणित एवं ज्योतिष शास्त्र के भी आप ज्ञाता होंगे जिससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

पंचम भाव में कर्क राशि के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी रुचि होगी परन्तु आपका प्रेम उच्चादर्शों से युक्त होगा तथा उसमें मर्यादा, नैतिकता एवं यथार्थवादी भाव विद्यमान होगा। इसमें भावनात्मक आकर्षण की भी प्रबलता होगी। अतः आपके प्रेम-प्रसंग की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है। इससे आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय होगा तथा प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्रों की संख्या अधिक होगी। आपकी संतति बुद्धिमान, गुणवान, प्रतिभाशाली एवं परिश्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करके सम्मान जनक स्तर प्राप्त करने में समर्थ होंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञा का पालन करना वे अपना परम कर्तव्य समझेंगे। वे माता-पिता की सलाह एवं सहयोग से ही शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इससे परस्पर सदभाव एवं विश्वास की भावना बनी रहेगी। माता की अपेक्षा पिता के प्रति बच्चों के मन में विशिष्ट लगाव होगा तथा उनके माध्यम से ही वे अपनी समस्याओं का समाधान करेंगे। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में तन-मन-धन से माता-पिता की सेवा करेंगे तथा उन्हें अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे इससे आपको बच्चों पर गर्व की अनुभूति होगी।

विद्याध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति बुद्धिमान एवं प्रतिभाशाली होगी तथा प्रारंभ से ही शिक्षा के क्षेत्र में वे विशिष्ट उपलब्धियों को अर्जित करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा-दिक्षा का उच्च स्तर पर प्रबन्ध करेंगे तथा आधुनिक परिवेश में शिक्षा प्रदान करेंगे। फलतः बच्चे योग्य बनकर आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करेंगे। इसके अतिरिक्त वे सुन्दर, स्वस्थ एवं आकर्षक व्यक्ति के स्वामी होंगे तथा अपनी व्यवहार कुशलता एवं कार्य-कलापों से अन्य सामाजिक जनो को प्रभावित करके उनसे स्नेह तथा सम्मान अर्जित करेंगे। इस प्रकार आपको जीवन में संतति का वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

Priti

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है अतः

इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा आपके सभी कार्य-कलापों में उत्कृष्ट बुद्धिमता की छाप होगी। इससे सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप में सही समय में तत्काल सही निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी जिससे समान्यतया कार्यों में आपको सिद्धि प्राप्त होगी वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म में आपकी पूर्ण रुचि होगी तथा उनके ज्ञानार्जन से सामाजिक प्रभाव में वृद्धि करेंगी। संगीत कला एवं कविता तथा पाश्चात्य साहित्य के प्रति आपकी ज्ञानार्जन की इच्छा होगी तथा स्वपरिश्रम से इस क्षेत्र का न्यूनाधिक ज्ञान अर्जित करने में समर्थ होंगी।

पंचमभाव में कुंभ राशि के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी विशेष रुचि होगी तथा मनोरंजन शान्ति एवं आत्म सन्तुष्टि के लिए आप प्रेम-प्रसंग स्थापित करेंगी। आपके प्रेम में भौतिक तथा भावात्मक दोनों प्रकार का आकर्षण विद्यमान होगा। अतः इस क्षेत्र में आपको मर्यादा तथा नैतिकता का अवश्य ध्यान रखना चाहिए जिससे अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना न करना पड़े।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा कन्या संतति अधिक होगी। आपकी संतति बुद्धिमान योग्य एवं पराकमी होगी तथा इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी तथा उनकी आज्ञा का पालन भी करेंगे। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को वे माता-पिता की सलाह से सम्पन्न करेंगे। इससे आपस में सदभाव एवं विश्वास का भाव बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति बच्चों का विशेष अपनत्व का भाव होगा एवं अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान वे माता के माध्यम से ही सम्पन्न करेंगी लेकिन आदर का भाव दोनों के प्रति समान होगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में माता-पिता की तन-मन-धन से सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। अतः इस संदर्भ में आप भाग्यशाली महिला होंगी।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति योग्य सिद्ध होगी तथा प्रारंभ से ही वे अध्ययन के क्षेत्र में विशेष उन्नति एवं सफलताएं अर्जित करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा उसमें आवश्यक व्यय करके आधुनिक परिवेश में उन्हें शिक्षा दिलाएंगी। वे भी स्वभाव से मृदु, सुन्दर, सक्रिय एवं व्यवहार कुशल होंगी तथा अन्य जनों को अपने कार्य कलापों तथा बुद्धिमता से प्रभावित एवं प्रसन्न रखेंगे जिससे वे वांछित स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। इससे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा संतति पर आप गौरवान्वित होंगी।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

Pradeep

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप रक्त सम्बन्धियों से समय समय पर विरोध का सामना करेंगे साथ ही उनसे आपको अनुकूल सहयोग भी नहीं मिलेगा। आपके उत्कृष्ट कार्य कलापों से उनके मन में ईर्ष्या की भावना उत्पन्न होगी। साथ ही यदा कदा वरिष्ठ अधिकारियों के विरोध के कारण भी आपको कार्य क्षेत्र में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आपके शत्रु उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति होंगे जो समाज या सरकार के विभिन्न क्षेत्रों से रहेंगे तथा वे हमेशा आपके मान सम्मान में न्यूनता करने के लिए तत्पर रहेंगे। लेकिन आप अपनी बुद्धिमता, चतुराई शक्ति तथा अन्य गुप्त सूत्रों से उनका सामना तथा पराजित करने में सफल सिद्ध होंगे।

सेवक वर्ग की सेवा प्राप्त करने के लिए आप प्रायः उत्सुक रहेंगे तथा इनके बिना आपके कई कार्य पूर्ण भी नहीं होंगे। आपके नौकर अच्छे होंगे तथा आपकी इच्छा के अनुसार कार्य करने में वे सर्वदा तत्पर रहेंगे लेकिन वे आपके व्यक्तिगत गुप्त रहस्यों को अन्य जनों के समक्ष उजागर करेंगे। साथ ही वे यदा कदा चोरी आदि करने के लिए भी तत्पर हो सकते हैं। अतः कीमती वस्तुओं को उनकी पहुँच से बाहर रखना चाहिए। आप अपने उच्च स्तर को बनाने के लिए अनावश्यक व्यय करेंगे यह व्यय आपकी आय से अधिक होगा। यद्यपि आप सोच समझकर व्यय करेंगे परन्तु यदा कदा व्ययाधिक्य के कारण आपको ऋण भी लेना पड़ सकता है लेकिन समय पर वापस न करने में आपके मान सम्मान में न्यूनता आएगी। अतः ऋण आदि लेने की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

मामा मामियों से आपको समय समय पर इच्छित सहयोग प्राप्त होगा साथ ही आपकी वे पूर्ण रूप से सहायता करते रहेंगे परन्तु कभी कभी वे सर्वथर्वश आपकी मदद करेंगे जिससे आपके स्वाभिमान को ठेस पहुंचेगी। दीवानी या फौजदारी मुकद्दमों में आप सामान्यतया धन तथा समय की ही बर्बादी करेंगे। लेकिन यदि आप नियमानुसार इन कार्यों को करेंगे तो इनमें आपको इच्छित लाभ तथा विजय प्राप्त हो सकती है। साथ ही उत्तम स्वास्थ्य के खान पान का उचित ध्यान रखना चाहिए तथा गर्म पदार्थों की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

Priti

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है अतः इसके प्रभाव से आपको जीवन में किसी उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति से विरोध का सामना करना पड़ेगा साथ ही अन्य शत्रु भी मान सम्मान में न्यूनता करने के लिए सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे जिससे सामाजिक जनों के मध्य आपके प्रभाव में न्यूनता आएगी। आपके सेवक भी आपके लिए आज्ञाकारी तथा विश्वास पात्र रहेंगे तथा ईमानदारी से आपकी सेवा में तत्पर रहेंगे। यदि आप उनको उचित पारिश्रमिक प्रदान नहीं करेंगी तो वे घर में किसी प्रकार की चोरी आदि भी कर सकते हैं अतः ऐसी समस्याओं का निराकरण पहले से ही कर लेना चाहिए।

आपकी प्रवृत्ति अधिक से अधिक धन संग्रह करने की रहेगी। साथ ही कई प्रकार से पूंजीनिवेश भी करेंगी परन्तु इसमें हानि की अवस्था में ऋण आदि भी ले सकती है लेकिन कर्जदाता आपसे विशेष सहयोग नहीं करेंगे तथा विलम्ब की अवस्था में आपके मान सम्मान में न्यूनता कर सकते हैं। अतः धन व्यय या पूंजीनिवेश अच्छे कार्यों में करके आपको बुद्धिमता एवं सतर्कता का परिचय देना चाहिए। इसके साथ ही अवसरनुकूल बन्धुवर्ग या अन्य संबन्धी भी आर्थिक मामलों में आपको हानि प्रदान कर सकते हैं। अतः सोच समझकर किसी भी कार्य को प्रारंभ करना चाहिए।

जीवन में सम्बन्धियों या अन्य जनों से मुकद्दमे बाजी का भी संकेत मिलता है। इसका संबंध आर्थिक जमीन जायदाद या फौजदारी मामलों से हो सकता है। साथ ही यदा कदा जीवन में दाम्पत्य जीवन की मधुरता में न्यूनता आ सकती है। मामा मामी से आपके संबंध मध्यम ही रहेंगे तथा परस्पर सहयोग के भाव में न्यूनता ही रहेगी। शारीरिक स्वस्थता बनाए रखने के लिए उचित खान पान का प्रयोग करें। जब भी आपको अत्यधिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तब आप गुप्त कार्यों, तंत्र मंत्र या अन्य कार्यों से शान्ति एवं सफलता अर्जित करेंगी।

दम्पति, विवाह एवं साझेदार

Pradeep

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है सामान्यतया सप्तम भाव में कन्या राशि के प्रभाव से जातक का सहयोगी प्रियवक्ता स्वच्छता प्रिय सौभाग्यशाली एवं विविध कार्यों में दक्ष होता है तथा वह शिक्षित विद्वान प्रसिद्ध सांसारिक कार्यों में दक्ष एवं कर्तव्य परायण होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की विनम्र एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपने संभाषण हमेशा मधुर शब्दों का प्रयोग करेंगी साथ ही वह स्वच्छता प्रिय होंगी एवं सफाई के प्रति विशेष सजग होंगी सांसारिक कार्य कलापों को करने में वह चतुर होंगी। साथ ही उनमें कर्तव्य परायणता का भाव भी होगा एवं समाज तथा परिवार के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्य का पालन करेंगी।

आपकी पत्नी सुंदर आकर्षक एवं गौर वर्ण की महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा। शारीरिक संरचना उनकी दर्शनीय होगी तथा शरीर के सभी अंग प्रत्यंग पुष्ट एवं सडोलता से युक्त होंगे जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी तथा शरीर भी आकर्षक रहेगा। साहित्य संगीत एवं कला के प्रति भी उनकी रुचि होगी तथा सुंदर एवं कलात्मक वस्तुओं के संग्रह में तत्पर रहेंगी।

सप्तम भाव में कन्या राशि के प्रभाव से आपका विवाह बंधु एवं संबन्धी के सहयोग से सम्पन्न होगा विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में एक दूसरे के प्रति सम्मान आकर्षण एवं प्रेम की भावना होगी। सांसारिक महत्व के कार्यों को आप परस्पर सलाह एवं सहमति से पूर्ण करेंगे जिससे आपस में विश्वास एवं समानता का भाव उत्पन्न होगा। इससे दाम्पत्य संबंधों में मधुरता रहेगी तथा वैवाहिक जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह किसी शिक्षित एवं प्रतिष्ठित परिवार में होगा तथा समाज में वे आदरणीय होंगे। विवाह के बाद सास ससुर से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे आपको यथोचित सम्मान सहयोग एवं स्नेह मिलेगा। साथ ही आप भी उन्हें पूर्ण सम्मान देंगे एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनकी भी सलाह लेंगे जिससे आपस में विश्वसनीयता बनी रहेगी।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का हार्दिक सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुःख में उनकी माता पिता के समान सेवा करेंगी। देवर एवं ननदों को भी वह अपने सदव्यवहार से प्रसन्न रखेंगी जिससे परिवार में शांति का वातावरण बना रहेगा।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी तथा इससे आपको वांछित लाभ होगा। यदि अपनी आयु से अधिक आयु के समीपस्थ संबन्धी से साझेदारी की जाए तो इससे शुभ फल प्राप्त होंगे एवं परस्पर विश्वसनीयता भी बनी रहेगी।

Priti



आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है सामान्यतया मेष राशि की सप्तम स्थिति से जातक का सहयोगी तेजस्वी उत्साही पराक्रमी एवं धनाढ्य होता है। वृश्चिक राशि के प्रभाव से वह आधुनिक विचार धाराओं से युक्त, सुन्दर एवं कला प्रेमी होता है एवं स्वभाव में भी विनम्रता एवं सुशीलता रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति विनम्र स्वभाव के व्यक्ति होंगे। आधुनिकता के भावों की उनमें प्रबलता होगी तथा भौतिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों की प्रति विशेष रुचि होगी। अपने संभाषण में वह मधुर शब्दों का उपयोग करेंगे। शुक के प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता भी होगी एवं परिवार तथा समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगे।

आपके पति सुंदर एवं आकर्षक वर्ण की दर्शनीय व्यक्ति होंगे तथा उनका कद भी मध्यम रहेगा उनका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा शरीर में पुष्टता रहेगी जिससे उनके व्यक्तित्व में निखार आएगा। वह सुंदर तथा आकर्षक परिधानों से सुसज्जित रहेंगे तथा संगीत एवं कला के प्रति उनके मन में प्रबल आकर्षण रहेगा।

आपका विवाह बंधु वर्ग या संबन्धी के सहयोग से सम्पन्न होगा तथा सप्तम भाव में मेष राशि की स्थिति के प्रभाव से आप प्रेम विवाह भी कर सकती हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में प्रबल आकर्षण तथा प्रेम की भावना रहेगी। सांसारिक महत्व के कार्यों को परस्पर सहयोग एवं सहमति से सम्पन्न करेंगी। इससे समानता तथा विश्वसनीयता के भाव में वृद्धि होगी। आप दोनों शिक्षित व्यक्ति होंगे तथा जीवन में सिद्धांतों में भी समानता रहेगी फलतः आपसी संबंधों में मधुरता के कारण जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका ससुराल किसी समृद्ध परिवार में होगा तथा सामाजिक रूप से भी उनकी प्रतिष्ठा बनी रहेगी। सास ससुर से आपके अच्छे संबंध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण स्नेह की प्राप्ति होगी। आप भी उन्हें यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे नैतिक सहयोग भी मिलता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपके पति का पूर्ण श्रद्धा एवं सेवा का भाव रहेगा एवं सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे। साले एवं सालियों को भी अपने सद्व्यवहार एवं मधुर वाणी से प्रसन्न रखेंगे तथा उनसे वांछित सम्मान मिलेगा।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्य में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी। यदि मित्रवर्ग से साझेदारी की जाये तो आपको विशिष्ट उपलब्धियां मिलेंगी तथा आपस में विश्वसनीयता का भाव भी बना रहेगा।

दहेज, बीमा आयु एवं दुर्घटना

Pradeep

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक है। अतः इसके प्रभाव से आप आध्यात्म तथा ज्योतिष एवं तंत्र मंत्र आदि में विश्वास करेंगे। साथ ही आपकी पूर्वाभास तथा अन्तर्प्रज्ञा शक्ति भी प्रबल रहेगी जिससे आप सही रूप से भविष्यवाणियां करने में समर्थ हो सकेंगे। इस क्षेत्र में आपकी काफी रुचि रहेगी तथा प्रयत्नपूर्वक इसका ज्ञान अर्जित करेंगे एवं इसमें शोधकार्य भी सम्पन्न कर सकते हैं। इससे आपको धनार्जन भी होगा एवं समाज में आपको प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी। साथ ही इससे आपके मित्रों की संख्या में भी वृद्धि होगी तथा कई आध्यात्मिक एवं पराविद्या वेता आपके मित्र होंगे।

आपको पैतृक सम्पत्ति की भी प्राप्ति होगी तथा इससे आपको काफी लाभ होगा। साथ ही जमीन जायदाद के कार्य से आपको समय समय पर लाभ भी होता रहेगा। आपके कार्य से लोग सामान्यतया प्रसन्न रहेंगे तथा आपको मुंह मांगा दाम देंगे। शादी से भी आपको उचित लाभ होगा तथा किसी प्रकार से जायदाद की प्राप्ति भी हो सकती है। इसमें आपको दहेज के रूप में प्रचुर मात्रा में धन आभूषण एवं अन्य आधुनिक उपकरण उपहार स्वरूप प्राप्त होंगे। इससे आप तथा आपकी पत्नी ससुराल वालों के प्रति कृतज्ञ रहेंगे। बीमे आदि से भी आपको समय समय पर लाभ होता रहेगा अतः न्यूनाधिक रूप से आपको बीमा अवश्य करवाना चाहिए। आपकी कुंडली में चोरी या दुर्घटना के कोई विशेष अवसर नहीं आएंगे। यदि कोई ऐसी घटना घट भी गई भी तो उसका मामूली प्रभाव होगा। आपकी आयु अच्छी रहेगी तथा उत्तम स्वास्थ्य से युक्त होकर आप अपना सामान्य जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।

Priti

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक है अतः इसके प्रभाव से आप में आध्यात्मिक शक्ति विद्यमान रहेगी। साथ ही ज्योतिष एवं तंत्र मंत्र आदि पर भी आपका विश्वास रहेगा तथा न्यूनाधिक रूप से इसका ज्ञान भी प्राप्त कर सकती हैं। आपके अन्दर सक्रियता के भाव की हमेशा प्रबलता रहेगी तथा प्रतिभा से सुसम्पन्न रहेगी। अतः आप कोई भी सृजनात्मक कार्य दूसरों की अपेक्षा आसानी से कर लेंगी। आप मित्र या बन्धुवर्ग से जायदाद की भी प्राप्ति कर सकती हैं। साथ ही पैतृक सम्पत्ति भी आपको प्राप्त होगी। इस प्रकार चल अचल सम्पत्ति की स्वामिनी बनकर समाज में इच्छित मान सम्मान अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा ससुराल पक्ष के लोग धनवान एवं सर्वप्रकार के गुणों से परिपूर्ण रहेंगे जिससे आपको कोई भी परेशानी नहीं होगी। आपकी प्रवृत्ति पार्टियों को भी आयोजित करने की रहेगी जिससे आपको हार्दिक प्रसन्नता होगी। बीमा आदि करके भी आपको इच्छित लाभ हो सकता है अतः अवसरानुकूल आपको बीमा अवश्य करवाना चाहिए। साथ ही आपके घर में चोरी आदि की कोई बड़ी घटना नहीं होगी तथापि अपनी बहुमूल्य वस्तुओं को पहले से ही किसी सुरक्षित स्थान में रख लेना चाहिए। दुर्घटना आदि के योग भी सामान्यतया अल्प रहेंगे तथा अपनी सतर्कता से इन घटनाओं

सेसुरक्षित रहने में सफलता प्राप्त करेंगी तथापि आपको तीव्र गति से वाहन आदि नहीं चलाना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपकी आयु अच्छी रहेगी तथा जीवन में आनन्द एवं सुख का उपभोग करने में समर्थ रहेंगी।



सौभाग्य, प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

Pradeep

आपके जन्म समय में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है अतः इसके प्रभाव से प्रारंभ में धर्म के प्रति आपके मन में कोई विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी लेकिन आयु के साथ साथ आप मन्दिर या तीर्थ स्थानों पर जाकर धार्मिक कार्य कलाप सम्पन्न करेंगे तथा दैनिक पूजा को भी आरम्भ करेंगे। भाग्य आपके लिए प्रायः सहायक रहेगा। लम्बी यात्राओं के लिए आप हमेशा रुचिशील रहेंगे तथा अध्यात्म, ज्योतिष या तंत्र मंत्र संबंधी शास्त्रों में भी आपकी रुचि रहेगी एवं परिश्रम पूर्वक संबंधित ग्रंथों का अध्ययन करके इसका ज्ञान प्राप्त करेंगे। आप अपने निवास स्थान में पूजा स्थल का भी निर्माण करवायें। परोपकार संबंधी कार्यों तथा भगवान के प्रति पूर्ण श्रद्धा रहेगी। इसके साथ ही आप कई शुभ कार्य कर्मों को सम्पन्न करेंगे तथा हमेशा प्रसन्नचित रहेंगे।

युवावस्था में आप ध्यान, योगादिक्रियाओं में भी रुचि लेंगे तथा परिश्रम पूर्वक इनको सम्पन्न करते रहेंगे तथा इनसे संबंधित ग्रंथों को पढ़ेंगे। आपकी अन्तर्ज्ञा शक्ति प्रबल रहेगी जिससे आपको पूर्वाभास या भविष्य संबंधी जानकारियां हो सकती है। आप अपने जीवन में निश्चय ही कोई धार्मिक एवं पुण्य संबंधी कार्य को सम्पन्न करेंगे जैसे मंदिर अस्पताल या तालाब आदि का निर्माण। साथ ही अन्यत्र भी दानादि कार्य करते रहेंगे। प्रारंभिक अवस्था में लम्बी यात्राओं को सम्पन्न कर सकते हैं। ये यात्राएं शिक्षा संबंधी भी हो सकते हैं या व्यापारिक एवं धार्मिक कार्य संबंधी भी लेकिन इनसे आपको सम्मान लाभ एवं ख्याति अवश्य प्राप्त होगी तथा समाज में अपने सत्कर्मों के लिए जाने जाएंगे। वृद्धावस्था में पौत्रों से आपको सौभाग्य, सुख एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी तथा अपने पूर्व जन्मों के पुण्य के प्रभाव से आपका यह जीवन सुख एवं ऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

Priti

आपके जन्म समय में नवम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक धार्मिक प्रवृत्ति की महिला होंगी तथा पैतृक एवं पारिवारिक नियमों के अनुसार अपने धर्म के अनुपालन में तत्पर रहेंगी। ईश्वर की सत्ता में आपका पूर्ण विश्वास रहेगा। साथ ही भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति के लिए हमेशा यत्नशील रहेंगी। आप एक भाग्यशाली महिला होंगी तथा भाग्यबल से इच्छित धनऐश्वर्य एवं वैभव अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। इसके अतिरिक्त अवसरानुकूल तीर्थ यात्रा करने की भी इच्छुक रहेंगी।

विभिन्न धार्मिक ग्रंथों का आप रुचि पूर्वक अध्ययन करेंगी तथा ध्यान योग, तंत्र मंत्र तथा ज्योतिष आदि में भी आपका विश्वास रहेगा एवं न्यूनाधिक रूप से इनका ज्ञान अर्जित करने में भी रुचिशील रहेंगी। यदि आप अपनी दृढ़ संकल्पता में वृद्धि कर सकें तो अपनी अन्तर्ज्ञा शक्ति के द्वारा आप पूर्वाभास तथा भविष्य वाणी करने में सफलता अर्जित कर सकती हैं।

आपकी दैनिक पूजा जीवन में आपको ऐश्वर्य प्रदान करने के लिए आत्मबल प्रदान करेंगी

परन्तु यदा कदा मानसिक असन्तुलन के कारण आपको व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा। साथ ही पूजा कार्य में भी समय समय पर व्यवधान उत्पन्न होंगे। व्यावसायिक रूप से की गई लम्बी यात्राओं से आपको लाभ यश तथा समाज में मान सम्मान में वृद्धि होगी। इससे जीवन में स्थायित्व आएगा तथा धनवैभव की भी वृद्धि होगी। आप एक प्रसिद्ध बुद्धिमान तथा विदुषी महिला होंगी तथा अपनी योजनाओं को बिना किसी रुकावट के सम्पन्न करेंगी। प्रथम पौत्र से आपको अत्यधिक सुख एवं प्रसन्नता प्राप्त होगी। साथ ही जीवन में अन्यत्र भी शुभ एवं पुण्य कार्य करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप धर्मात्मा, सौभाग्यशाली, अतिथि सत्कार करने वाली तथा दीन दुःखियों पर कृपा करने वाली होंगी। तथा परोपकार संबंधी कार्य करने में भी तत्पर रहेंगी।



पिता, व्यवसाय एवं सामाजिक स्तर

Pradeep

आपके जन्म समय में दशमभाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है धनु राशि अग्नितत्व राशि है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान के साथ साथ श्रमसाध्य भी होगा तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। साथ ही परिश्रमी स्वभाव होने के साथ आप किसी स्वतंत्र कार्य या व्यवसाय में अच्छी सफलता प्राप्त करने में समर्थ होंगे।

आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र लिपिकीय कार्य, लेखाकार, लेखन, साहित्य, चित्रकारी, जिल्दसाजी, शिक्षक, ज्योतषी, पुस्तक विक्रेता सम्पादक, संशोधक, अनुवादक, संदेश वाहक तथा टेलिफोन आपरेटर आदि कार्य शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको उन्नति मार्ग सदैव प्रशस्त होंगे तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का आपको सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको अपनी चहुँमुखी उन्नति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए उपरोक्त विभागों में ही अपनी अजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए एजेंसी, दलाली, पुस्तक विक्रेता या प्रकाशन कार्य, अग्रबत्ती, पुष्पमालाएं, कागज के खिलौने, आदि से इच्छित लाभ एवं धन अर्जित होगा। साथ ही चित्रकारी, कला आदि के स्वतंत्र व्यवसाय से भी आप लाभ एवं उन्नति प्राप्त कर सकते हैं। अतः आप व्यापार करने के इच्छुक हो तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही आपको अपने कार्य का प्रारम्भ करना चाहिए जिससे बिना किसी बाधा के आप उन्नति कर सकेंगे।

जीवन में आपको मानसम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा अपनी बुद्धिमता एवं बिद्धता से आप किसी सामाजिक पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप आदरणीय एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि होगी। आप किसी सामाजिक, सांस्कृतिक या धार्मिक संस्था में सम्मानित पदाधिकारी या सदस्य भी हो सकते हैं जिससे आपके सम्मान एवं प्रभाव में वृद्धि होगी तथा जीवन में अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट होंगे।

आपके पिता बुद्धिमान विद्वान एवं मृदुस्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा समाज में उनका पूर्ण प्रभाव होगा। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव होगा तथा उच्चशिक्षा का वे यथोचित प्रबंध करेंगे तथा आपको एक योग्य व्यक्ति के रूप में देखना चाहेंगे। आपको कार्यक्षेत्र की प्रारम्भिक उन्नति एवं सफलता में उनका प्रमुख योगदान होगा। साथ ही आप भी योग्य एवं परिश्रमी व्यक्ति होंगे तथा अपने पराक्रम से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा पिता के सम्मान में वृद्धि करेंगे। आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता होगी तथा वैचारिक एवं सैद्धांतिक समानता बनी रहेगी इसके अतिरिक्त आप में आज्ञाकारिकता का भाव भी होगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आपसी सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

Priti

आपके जन्म समय में दशम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्र है। कर्क राशि जलतत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा समय समय पर आप इसमें परिवर्तन करने के इच्छुक होंगी एवं ऐसे तात्कालिक परिवर्तनों से आप को लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी। साथ ही आप मानसिक रूप से भी सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगी।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए जलविभाग, वस्त्र उत्पादन फैक्टरी, स्टेनोग्राफर, कैमिकल्स, कार्यालय सहायक, सचिव, जलसेना, जहाजरानी विभाग अनुकूल रहेंगे। इन विभागों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता मिलेगी तथा मानसिक रूप से भी आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगी।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए जलोत्पन्न पदार्थों यथा शंख, मोती, प्रवाल, मछली का व्यापार, मिट्टी के खिलौने, ईट, वालू आदि के कार्य, वास्तुकला, आलंकारिक वस्तुओं का व्यापार, द्रव्य पदार्थों यथा दूध, दही, घी आदि के कार्य से लाभ होगा। साथ ही रेशमी एवं मूल्यवान वस्त्रों के व्यापार या आयात निर्यात से भी इच्छित उन्नति एवं लाभ की प्राप्ति होगी। अतः यदि आप व्यापार की इच्छुक हो तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार आरंभ करें। इससे आपकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा लाभ स्रोतों में भी वृद्धि होगी।

जीवन में आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी सम्मानित एवं उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में समर्थ होंगी। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि भी व्याप्त होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी सामाजिक धार्मिक सांस्कृतिक या शैक्षणिक संस्था के पदाधिकारी भी हो सकती हैं जिससे आपके प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

आपके पिता बुद्धिमान, शिक्षित तथा मृदुस्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा उनकी प्रवृत्ति भी शान्ति प्रिय होगी। साथ ही उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा एवं सभी लोग उनसे प्रभावित तथा प्रसन्न होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा वात्सल्य का भाव होगा तथा आपकी उच्च शिक्षा का वे समुचित व्यवस्था करेंगे। आपकी कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान होगा तथा उनके प्रभाव से आपको इसमें यथोचित सम्मान एवं आदर की प्राप्ति होगी। साथ ही आप भी अपने उत्तम कार्य कलापों से पिता के सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगी। इसके अतिरिक्त आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी एवं वैचारिक तथा सैद्धान्तिक रूप से समानता होगी। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यों को एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

लाभ, मित्र, समाज, ज्येष्ठ भ्राता एवं आकांक्षाएं

Pradeep

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप किसी भी कार्य को सोच समझकर तथा व्यापारिक दृष्टि से सम्पन्न करेंगे। साथ ही मानसिक शक्ति की भी आप में प्रबलता रहेगी। प्रबन्ध एवं संगठन शक्ति भी आप में विद्यमान रहेगी तथा एक पराकामी परिश्रमी तथा योग्य व्यक्ति होंगे अतः जीवन में अपनी अधिकांश इच्छाओं तथा आकांक्षाओं को पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे। आप एक दूरदर्शी एवं महत्वाकांक्षी पुरुष भी होंगे तथा प्रसिद्धि, धन-ऐश्वर्य एवं मान सम्मान अर्जित करने के लिए सर्वदा यत्नशील रहेंगे। जीवन में उन्नति या लाभार्जन का आप कोई भी अवसर नहीं छोड़ेंगे फलतः आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा आय स्रोतों में नित्य वृद्धि होगी जिससे प्रचुर मात्रा में धनार्जन होता रहेगा। आर्थिक क्षेत्र में आप किसी भी प्रकार का खतरा नहीं उठाएंगे। लकड़ी या लोहे से संबंधित व्यापार या कार्य से आप विशिष्ट लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे।

आपको बड़े भाइयों की अपेक्षा बहिनों से जीवन में विशिष्ट लाभ सहयोग एवं स्नेह प्राप्त होगा तथा वे आपका पुत्रवत पालन करेंगी तथा समय समय पर मार्ग दर्शन भी करती रहेंगी। आपकी मित्रता स्थाई रहेगी तथा मित्रता का क्षेत्र अधिक विस्तृत नहीं होगा परन्तु मित्रवर्ग के मध्य आदरणीय विश्वसनीय तथा प्रतिष्ठा से युक्त रहेंगे। समाज में आपका स्तर उच्च रहेगा तथा सभी सामाजिक जनों से आपके अच्छे संबंध रहेंगे एवं उनकी सेवा तथा भलाई करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। अतः अपने क्षेत्र या समाज में आपको अच्छी ख्याति प्राप्त होगी लेकिन यदा कदा बाएं कान संबंधी परेशानी से आप कष्ट की अनुभूति कर सकते हैं परन्तु आपका सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

Priti

आपके जन्म समय में एकादश भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः : इसके प्रभाव से एक भाग्यशाली महिला होंगी तथा आर्थिक रूप से धनार्जन उत्तम रहेगा। आप महत्वाकांक्षी होंगी तथा मन में कई उमंगें एवं इच्छाएं विद्यमान रहेंगी साथ ही सौभाग्य के बल पर अधिकांशतया इनकी पूर्ति में सफल भी रहेंगी। सरकार, औषधि विज्ञान तथा पिता के द्वारा जीवन में आप विशेष रूप से धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगी तथा इन्हीं के द्वारा आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी। यदि आप कार्यरत नहीं हैं तो उपरोक्त योग आपके पति की कुंडली में घटित होंगे। इस प्रकार धनार्जन की दृष्टि से हमेशा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगी। साथ ही बड़े भाइयों से आपको जीवन में इच्छित सुख, सहयोग, लाभ एवं स्नेह प्राप्त होगा तथा आप भी पितृवत् उनको आदर प्रदान करेंगी।

मित्रों के प्रति आपके मन में पूर्ण विश्वास रहेगा तथा उनके मध्य आदरणीय रहेंगी। आपके सभी मित्र शिक्षित बुद्धिमान एवं चतुर होंगे। आप एक सामाजिक प्राणी होंगी तथा अपने क्षेत्र या समाज में ख्याति प्राप्त करेंगी। साथ ही अन्य जनों की भलाई तथा सहयोग करने के लिए भी सर्वदा तत्पर रहेंगी। सामूहिक कार्य या मनोरंजन करना आपको रुचिकर लगेगा। जीवन में आप किसी विशिष्ट सामाजिक सम्मान को भी अर्जित करने में सफल हो सकती हैं। आपका स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा ही रहेगा

परन्तु यदा कदा गर्मी आदि से आपको परेशानी हो सकती है एवं बाएं कान में भी किसी परेशानी से कष्ट होगा। परन्तु आपका सामान्य जीवन धनऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर सुख पूर्वक व्यतीत होगा।



हानि, बन्धन, कर्ज, आवास परिवर्तन एवं मोक्ष

Pradeep

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आपकी अच्छी व्यापारिक क्षमता रहेगी तथा धन एवं शक्ति से हमेशा युक्त रहेंगे। वृद्धावस्था में आप अपने बच्चे या किसी अन्य संबंधी पर आश्रित नहीं रहेंगे क्योंकि पहले से ही इस समय के लिए पूर्ण धन सुरक्षित रखेंगे। अन्य जनों के प्रति आपके मन में सहानुभूति रहेगी तथा यत्नपूर्वक उनकी आर्थिक तथा अन्य रूप से सहायता करते रहेंगे।

आपको मध्यमवस्था में पूर्ण धन मान एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा धन का आप बुद्धि मता एवं सावधानी पूर्वक उपयोग करेंगे। इस प्रकार आपकी आर्थिक स्थिति प्रायः अच्छी रहेगी। परिवार के प्रति आप पूर्ण रूप से समर्पित रहेंगे तथा उनकी सुख सुविधा रहन सहन एवं पठन पाठन का स्तर बढ़ाने के लिए नित्य यत्नशील रहेंगे तथा ऐसे कार्यों पर आपका प्रचुर मात्रा में व्यय होगा। सांसारिक सुख संसाधनों तथा भौतिक उपकरणों के प्रति भी आपके मन में तीव्र लालसा रहेगी तथा इन पर भी आप प्रचुर मात्रा में श्रवण करेंगे। साथ ही आवास संबंधी साज सज्जा पर भी उपयुक्त व्यय होगा। जिससे आर्थिक स्थिति पर इसका कोई प्रभाव नहीं होगा। इसके अतिरिक्त दान या धार्मिक कार्य कलापों पर भी समय समय पर आपका व्यय होता रहेगा।

यात्राओं के प्रति भी आपकी रुचि बनी रहेगी तथा समय समय पर व्यवसाय या कार्य संबंधी यात्राएं होगी जिससे आपको लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त व्यापारिक तथा भ्रमण संबंधी आपकी जीवन में विदेश यात्रा की भी संभावना रहेगी।

Priti

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न एवं सुदृढ़ रहेंगे। जीवन में आपको एकानेक साधनों से धन की प्राप्ति होगी लेकिन आपका रहन सहन खान पान आदि उच्च स्तर का रहेगा अतः प्रचुर मात्रा में धनार्जन के बाद भी उचित मात्रा में बचत कम ही होगी तथा व्यय ही अधिक रहेगा। आप भौतिक सुख संसाधनों तथा उपकरणों पर उन्मुक्त रूप से व्यय करेंगी। साथ ही वस्त्र आदि भी सुंदर कीमती एवं आकर्षक रहेंगे। इस प्रकार आप अपनी धनाढ्यता का अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करेंगी।

आपका पारिवारिक जीवन सुख एवं शान्तिमय रहेगा तथा आवास स्थल भी सुंदर एवं सुसज्जित रहेगा जिसकी सजावट में काफी व्यय होगा। वास्तव में आप कलात्मक रूप से जीवन व्यतीत करना पसन्द करेंगी तथा इसके लिए अधिकाधिक धन व्यय की आवश्यकता रहेगी। सुंदर एवं विलासमय वस्तुओं के प्रति आपके मन में तीव्र लालसा रहेगी तथा इनकी प्राप्ति में कितना भी व्यय क्यों न हो आप उसे अवश्य प्राप्त करेंगी। साथ ही परिवार एवं मित्रों के साथ मंहगे होटलों में भोजन या नाश्ता करना आपका शौक रहेगा। अतः आपकी वैभवशालीनता तथा सफलता को देखकर शत्रु आपके लिए रुकावटें उत्पन्न करेंगे जिससे कभी कभी मानसिक रूप से आप तनाव ग्रस्त भी रहेंगी

यात्रा करने में आप रुचिशील रहेंगी तथा देश के साथ साथ विदेश संबंधी यात्राएं भी सम्पन्न करेंगी। इनसे आपको उचित लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। यद्यपि इनमें व्यय अधिक होगा परन्तु भविष्य में लाभ तथा प्रसिद्धि के योग बनेंगे। आप भ्रमण या कार्यवश दोनों प्रकार की यात्राएं सम्पन्न कर सकती हैं। इसके साथ ही विदेश में काफी समय तक प्रवास भी करेंगी।



दशा विश्लेषण

Pradeep

महादशा :- मंगल

(17/07/2008 - 18/07/2015)

मंगल की महादशा 17/07/2008 को आरम्भ और 18/07/2015 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल द्वितीय भाव में अवस्थित है। इसके पूर्व आपकी चन्द्रदशा चल रही थी जिसकी अवधि 10 वर्ष की थी। मंगल के पंचम भाव पर दृष्टि होने के कारण आपको बच्चों से सुख, उत्तम शिक्षा और समृद्धि की प्राप्ति होगी। मंगल की इस दशा में आपको धन और समृद्धि की प्राप्ति होगी और आपका झुकाव धार्मिक कार्यों की ओर होगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा-काल में आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। आप में आत्मविश्वास तथा पहल-शक्ति होगी और आप सक्रिय तथा स्फूर्तिवान होंगे। कुछ मौसमी बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। सरदर्द, ज्वर, संक्रमण, ताप संबंधी बीमारियों आदि की सम्भावना है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आप धन-संपत्ति का संचय करेंगे। आपको पिता से लाभ होगा। आपको कुछ-पैतृक-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। व्यवसाय और जीवन-वृत्ति से उपार्जन में भी वृद्धि होगी। मंगल की पंचम भाव पर दृष्टि के फलस्वरूप आपको सट्टे तथा निवेश में लाभ होगा। अपनी जीविका के लिये सैन्य सेवा, सर्जरी तथा चिकित्सा कार्य, दन्तचिकित्सा, भूगर्भ-विज्ञानी अथवा रसायनज्ञ के कार्यों का चयन कर सकते हैं। आप असैनिक तथा यांत्रिक अभियंत्रण और औद्योगिक प्रतिष्ठानों में अच्छा करेंगे। लौह-इस्पात, खेल के सामानों, ताम्बे, खनिज पदार्थों आदि का व्यवसाय लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों के लिये दशा उत्तम रहेगी। आपकी आय में वृद्धि तथा पदोन्नति होगी और उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों के लिये समय समृद्धिशाली रहेगा। आय तथा गतिविधियों में वृद्धि होगी। व्यापार का विस्तार हो सकता है और व्यापार से जुड़े लोग व्यस्त रहेंगे। आर्थिक सफलता के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्राएँ, सम्पत्ति :

बुध की अन्तर्दशा में आपको जीवन के सुख मिलेंगे। इस अन्तर्दशा के दौरान आपको वाहन की प्राप्ति होगी। मंगल तथा बुध की अन्तर्दशा में जमीन-जायदाद के मामले लाभदायक होंगे। यह अवधि सभी आर्थिक कारोबार के लिए उत्तम है। शुक की अन्तर्दशा में आपकी छोटी तथा शनि और मंगल की अन्तर्दशाओं लम्बी यात्राएँ होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। गणित, विज्ञान तथा प्रशासन व प्रबन्धन से सम्बन्धित विषयों का अध्ययन लाभदायक होगा। आप परीक्षाओं में सफल होंगे। इस अवधि में आप उच्च शिक्षा भी आरम्भ कर सकते हैं। आप अपने स्वभावगत नेतृत्व तथा बैद्धिक गुणों का प्रदर्शन करेंगे।

परिवार :

परिवार में आपके संबंध मधुर रहेंगे। आपके बच्चों के साथ आपके सम्बन्ध अत्यन्त मधुर रहेंगे और आपको उनसे बहुत सुख प्राप्त होगा। वे अपनी शिक्षा में अच्छा करेंगे और आप उनसे गौरवान्वित होंगे। आपके जीवनसाथी को अप्रत्याशित लाभ मिल सकता है। सद्भावपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखने के लिए कटु भाषा का प्रयोग न करें। आपकी माता को इस अवधि में लाभ प्राप्त होगा और उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति होगी। आपके पिता को उनके शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी और उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके छोटे भाई-बहनों का शुभ उद्देश्यों के लिए व्यय होगा और उनकी यात्रा होगी तथा आपके बड़े भाई-बहनों को यश, ख्याति, आय, शक्ति तथा अधिकार की प्राप्ति होगी। आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी जिनसे आपको लाभ मिलेगा।

अन्तर्दशा :

मंगल की मुख्य दशा में उसकी अन्तर्दशा के कारण आपको पिता से लाभ तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और आपकी यात्रा होगी। इसके पश्चात् आरम्भ होनेवाली राहु की अन्तर्दशा के कारण समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के कारण आपकी शिक्षा, स्वास्थ्य तथा सुख में वृद्धि होगी जबकि शनि की अन्तर्दशा के कारण आय-व्यय समान होंगे और आपकी यात्रा होगी। बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका विवाह हो सकता है और साझेदारों से लाभ और सुख की प्राप्ति हो सकती है जबकि केतु के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप परिवर्तन और छोटी यात्राओं की प्राप्ति हो सकती है जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के कारण शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप सन्तान से सुख और निवेश तथा सट्टे में लाभ होगा।

Priti

महादशा :- गुरु

(24/04/2005 - 24/04/2021)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 24/04/2005 को आरम्भ और 24/04/2021 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु दशम भाव में स्थित है तथा दशम भाव सम्मान, नाम और यश आचरण पद और प्रतिष्ठा, लक्ष्य और अधिकार, कर्तव्य, उन्नति, धार्मिक उत्सव, उच्च पद, धर्म स्थलों की यात्रा, राज सम्मान, और वस्तुओं का द्योतक है।

गुरु स्वभावतः

एक शुभ ग्रह है तथा द्वितीय, चतुर्थ तथा दशम भावों को देख रहा है और इन भावों पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह साल की यह अवधि आपके लिए आनन्द और समृद्धि की होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु दशम भाव में स्थित है तथा द्वितीय भाव और चतुर्थ भाव के अतिरिक्त षष्ठ भाव (शत्रु तथा रोग भाव) को देख रहा है जिसके फलस्वरूप आपके साथ तो कोई रोग या दुर्घटना नहीं होगी।

अर्थ-संपत्ति :

गुरु दशम भाव में स्थित है और प्रतिष्ठा और सम्मान के भाव को बली कर रहा है। दशम भाव से, जो एक केंद्र है, इसकी दृष्टि द्वितीय अर्थात् धनभाव पर (चतुर्थ तथा षष्ठ भाव के अतिरिक्त) है जिसके फलस्वरूप आपको चल तथा अचल संपत्ति अर्जित करने का पूर्ण अवसर इस दशा काल में मिलेगा। आप भोग-विलास की वस्तुएं खरीदेंगे।

व्यवसाय :

गुरु दशम भाव में स्थित है और उसको बली कर रहा है। आप, जो कुछ शुरू करेंगे, उसमें सफल होंगे।

आपको नाम और यश की प्राप्ति होगी। नौकरी में पदोन्नति होगी और आपको आदर और सम्मान मिलेगा।

पारिवारिक जीवन :

एक केन्द्र दशम भाव से गुरु की दृष्टि दूसरे केन्द्र चतुर्थ भाव अर्थात् सुख-स्थान पर है जिसके फलस्वरूप आपका पारिवारिक जीवन सुखी तथा उत्साहपूर्ण होगा। आपके जीवन साथी भी आपका पूर्ण सहयोग करेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप ज्ञान की खोज को जारी रखेंगे और आपकी रुचि साहित्य और पुराणों के अध्ययन की ओर होगी।

दशा विश्लेषण

Pradeep

महादशा :- राहु

(18/07/2015 - 17/07/2033)

राहु की महादशा 18/07/2015 को आरम्भ और 17/07/2033 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु प्रथम भाव में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि सातवें भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको सफलता, ख्याति, सम्पत्ति तथा उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति हुई होगी। राहु की वर्तमान दशा में आपको धन की प्राप्ति और शत्रुओं पर विजय मिलेगी तथा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके शरीर के ऊपरी भाग तथा सिर में कष्ट हो सकता है। आप सरदर्द तथा पित्तदोष से ग्रसित हो सकते हैं और मौसम में परिवर्तन के कारण संक्रामक बीमारी, चर्मरोग, चेहरे पर तथा माथे में फोड़ा आदि हो सकते हैं। इन मामूली शिकायतों को छोड़ आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त अच्छी रहेगी। आपको लाभ और समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपकी धार्मिक, शैक्षिक और वैज्ञानिक उपलब्धियों के कारण आपको सम्पत्ति और प्रतिष्ठा मिलेगी। आपको सट्टे में अच्छा लाभ मिलेगा। राहु की दशा में आपको धन का अचानक लाभ होगा। आपको मित्रों से लाभ हो सकता है। जीविका या व्यवसाय के लिए वायुयान चालन, दवा, कम्प्यूटर, मशीनरी, समुद्री सेवा, वायु-सेना आदि के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। दवा, रसायन, औजार, ड्रग, मशीनरी आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों का स्थानान्तरण हो सकता है जो अन्त में लाभदायक होगा और अचानक लाभ तथा कार्य स्थान में अप्रत्याशित पदोन्नति होगी। व्यापार व्यवसाय से जुड़े लोगों को उच्चाधिकारियों से अच्छा लाभ, कार्य में सफलता तथा आय में वृद्धि होगी। व्यवसाय में उन्नति तथा आर्थिक खुशहाली के लिए यह दशा अत्यन्त उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको वाहन का सुख मिलेगा। आपको जीवन का हर सुख मिलेगा। आप अचल तथा भूसम्पत्ति के स्वामी होंगे। इस दशा के दौरान आपकी अनेक यात्राएं होंगी। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी जबकि गुरु की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी। विदेश यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। इन्जीनियरिंग, गणित, विज्ञान, अन्तरिक्ष अनुसन्धान तथा कम्प्यूटर विज्ञान में आपकी रुचि होगी। आपको आपके प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय मिलेगी और परीक्षा तथा प्रतियोगिता में अच्छा करेंगे। आप में नेतृत्व-गुण और साहस है और आप स्वभाव से स्वतन्त्र हैं। आप चतुर और कूटनीतिज्ञ हैं।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चे भाग्यवान और खुशहाल होंगे। आपका उनके साथ सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपके जीवनसाथी की यात्रा, विदेशियों से सम्पर्क और भौतिक लाभ होगा। आपके जीवन साथी के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपकी माता यात्रा और तीर्थाटन पर जाएंगी और दान-पुण्य का कार्य करेंगी और आपके पिता को सट्टे में लाभ तथा धन में अचानक वृद्धि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को हर प्रकार का लाभ तथा सम्पत्ति मिलेगी। बड़े भाई-बहन साहसी और कठिन परिश्रमी होंगे, उनकी छोटी यात्रा होगी और वे संचार-व्यवस्था के क्षेत्र में सफल होंगे। आपका उनके साथ सम्बन्ध मधुर रहेगा। इस दशा के दौरान आपको अच्छा सम्मान, भौतिक समृद्धि और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के दौरान आपको सम्पत्ति और लाभ, कार्य में सफलता और खुशहाली मिलेगी। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी यात्रा होगी और समृद्धि तथा उच्च शिक्षा की प्राप्ति होगी जबकि शनि की अन्तर्दशा में व्यवसाय में प्रगति और उपार्जन अच्छा होगा। बुध की अन्तर्दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य कुछ खराब होगा, किन्तु ननिहाल से लाभ और छोटी यात्रा होगी। केतु कुछ समस्या दे सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में साझेदारों से लाभ मिलेगा और विवाह होगा जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान बच्चों से सुख और सट्टे में सफलता मिलेगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको माता से लाभ और जीवन का सुख मिलेगा जबकि लग्न स्वामी मंगल की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, उत्तम स्वास्थ्य तथा सफलता मिलेगी।

Priti

महादशा :- शनि

(24/04/2021 - 24/04/2040)

शनि की महादशा की अवधि 19 वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 24/04/2021 को आरम्भ और 24/04/2040 को समाप्त होगी।

शनि आपकी कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है। यह स्वभाव से एक अशुभ ग्रह है और फल की प्राप्ति में विलम्ब और बाधा करता है। फल प्राप्ति की दिशा में यह जातक को कठिन परिश्रम के लिए प्रेरित कर उसके धैर्य की परीक्षा लेता है, किन्तु जातक को अन्ततः लक्ष्य की प्राप्ति होती है। अतः यह एक 'कार्मिक' ग्रह है। तृतीय भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि आपकी जन्मकुण्डली के पांचवें, नवें और बारहवें भाव पर है और इन भावों पर इसका प्रभाव है। तृतीय भाव, जिसमें यह स्थित है, मानसिक अमिरुचि, बुद्धि, साहस, पराक्रम, छोटी यात्रा, संप्रेषण, हाथ, गले, बाँह तथा स्नायु-तंत्र का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

साहस तथा पराक्रम के तृतीय भाव में स्थित महादशा स्वामी शनि अपने भाव को शक्ति प्रदान

करता है। इसलिए इस दशा के दौरान आप स्वयं को साहसी और बहादुर अनुभव करेंगे और आपको कोई गम्भीर बीमारी अथवा स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी।

धन-सम्पत्ति :

शनि तृतीय अर्थात् साहस, बुद्धि और अभिरुचि के भाव में स्थित है। फलतः आपको चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि करने के अनेक अवसर मिलेंगे। आपके ऋणों का भुगतान होगा और आप आराम व विलास की वस्तुओं पर व्यय करेंगे।

व्यवसाय :

बहादुर तथा साहसी होने के कारण आप तरंगी तथा निर्मम होंगे। आप स्थानीय बोर्ड, नगर निगम आदि के प्रधान या अध्यक्ष हो सकते हैं। आपको सफलता मिलने में कठिनाई होगी और लक्ष्य प्राप्ति में बाधाएं आएंगी।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन उत्तम और सद्भाव पूर्ण होगा। आपके जीवनसाथी आपका सहयोग करेंगे। किन्तु, आपके भाई-बहन समस्याएं और कठिनाइयाँ खड़ी करेंगे जिनका सामना आप साहसपूर्वक करेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

उच्च शिक्षा तथा साहित्यिक वृत्ति के विकास के लिए दशा अनुकूल है।

दशा विश्लेषण

Pradeep

महादशा :- गुरु

(17/07/2033 - 17/07/2049)

गुरु की महादशा की अवधि सोलह वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 17/07/2033 को आरम्भ और 17/07/2049 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में गुरु लग्न में स्थित है। यह शरीर रचना, रूपकार, स्वास्थ्य, स्वभाव, प्रवृत्ति, प्रतिष्ठा, सामान्य रहन-सहन, चेहरे के ऊपरी भाग, दीर्घ आयु और सामान्य जीवन की संरचना के प्रति विचार का द्योतक है। गुरु स्वभाव से एक शुभ ग्रह है जो आपकी जन्मकुण्डली में प्रथम भाव में स्थित होकर पंचम, सप्तम तथा नवम भावों को देखता हुआ उनपर अपना शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह वर्ष की यह दशा शान्ति, समृद्धि और उत्तम स्वास्थ्य की दशा होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा का स्वामी अपने ही भाव में स्थित होकर भाव को शक्ति दे रहा है। फलतः इस दशा के दौरान आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी और आप अपने सामान्य कार्यों का सम्पादन करने की स्थिति में होंगे।

अर्थ-सम्पत्ति :

गुरु की प्रथम भाव में स्थिति और पंचम तथा नवम (सप्तम के अतिरिक्त) भाव अर्थात् दो त्रिकोणों पर उसकी दृष्टि के कारण इस दशा के दौरान आप भाग्यशाली होंगे। आप अपनी आय के स्रोतों और चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि करेंगे। आप भोग-विलास की वस्तुओं पर व्यय भी करेंगे।

व्यवसाय :

प्रथम भाव में स्थित गुरु के कारण आप अपने ही प्रयास से अपना जीविकोपार्जन करेंगे। आप जिस किसी भी व्यवसाय में हों, उन्नति करेंगे। आप नौकरीपेशा हों अथवा व्यवसायी, जीवन में उन्नति करेंगे और मकान, वाहन आदि सम्पत्ति में वृद्धि करेंगे। आपकी शिक्षा तथा ज्ञान में भी वृद्धि होगी।

पारिवारिक जीवन :

गुरु की प्रथम भाव में स्थिति तथा पंचम, सप्तम तथा नवम भावों अर्थात् भूत-कर्म भाव, जीवन संगी भाव और सुख कर्म पर उसकी दृष्टि के कारण आपका पारिवारिक जीवन अत्यन्त सुव्यवस्थित तथा सौहार्दपूर्ण होगा। आपके जीवनसाथी आपके सहयोगी और आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे और आपके माता-पिता आपके जीवन को सुखमय बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

गुरु की प्रथम भाव में स्थिति के कारण इस दशा के दौरान आपको शिक्षा के उत्तम अवसर मिलेंगे और आपकी प्रशिक्षण-वृत्ति सफल होगी। ज्ञान के प्रति आपकी खोज के कारण आप अपनी इच्छा के अनुरूप साहित्य और धर्म की पुस्तकों का अध्ययन करेंगे।

Priti

महादशा :- बुध

(24/04/2040 - 24/04/2057)

बुध की महादशा 24/04/2040 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 24/04/2057 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध बारहवें भाव में स्थित है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा थी। शनि के कारण आपका कुछ अप्रत्यक्षित परिवर्तन, साझेदारी में नुकसान तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी मामूली समस्या हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा में आपका व्यय होगा, शत्रुओं पर विजय तथा विदेशी स्रोतों से लाभ मिलेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। बुध की अपनी ही राशि में स्थिति के कारण आपको कोई गंभीर या बड़ी बीमारी नहीं होगी। किन्तु, विषाणुजन्य बुखार, संक्रामक बीमारी, आँखों तथा पैरों में पीड़ा, चर्मरोग तथा स्नायविक दुर्बलता आदि मौसमी बीमारियाँ हो सकती हैं। इन मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको दूर स्थानों से लाभ होगा, किन्तु व्यय भी होगा। इसलिए अर्थ की उचित व्यवस्था आवश्यक है। आपको अपनी माता से कुछ लाभ हो सकता है। जीविका तथा व्यवसाय के लिए लेखा, पत्रकारिता, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, अस्पताल का कार्य या अन्य दातव्य संस्थाओं, विमान-विज्ञान तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर, हाथ के बने सामान यादि का व्यवसाय लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों की यात्रा, व्यवसाय-व्यापार में सफलता तथा सहयोगियों से सहयोग मिलेगा। आपके सम्मान में उन्नति होगी और आपको उच्च पद की प्राप्ति होगी। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों की यात्रा, धन तथा कठिन श्रम से लक्ष्य की प्राप्ति होगी। विदेश से कारोबार, विरोधियों पर विजय तथा व्यापार की उन्नति होगी।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आपको सुख तथा वाहन की प्राप्ति होगी। सम्पत्ति का लेन-देन भी हो सकता है। आप जमीन-जायदाद खरीद या बेच सकते हैं। किन्तु बुध की अन्तर्दशा में सावधानी बरतें, अन्यथा नुकसान हो सकता है। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी और दूर की यात्राएं हो सकती हैं।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। शिक्षा के क्षेत्र में कुछ शुभ परिवर्तन हो सकता है। इस दशा के दौरान आप कुछ शोध-परियोजनाएं आरम्भ कर सकते हैं। विज्ञान, लेखा, वाणिज्य, साहित्य, व्यवसाय और अन्तरराष्ट्रीय व्यापार से संबंधित विषयों में आपकी रुचि हो सकती है। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि है।

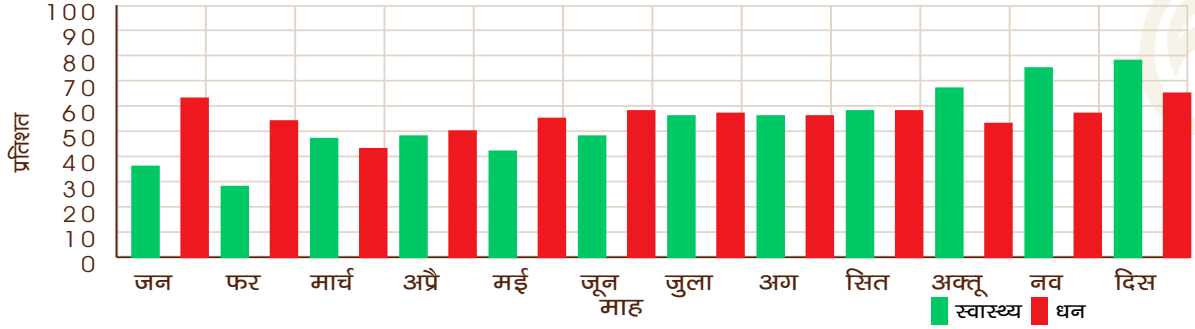
परिवार :

आपका परिवार के साथ संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चों के कार्य-क्षेत्र में परिवर्तन होगा और उन्हें आपकी सहायता की आवश्यकता होगी। आपके जीवन साथी को स्वास्थ्य संबंधी कुछ मामूली समस्याएं, शत्रुओं पर विजय तथा कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल हो सकती है। जीवन साथी के साथ संबंध उत्तम रहेगा। आपकी माता को समृद्धि तथा पिजा को अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों की जीवन वृत्ति सफल होगी जबकि बड़े भाई-बहनों को हर प्रकार का लाभ मिलेगा। आपकी अध्यात्म में रुचि होगी और दान-पुण्य तथा शुभ कार्यों पर व्यय करेंगे।

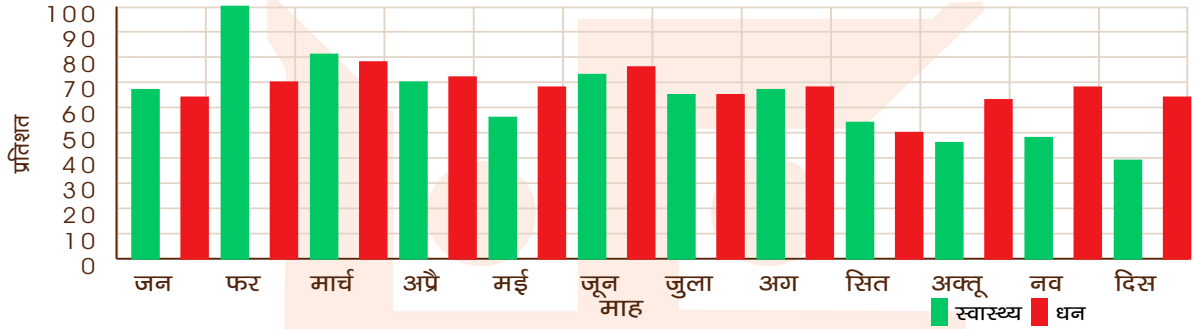
अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप व्यय और यात्रा होगी और रोजगार के अवसर मिलेंगे। केतु कुछ समस्या उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में सुख तथा हर प्रकार का लाभ मिलेगा। सूर्य के कारण सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, उत्तम स्वास्थ्य तथा आनन्द की प्राप्ति होगी जबकि योगकारक मंगल की अन्तर्दशा में शक्ति और अधिकार, जीविकापार्जन में सफलता तथा बच्चों से सुख मिलेगा। राहु की अन्तर्दशा में कुछ समस्या उत्पन्न हो सकती है। गुरु की अन्तर्दशा में समृद्धि तथा सम्पत्ति की प्राप्ति और यात्रा होगी जबकि शनि की अन्तर्दशा में कुछ नुकसान तथा मामूली स्वास्थ्य समस्याएं होंगी।

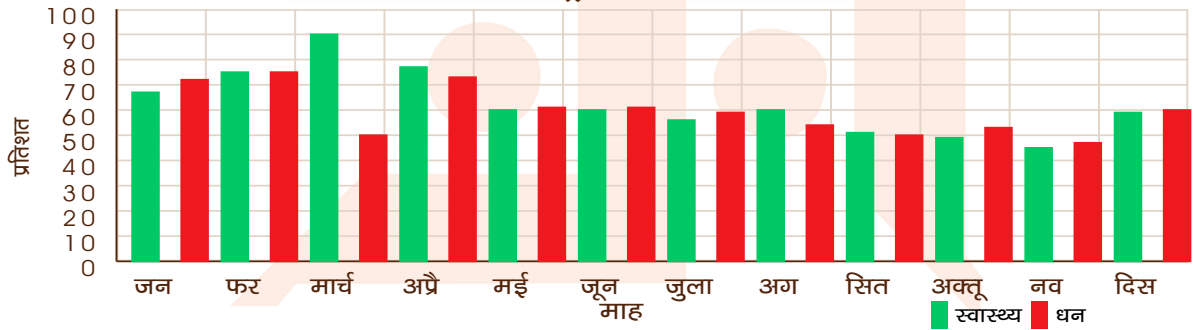
Pradeep
एस्ट्रोग्राफ .. 2014



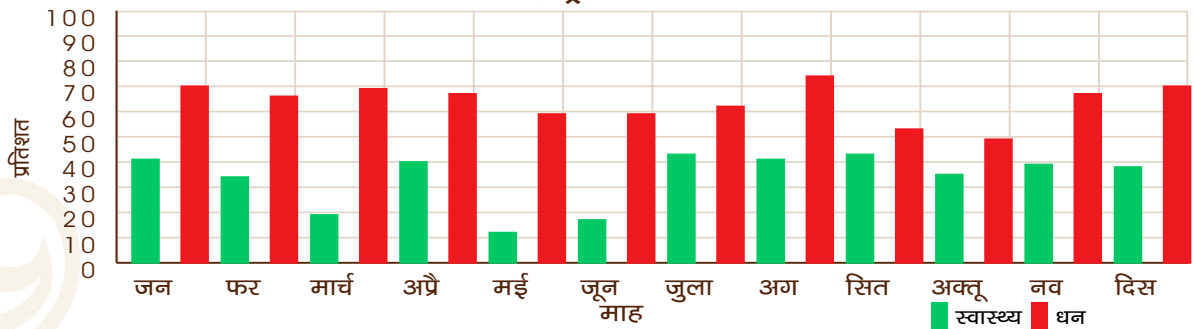
Priti
एस्ट्रोग्राफ .. 2014



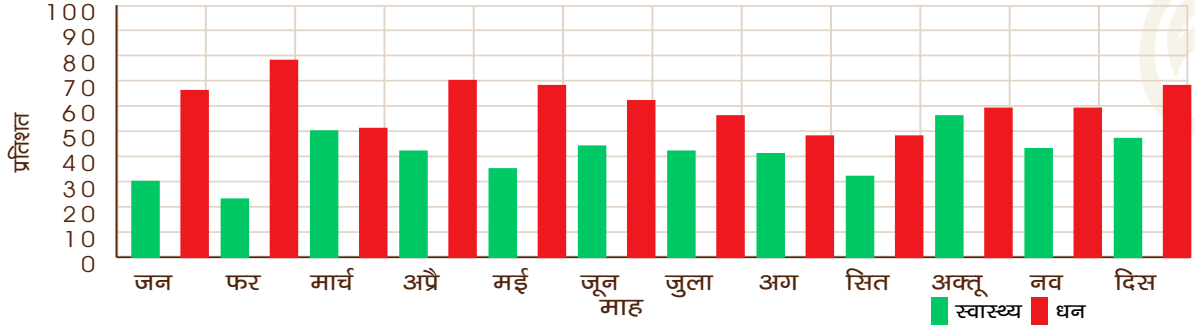
Pradeep
एस्ट्रोग्राफ .. 2015



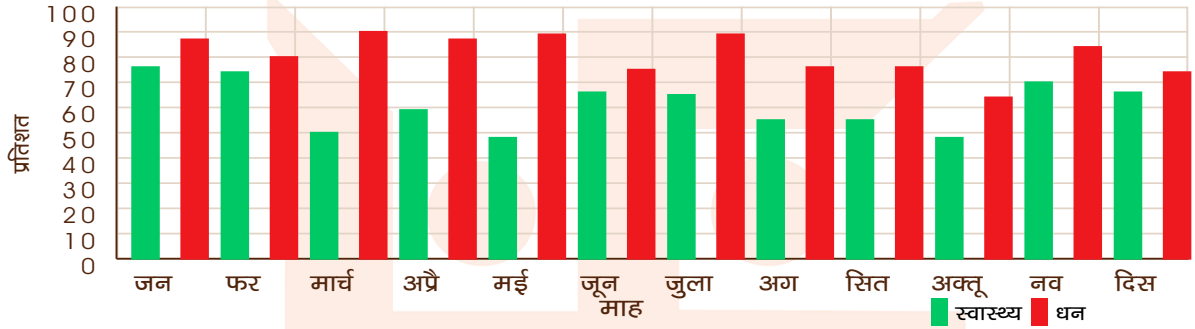
Priti
एस्ट्रोग्राफ .. 2015



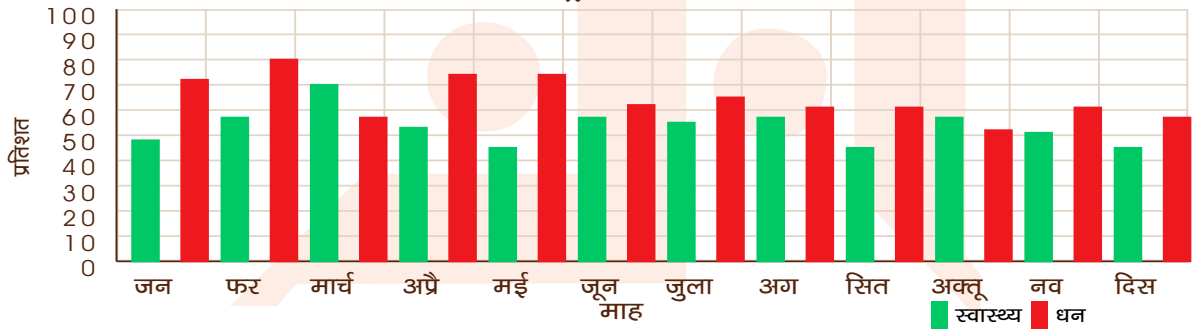
Pradeep
एस्ट्रोग्राफ .. 2016



Priti
एस्ट्रोग्राफ .. 2016



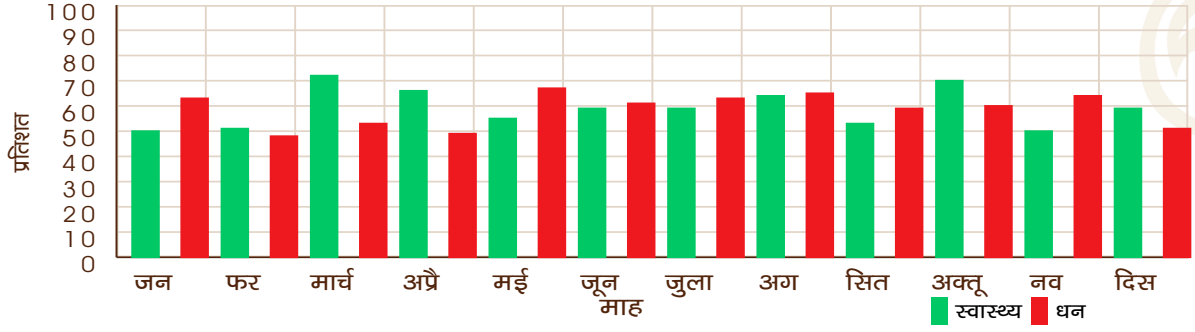
Pradeep
एस्ट्रोग्राफ .. 2017



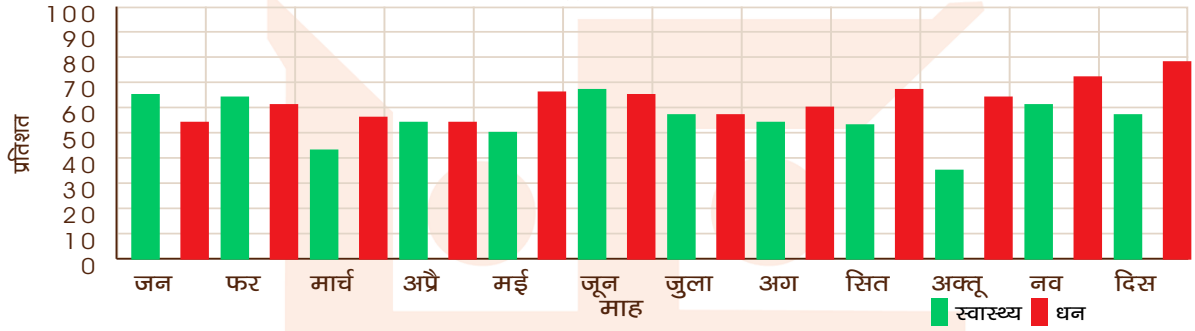
Priti
एस्ट्रोग्राफ .. 2017



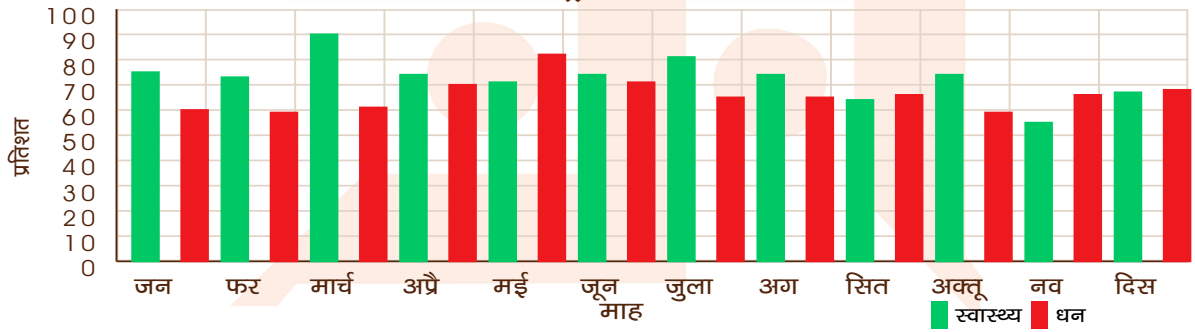
Pradeep
एस्ट्रोग्राफ .. 2018



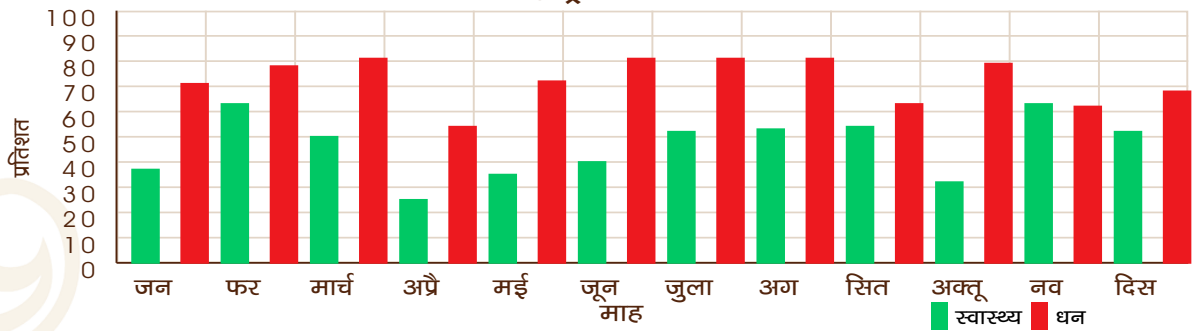
Priti
एस्ट्रोग्राफ .. 2018



Pradeep
एस्ट्रोग्राफ .. 2019

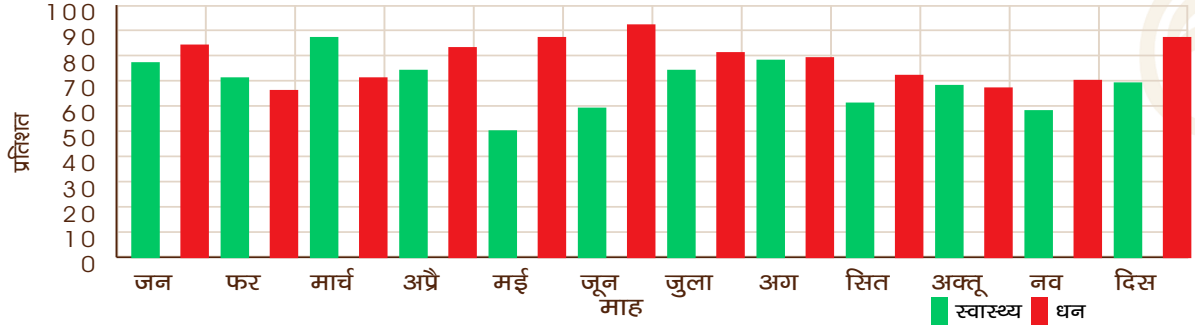


Priti
एस्ट्रोग्राफ .. 2019



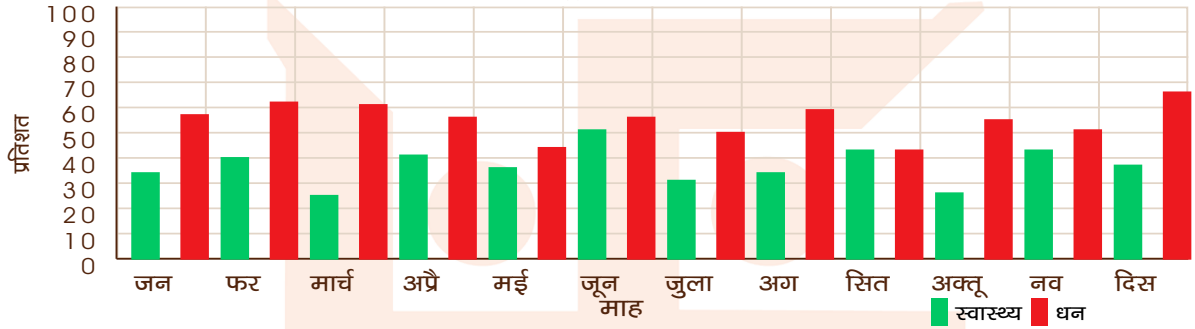
Pradeep

एस्ट्रोग्राफ .. 2020



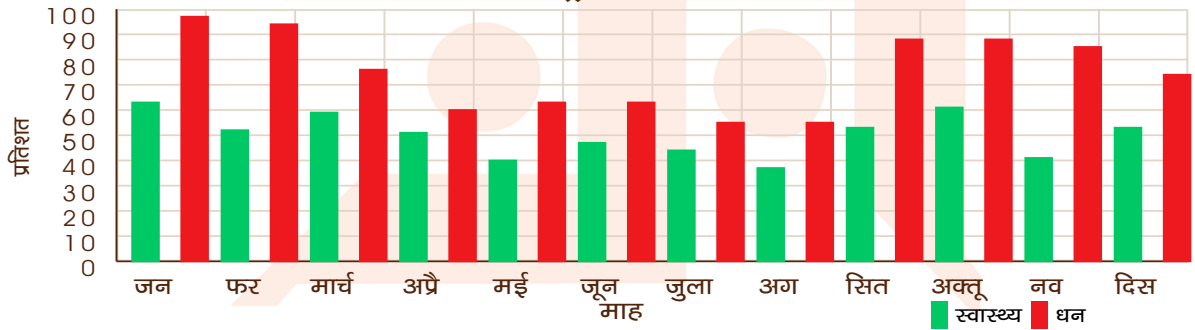
Priti

एस्ट्रोग्राफ .. 2020



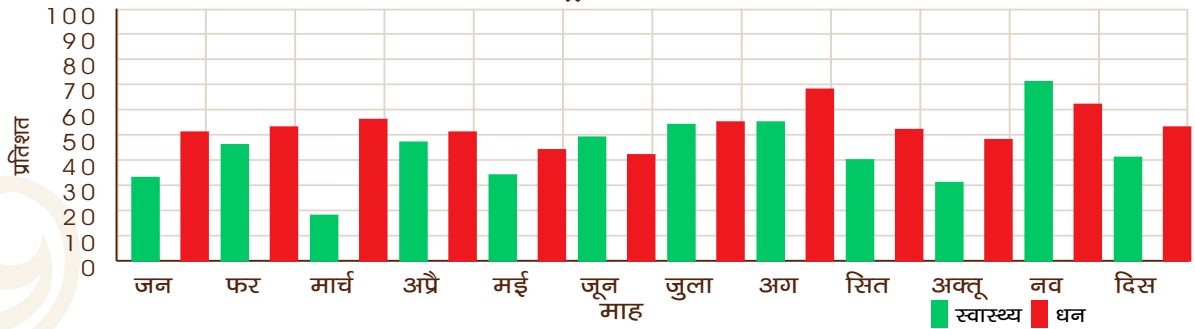
Pradeep

एस्ट्रोग्राफ .. 2021

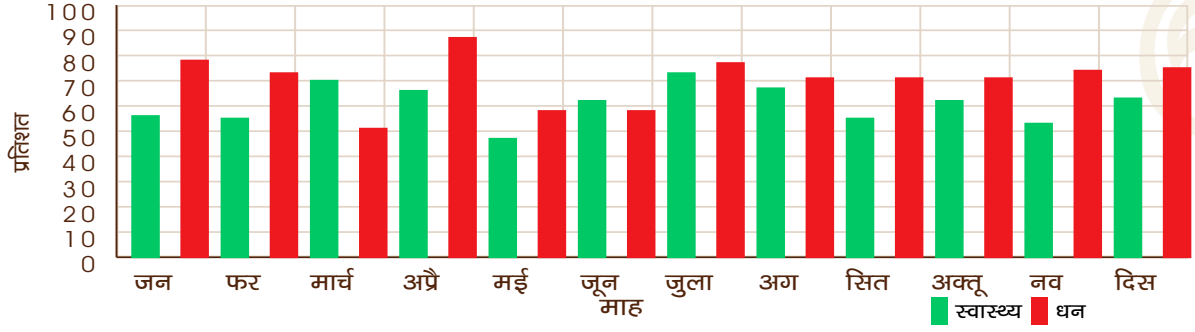


Priti

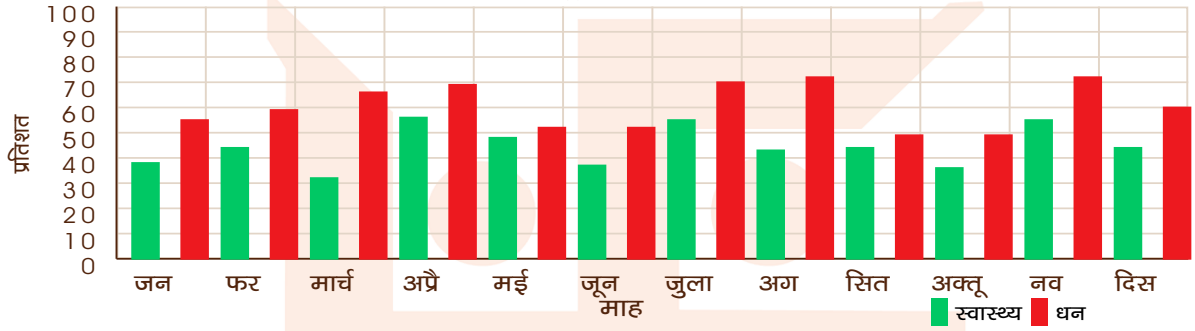
एस्ट्रोग्राफ .. 2021



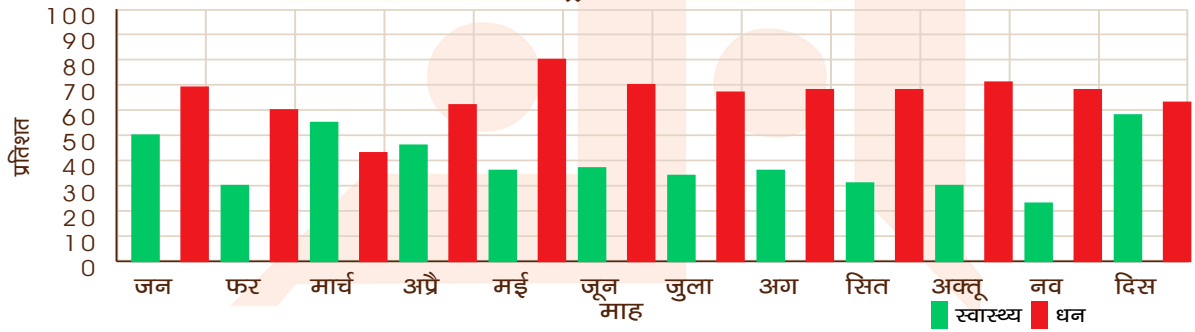
Pradeep
एस्ट्रोग्राफ .. 2022



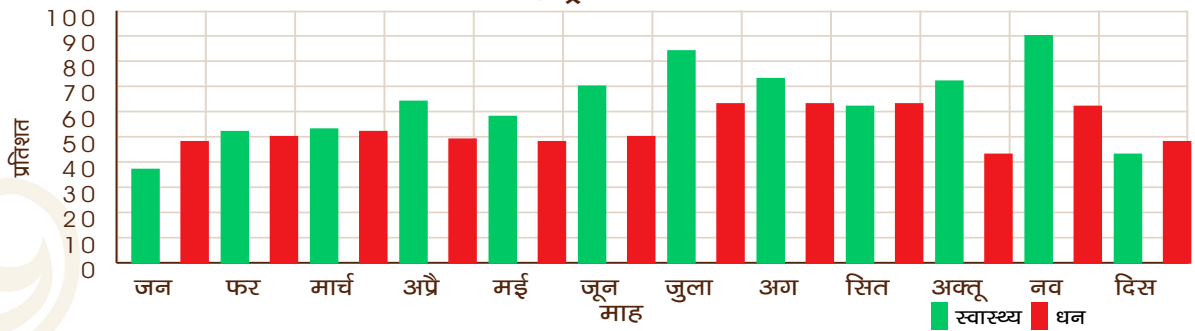
Priti
एस्ट्रोग्राफ .. 2022



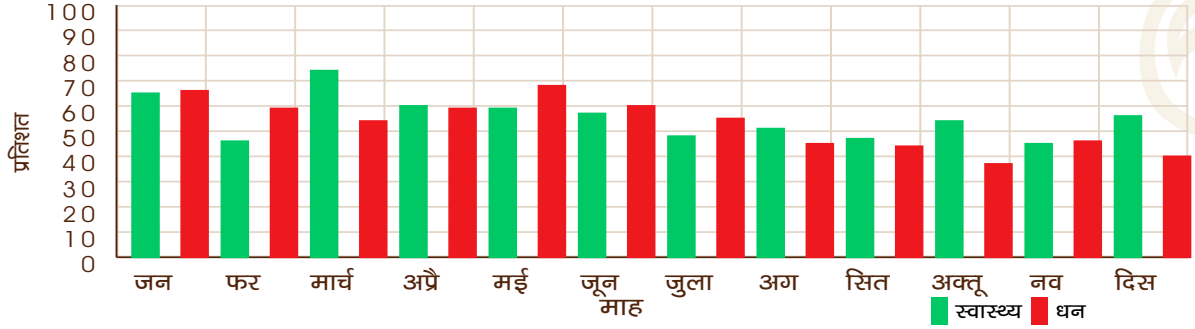
Pradeep
एस्ट्रोग्राफ .. 2023



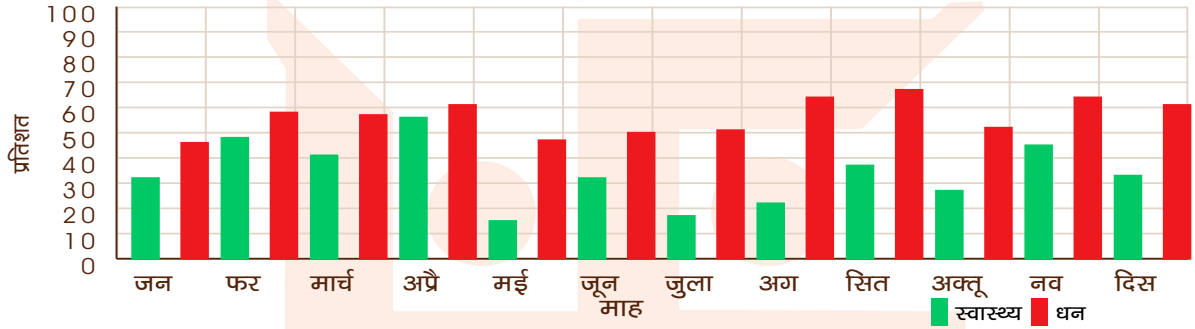
Priti
एस्ट्रोग्राफ .. 2023



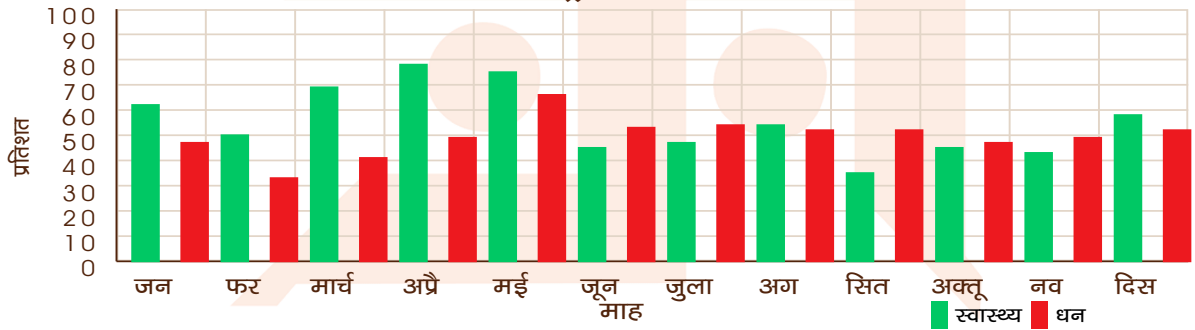
Pradeep
एस्ट्रोग्राफ .. 2024



Priti
एस्ट्रोग्राफ .. 2024



Pradeep
एस्ट्रोग्राफ .. 2025



Priti
एस्ट्रोग्राफ .. 2025

